पत्नी प्रताप

नाटक

लेखक— नारायणप्रसाद 'बेताब'

ॐ

पत्नी-प्रताप

नाटक

सूत्रधार का मकान

गाना नं० १

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सब के आराध्य अग्ने प्रभो
सावित्री गिरिजा समुद्र-तनया सर्वत्र व्यापी विभो
जानूं ना कुछ हाल ताल स्वरका संगीत विद्या ज़रा
जानूं नाट्यकला न छन्द रचना तेरा हि है आसरा
हे दीन बन्धो ! उपकार सिन्धो ! तू है सहारा नट का नटो का ।
जो खेल देखे इस मण्डलीका व्याख्या न चाहें इसकी न टीका ॥
ब्रह्मा विष्णु०

सूत्रधार—ईश्वर स्तुतिमे मग्न रहने वाली वाले ! बस इतने ही में सन्तोष पाले, जी नही भरा हो तो एक अन्तरा और गाले

नटी— स्वामि ! स्तुति, प्रार्थना, उपासना के लिये तो एक अन्तरा बहुत थोड़ा है।

सूत्रधार— आर्ये ! थोड़े का मूल्य बहुत और बहुत का मूल्य थोड़ा होता है। बहुत होना वस्तु का आदर खोता है।

बहुत का कुछ नहीं आदर कि आदर पायगा थोड़ा।
बहुत हो जायगा थोड़ा, बहुत हो जायगा थोड़ा॥

जिस भागीरथी गङ्गा के जल को दूर देश मे थोड़ा मिलने के कारण आचमन करते और सर आँखो से लगाते हैं, उसी गङ्गा जल को गङ्गा-तट वासी बहुत प्राप्त होने से शौच के लिये लोटे भर भर कर ले जाते है और धोतियां धोने के काम मे लाते है।

चन्दन के इक टूक को हम देते है मान।
मलयागिरि को भीलनी बारत ईधन जान॥

(फिर अन्तरा हे दीन वन्धो०)

नटी— आर्य पुत्र ! आप श्रोता मण्डल की तरफ़ क्या देखते हैं ?

सूत्र०— आये है गुन के ग्राहक और गुन को देखते है।
जो हम को देखते है हम उनको देखते है॥

नटी— तो आप ने क्या देखा ?

सूत्र०— हम अपनी भाषा मे जिसे दृश्य काव्य या नाटक कहते हैं, ऋषियो की भाषा मे चाक्षुष यज्ञ इसका नाम है और यज्ञ करना स्त्री और पुरुष दोनों का काम है। परन्तु शोक है कि इस यज्ञशाला या उपदेश भवन में हमारी माताएं और बहिने बहुत कम नज़र आती है।

नटी— इसका कारण यह है कि स्त्रियाँ पुरुषो की अपेक्षा पढ़ी

लिखी कम होती हैं इसलिये उनको नाटक समझना दुश्वार होता है।

सूत्र०— पुरुष भी तो सब लिखे पढ़े नहीं होते और नाटक के भाव समझ लेते हैं क्योंकि इस चाक्षुष-यज्ञ में तो विशेष कर मन के साथ आँखों का व्यवहार होता है।

नटी— तो यह पुरुषों का अत्याचार है कि आप तो नाटक देखते हैं और उनसे कह देते हैं कि नाटक शाला बहुत दूर है।

सूत्र०— नहीं इस में श्री मान् गृहस्थों का कुसूर नहीं हमारा ही कुसूर है।

नटी—हमारा ही कुसूर है? यह क्यो?

सूत्र०— यों कि हमारे नाटककी कथा प्राय: अश्लील और रचना वीभत्स रस से भरपूर है।

जब चला श्रृङ्गार रस मर्याद-सीमा तोड़ कर।
आगया वीभत्स में लज्जाकी आँखें फोड़ कर॥
पूंछ बैठी भाई से भगनी तो कन्या बाप से।
शर्म से दोनों के दोनों रह गये मुंह मोड़कर॥

नटी— परमात्मा का धन्यवाद है कि हमारा आज का प्रयोग अक्सीर है या ख़ाक है परन्तु ऐसे कलंकों से पाक है।

सूत्र०— इसी लिये हमारी आंखें माताओं और बहिनों की उपस्थिति अधिकांश में चाहती है ताकि उनके निर्दोष और निर्मल हृदयों पर पातिव्रत धर्म की महिमा अंकित

हो जाय और हमारे परम पावन उद्योग पर लगी हुई कलंक की 'वार्ता' कलंकित हो जाय।

नटी— यदि माननीय दर्शक महोदय आज के अभिनय को स्त्रियों को दिखाने योग्य पाएगे तो आशा है कि अगले सम्मेलन मे उनको साथ लेकर आएगे।

सूत्र०— साथ लेकर आना ही चाहिये क्योंकि उन्ही के वास्ते यह सयोग है, उन्ही के वास्ते हमारा उद्योग है।

भक्ति भजन भाजन है श्रद्धा विश्वास स्थान,
माता के समान है जो भारत की बाला है।
दूध भी पिलाया हमे गोद भी खिलाया हमे,
ज्ञान भी दिलाया हमे यत्न कर पाला है।
उनही व्यवहारो के उनही उपकारो के,
अर्पण नारायण यह तेरी शब्द माला है।
सूरत चाहे भद्दी है कीर्ति पहली रद्दी है,
अब तो व्यास गद्दी है नाम रंगशाला है॥

(सब का गाना)

गाना नं० २

बार बार सीस नवाऊं जननि तुम्हरे नित गुन गाऊं
ग्रमगुसारी बड़ीभारी जारी रही ममता अधिक तिहारी
भारत-बाला धर्म-ध्वजा सब मम माता
दीन हीनछीनछन्द माला अरपत ह्व देशवाला
मुख से असीस तुम्हरे पाऊं। बार बार सीस०

अंक १ प्रवेश १

जंगल

(गोपाल गुप्त अपने खेत में हल चला रहा है किनारे पर एक बैल मरा पड़ा है। हल में एक तरफ बैल और दूसरी तरफ गोपाल खुद जुड़ा हुआ है हल चलता है गत पर पर्दा उठता है)

गाना नं० ३

कैसे बिन नीर नाव खेवे खिवइया।
नही चलेगी एक हाथ रेत वीच नइया॥
बरसन की प्यासी है आग भई है जमीन।
दीपक मत गाओ राग मेघ के गवइया॥

कैसे बिन नीर०

गोपाल गुप्त— अगर भाग्य की यह पतीली है खाली,
भरेगी किसी दिन न भोजन से थाली।
जो खेती करे इक करम हीन हाली,
मरे बैल उसका रहे खुश्क साली॥

पशू और वह घास दाने को तरसें,
अगर मेह मांगे तो ओले हि बरसे।

माता वसुन्धरा ! हम मानते है कि तू वसुओ को धारण किये हुए है, तू सोना उगल सकती है, अन्न दान कर सकता है, हीरे और जवाहिरात तेरे अन्दर मौजूद है. और प्राण रक्षा के पदार्थ तेरे गर्भसे उत्पन्न हो सकते है,

तुझ मे है जो कुछ भी सम्पत चाहिये
लेने वाले की भी क़िस्मत चाहिये

लगातार कई वर्ष की सूखा के कारण तू भी सूखा जवाब देने पर उतर रही है, एक दाना लेकर हज़ार दाने देने के बदले बीज का दाना भी हज्म कर रही है।

बिना वारिश के पानी को तरस्ती है सकल सृष्टी
सरोवर बन गये मैदान, जल आता नही दृष्टी
न बादल ही हुये ग़ाफ़िल न सूरज ही हुआ ठण्डा
हमारे ही कुकर्मों का है फल ऐसी अनावृष्टी

[गोपाल की आँखे दुख रही है
उन्हे बार बार कपड़े से पोंछता है],

माता तेरे पुत्र भूखे प्यासे संकट झेलते है और तू देखती है ? देख ! तुझ से दयावान तो मेरी आंखें है

न था अनजल कटोरा खून का भर लाई है आंखे
मेरी यह दुर्दशा ही देखने को आई है आंखे

(फिर हल चलाता है अनसूया आती है

गाना नं० ४

अन०— ढूंढ फिरी जल सकल तड़ागन
सरवर तट और बागन बागन, मैं दुर्भागन
सूख गईं नदियां कमण्डल है अपना ख़ाली
बूंद बूंद को तरस रहे हैं हाली और माली
बादल भी बिन नीर बने हैं रूई के गाले
जीव जन्तु को पड़े हुए हैं जीने के लाले

—:○*○:—

कहीं पता नहीं ?
पड़े है कुंड सब सूखे गया इनका किधर पानी
कमण्डल क्या भरूं मिलता नहीं जब बूंद भर पानी
कहां पहुंची मैं मृग-तृष्णा के जल को मानकर पानी
वह निकलीं रेत की लहरें जो आता था नज़र पानी
जिगर जलता है झीलों का लगी है प्यास झरनों को
हुआ क्या आज शिवके शीश को विष्णू के चरनों को
(गोपाल से) सज्जन कृषिकार ! कुछ मेरी भी मदद करोगे ?

गोपाल— माता ! मैं तुम्हारी मदद क्या कर सकता हूं
क्या सहायक हो सके जो आप ही लाचार है
खुश्कसाली मे हमारी ज़िन्दगी दुश्वार है
मर रहे है बैल कांधे पर जुवा है हार है
इस पे आंखें आ गई है मार पर यह मार है

दुखती आंखोमें हवा और धूप सब सहता हूं मैं
पेट रखता है जहां मुझको वही रहता हूं मैं

अनसूया— तुम्हारे पास मौजूद हो तो मुझे थोड़ा पानी चाहिये

गोपाल— (स्वगत) पानी, हाय पानी, पानी पास होता तो मेरा बैल क्यो मरता, बैल का जुवा मै अपने काँधे पर क्यो धरता।

दम दिया कब बैल ने जब एक क्यारी रह गई
बार इसका हो चुका और मेरी बारी रह गई

माता। पानी कहाँ से लाएं, वरुण देवता तो खुद आज कल कंगाल हो रहे है, मेघ महोदय ख़ाली पखाल हो रहे हैं।

पयोधर खुश्क-लब प्यासे खड़े है
घटाओ के घड़े ओंधे पड़े है

अनसूया— नारायण नारायण

जानदारो के लिये कैसी तबाही हो गई
आज तो पानीकी मछली रेगमाही हो गई

गोपाल— क्या किया जाय, मैं तो आंसुओ ही से आप का मनोरथ सिद्ध कर देता, इन छोटी २ छागलो से कमण्डल भर देता परन्तु बे बसी है

सोते भी तो सोते है उबलता नहीं पानी
रोते हैं तो आंखो से निकलता नही पानी

अनसूया— ऐसी दुर्दशा तो कभी नही हुई थी

छ. ऋतू मशहूर है वह रह गई नि.श्क पांच
अब तो कविता मे कवी लेगे ऋतू के अंक पांच
उस कुटी मे कौन रहता है ?

गो० — एक लाचार होकर तपस्विनी बनी हुई कन्या

अनसूया— लाचार होकर ?

गो०— हां जब मुक़द्दर बिगड़ता है तो इसी तरह लाचारी से तप करना पड़ता है

अनसूया— इस के पास पानी हो तो देखती हू (कुटी पर) आश्रम मे कोई है ?

रेवा— (अन्दर से) कौन है (बाहर आकर) नारायणाय नमः

अनसूया— ब्रह्मणे नमः

रेवा— मै किस योग-प्रतिमा के पवित्र चरणो से अपनी कुटी का पवित्र होना देख रही हूं ?

अनसूया— मेरा नाम अनसूया है। पतिदेव आज बहुत दिनों की समाधि से जागे है उनके वास्ते थोडे जल की आवश्यकता है। कही नज़दीक हो तो बताओ ?

रेवा— बाई जी क्या आप को मालूम नही कि अनावृष्टि के कारण इस देश मे दुष्काल का राज्य हो रहा है। आज कल वैशेपिक के नौ द्रव्यो को आठ ही कहा जाय तो कोई हानि नहीं, जल का अर्थ "जल" जलने की आज्ञा है पानी नही। तुम कहां रहनी हो कि इस दुष्काल का हाल मालूम नही ?

अनसूया— आसन तो इसी पहाड़ी पर है परन्तु समाधिस्थ स्वामी की सेवा मे ऐसी तल्लीन थी कि समय तक का भान न हुआ, मुद्दत से वर्षा नही हुई है इसका भी ज्ञान न हुआ —

पती-सेवा के सागर मे मेरा मन इस क़द्र डूबा
न जाना यह कि सूरजभी किधर निकला किधर डूबा

तुम्हारा नाम क्या है ?

रेवा— रेवा

अनसूया— प्रसन्न मूर्ति रेवा ! भला इस निर्जल खंड मे तुम अपना जीवन किस तरह व्यतीत कर रही हो ?

रेवा— योग के आधार से, आप को क्या मालूम नही है, "कंठ कूपे क्षुत्पिपासा निवृत्तिः" धूनी की भस्मी से स्नान कर लेती हूं, प्यास लगती है तो जकार और लकार का ध्यान कर लेती हू

अनसूया— तो हे योग पुष्प की कली ! इस युवावस्था मे सांसारिक सुखो का त्याग, भोगने से पहले ही पदार्थों से बैराग ?

रेवा— इसलिये कि संसार के जितने पदार्थ है सब मे भय भरा हुआ है। भोग में रोग का भय, उच्च कुल मे पतित होने का भय, धन मे चोर का भय, रूप मे बुढ़ापे का भय, गुणों मे दुर्जनो की ईर्षा का भय और काया मे यमदूतो का भय। सारांश संसार की हर एक चीज़ भय

वाली है, परन्तु वैराग ही एक ऐसा है जो भय से खाली है

अनसूया— सत्य है यह सारा सम्वाद, परन्तु कब ? गृहस्थ का सुख भोगने के वाद, गृहस्थाश्रम कैसा है -जहाँ सन्ध्या हवन के समय वेदवाणी का व्यवहार मौजूद है, जहाँ अतिथि का सत्कार मौजूद है । सुन्दर वसन, सुन्दर अलंकार मौजूद है, दम्पति का प्यार मौजूद है और सब से उत्तम यह कि वहाँ शेष तीनो आश्रमों का आधार मौजूद है । ऐसा गृहस्थाश्रम तरुण बालाओ के लिये ग्रहण करने योग्य है

रेवा— सुनती तो मैं भी हूं कि गृहस्थाश्रम मे सब प्रकार का आनन्द है परन्तु क्या करूं उधर जाने के लिए मेरा रास्ता तो बन्द है

अनसूया— उस खुले मार्ग पर चलने से तुझे किसने रोका है और इस तंग गली की तरफ़ झोका है ?

रेवा— उस खुले मार्ग तक पहुचाया मुझको मेरे मां बापो ने
पर क़दम न रखने दिया सडकपर पूर्व जन्मके पापो ने
छः सात बार टक्कर खाई अब कहती भी शरमाती हूं
जब खुला रास्ता खुला नही तब तंग गलीसे जातीहूं

अन०— क्यो राज मार्गसे लौटी तू क्या विघ्न किसीने डाला था
कारण तो मुझे बता इसका वह कौन रोकने वाला था

रेवा— कारण है केवल भाग्य मेरा या कारण एक विधाता है

जिस से होता है वाग्दान वह वर फ़ौरन मर जाता है

अन०— माता मर जाय जो बचपन मे बेटा मर जाय बुढ़ापे में
जोड़ा नहिं मिले जवानीमे फिर आग लगो इस आपे में

रेवा— क़िस्मत मे नही पती सेवा तो जोग मे है सन्तोष मुझे
है स्वर्ग धाम के जाने को दोनो रस्ते निर्दोष मुझे
वह मार्ग जहाँ पहुचा देता यह बाट वही पहुचाती है
इक राह उधर से जाती थी इक राह इधर से जाती है

गाना नं० ५

हमने खूब लिया देख भाल अपनी मंज़िल को
रस्ते नजर पड़े दोनो साफ़ लेकिन कामिल को
चोर चकोर का ना कोई खटका जो अटका सो भटका
कोई डगर पुर ख़ौफ नही जिसने मारलिया अपने दिलको

अन०— इन बातो से प्रतीत होता है कि तुम्हारे हृदय में अविद्यान्धकार नही, प्रकाश ही प्रकाश है। मैं ऐसे वचनों से अधिक लाभ उठाती परन्तु इस समय जो पानी की तलाश है .. ..

रेवा— मुझे शोक है कि कुएं, बावली, झरने, सब सूखे पड़े हैं तो आपको पानी कौन देगा

अन०— मुझे पानी वह देगा जिसने सगर के साठ हज़ार पुत्रों को दिया था, जिसने भागीरथ की तपस्या को सफल

किया था, जिसने शकर की जटाओ को तर किया था जिसने विष्णु के चरणों को कीर्ति भाजन बना दिया था

रेवा— धन्य है आप को और आप के विश्वास को

अन०— हे विष्णु पदी, भागीरथी ! जल के रक्षक सरोवर और कुण्डो से भिक्षा नही पाई, मनुष्यो से उम्मीद न बर आई. अब तेरे सामने दामन फैलाती हू बस देर न कर

दूर क्यो मेरे कमण्डल से है गंगे पास हो
ताकि कुछ विश्वास पर अपने मुझे विश्वास हो
अपनी धारा को बहा दे तो महा उल्लास हो
आज यह पर्वत भी थोडी देर को कैलास हो
जो तेरे जल की तरह मल हो न मेरे ज्ञान में
तो चली आ शीघ्र लहराती हुई मैदान मे

(गङ्गा का प्रकट होना गोपाल का अपनी खेती की तरफ जल काटना अनसूया का झुकना अनेक किसानो का आ आ कर पानी के घड़े भर ले जाना)

गंगा— महा सती अनसूया तेरा कल्याण हो
तक रही है तू खड़ी क्या तुच्छ पानी की तरफ
देवताओ की नज़र है तेरी बानी की तरफ़

रेवा— ऐसी सिद्धियो से सम्पन्न साध्वी के दर्शन होने से तो मुझे भी आशा हो गई कि एक दिन अवश्य स्वर्ग का सुख पाऊगी

अन०— रेवा !

स्वर्ग को चाहता है तेरा मन ?
जा तुझे होगा स्वर्ग का दर्शन

गंगा— तथास्तु

(विमान आता है रेवा उसमे बैठ जाती है)

रेवा— [विमान मे]

था न इस योग यह अपावन अंग
स्वर्ग दाता हुआ मुझे सत्संग

टेबला

अंक १ प्रवेश २

जंगल

[लक्ष्मी और सरस्वती आती हैं]

लक्ष्मी— बड़े आश्चर्य की बात है

सावित्री— लक्ष्मी जी ! तुम तो मुझ से आगे थी फिर भी उस विमान मे जाती हुई बाला को नही पहचाना ?

लक्ष्मी— देवी सावित्री ! क्या कहूं मैं तो उसे मनुष्य देह से स्वर्ग की तरफ जाती हुई देख कर अचम्भे मे रह गई और कुछ न पूछ सकी

सा०— लो पार्वती जी आई इन से मालूम हो जायगा

[पारवती का आना]

ल०— आओ गिरिनन्दिनी आओ, अकेली ही आ रही हो

पा०— और क्या सेना साथ लाती

ल०— सेना काहे को जिनके आधे अंग मे हर दम घुसी रहती हो उनके बगैर कैसे चैन आयगा

पा०— तुम अपनी तो कहो रमारमण की अनुपस्थिति में तुम्हारा जी कौन बहलायगा ?

ल०— अच्छी ! बताओ न वो कहां रहे ?

पा०— वो कौन ?

ल०— वह कौन ? अजी वही भोले भिखारी

पा०— (स्वगत) यह मारी ताने की कटारी (प्रकट) अजी वो तो राजा बलि के यज्ञ मे भीख मांगने गये है

सावित्री— खूब बदला लिया, उस का तमांचा उसी के मुंह पर दिया

ल०— अजी मै तो पशुपति को पूछती हू

पा०— वो तो गो लोक मे गौवे चराते होगे

सा०— शाबाश री बेबाक, जिसको छुरी उसा की नाक

ल०— बहिन पर्वता ! तुम समझी नही

पा०— तो अब समझा दो

ल०— मैं तो उस सांपो के आभूषण वाले को पूंछती हूं

पा०— तो क्या शेषनाग की शय्या पर विराजने वाले की भी तुमको खबर नही

सावित्री— खूब चुभता हुआ दिया उत्तर
जिसकी लाठी पड़ी उसीके सर

ल०— अजी मैं तो यह पूछती हूं कि वह ताण्डवाचार्य कहाँ नाचते रह गये

पा०— मुझे क्या मालूम होगे कही राधा और ब्रजा के साथ रास मण्डल मे

ल०— आय हाय !

जो मेरी आवाज़ थी आई वही प्रतिध्वनी
थी यह गुम्बद्की सदा जैसी कही वैसी सुनी

चलो अब इस विषाद को छोड दो इस में क्या रक्खा है

सा० — हाँ विषाद, अर्थात् विष धारण करने वाले शकर को छोड़ दो

पा० — इसको छोड़ा, उसको पकड़ा, यह तो चंचला लक्ष्मी का काम है, हमे तो एक ही ठिकाने आराम है

ल०— तो कैलास से यहाँ तक क्यों आई हो ?

पा०— एक अचम्भे की बात तुमसे कहने

सा० ल० — वह क्या ?

पा०— क्या बताऊं बीवी, आज तो विमान पर बैठी एक बाला मनुष्य देह से स्वर्ग की तरफ़ जा रही थी

ल०— सच है, सावित्री जी के साथ में भी उमा का गीत गा रही थी, वह कौन थी ?

[नारद जी का आना]

गाना नं० ६

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्दम् जगदाधारम्
परम कृपालु परम दयालु परम पवित्रं परमोदारम् । भज०
बालकपन सब खेल गवाया, तरुण हो तरुणी पर ललचाया
वृद्ध भया कछु बन नहिं आया
अजहु तजत नहिं मनोविकारम् । भज०
बांचत वेद न भगवद्गीता, जीवन जात वृथा सब बीता
एक बूंद भजनामृत पीता जन्म न होता वारम्वारम् । भज०

——:※:——

ल०— सामानुरागी नारदजी महाराज ! प्रणाम

[प्रणाम मे तीनों शरीक हैं]

नारद्— त्रिगुणात्मक शक्तियो । तुम्हारा प्रवाह जारी रहे

पा०— यतीन्द्र ! आप आकाश-मार्ग से आ रहे है कोई अद्भुत दृश्य तो सामने नही आया ?

नारद्— आया आया, परन्तु देवियो ! कुछ तुममे भी उसका मतलब पाया ?

तीनो— नहीं महाराज आप समझाइये

नारद्— मैं क्या समझाऊ, पतिव्रता धर्म की महिमा बखान करने को शेष जी की ज़बान कहाँ से लाऊं ?

बल दे दिया ज़बान मे भगवत की याद ने
बे पर के पर लगा दिये आर्शीवाद ने

सा०— किस के आशार्वाद ने ?

नारद्— महा सती अनसूया के आशीर्वाद ने । मृत्युलोक मे रहने वाली एक वैश्य-कन्या रेवा को उसी शरीर से स्वर्ग भेजा है

ल०— ऐसी वह अनसूया कौन है ?

पा०— पत्थर बने समीर यह शक्ती ज़बां की है
हमसे छुपी हुई है वह ऐसी कहां की है

नारद्— सती अनसूया अत्रि ऋषि की धर्मपत्नी है जो पातिव्रत के प्रतापसे असम्भव को सम्भव करने मे समर्थ हो रही हैं योग की विभूतियां उसे सिद्ध है

गा०— ओहो ऐसी सती शिरोमणि

नारद— नि:सन्देह

ल०— कभी नही, मृत्यु लोक मे असम्भव है। क्या पहाड़ो के टुकड़े बादल बन सकते है? गौवो के बच्चे गरुड़ हो सकते है?

पा०— कभी नही

सा०— या तो त्रिशकु ही नर शरीर से स्वर्ग की तरफ गये थे या ये चली है

ल०— उसे तो इन्द्र ने नीचे धकेल दिया था

पा०— इसका भी यही हाल होगा

नारद— उसे विश्वामित्र ने अन्तरिक्ष मे ही रोक दिया था इसकी रोकने वाली अनसूया मौजूद है

असम्भव है जो बाते उनको कोई किस तरह माने।
कही झड़बेरियो मे आये है अंगूर के दाने?

नारद—प्रत्यक्षे कि प्रमाण :—

देखलो चलके दूर ही क्या है,
हाथ कगन को आरसी क्या है।

पा०— देखने से क्या होगा हम तो परीक्षा करके मानेंगे,

सा०— आज़माकर उसके सतीत्व को सत्य मानेंगे।

नारद— तुम्हारी इच्छा (स्वगत) ईश्वर की लीला विचित्र है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश की स्त्रियाँ होने पर भी आखिर स्त्रियां ही तो हैं— मुद्राराय

(नारद का जाना)

ला०— चलो बहनो मदन महाशय को परीक्षा के लिये उसके पास भेजेंगे ।

सा०— ओहोहोहो ! उसकी शक्ति का क्या ठिकाना है । बड़े २ तपस्वियों को तपसे भ्रष्ट कर देना, देवताओं को बहका देना, कामदेव के लिये यह बात बिलकुल मामूली है ।

पा०— उसके सामने अनसूया किस खेत की मूली है

ल०— निस्सन्देह—

मदन के सामने रहने नहीं योगी भी आपे मे,
जिधर देखा जवानी आ गई फ़ौरन बुढ़ापे मे ।
न हाथों मे रहे दर्शन जहां इस ने नज़र डाली,
किताबें हाथ मे रहने लगी श्रृङ्गार रस वाली ।

ल०— दिखादी ध्यानमे इक मूर्ति ऐसी मानो सचमुचकी.
निगाहें डट गई उसपर न चहरे से नज़र उचकी ।
प्रशंसा मनहि मन मे हो रही है क्या कठिन कुच की,
चली आवाज़ भी आने लगी होठों से पुच पुच की ।
हुआ यह हाल ऋषियोंका, है किस गिनती मे अनसूया.
पिघल जायेगी फ़ौरन काम की विनती मे अनसूया ।

(सबका जाना नारद का आना)

नारद— न सह सकी ये किसी के सुशील होने को,
चली है गर्व से तीनों ज़लील होने को ।
सावित्री की बुद्धि तो बूढ़े ब्रह्मा के परछावे से बुढ़ियागई,

पार्वती भंग धतूरे की गन्ध से चक्कर खा गई। और हे लक्ष्मी! तेरा तो कहना ही क्या है, तू तो सदा की अंधी है, कुपात्रो के घर भी निवास करती है, अपनी कीर्ति का सत्यानास करती है, उदार पुरुषो के पास नही ठहरती क्योकि वो तुझे तुच्छ मानते है, पण्डितो के घर नहीं रहती, कारण कि वो तेरे स्वभाव को पहचानते है।

है वही तो तेरी पूजा जहाँ ज्ञान कुछ नही है।
कि गुणी जनो के दिलमे तेरा मान कुछ नही है॥

(शंख घड़ियाल बजता आता है अत्रिऋषि बद्रिकाश्रम को जा रहे है फूलों की माला गले मे है रुखसत करने के तौर पर अनसूया और दो चार शिष्य भी साथ है शंखध्वनि)

ओ हो हो हो अत्रि मुनि की सवारी कहां सिधारी।
अत्रये मुनये नमः।

अत्रि—नारदाय नमो नमः

नारद—भगवन्! आज कहा को?

अत्रि—बद्रिकाश्रम की पुण्य भूमि मे कुछ समय तप करने का विचार है।

नारद—महोत्तम महोत्तम, क्या देवी अनसूया भी साथ जायेंगी?

अत्रि—नहीं इन्हो ने तो साथ चलने के लिये उत्कट इच्छा प्रकट की परन्तु मैने इनका यही रहना उचित समझा है।

नारद—इसी वास्ते देवी जी की आंखे पसीज रही है।

अन०— आंखे पसीजने मे मेरी कुछ ख़ता नहीं,
स्वामी अकेली छोड़के दासी को चल पड़े।
अन्दर विरह की आग जो सुलगी धुआँ उठा,
इनमे धुआँ लगा मेरे आंसू निकल पड़े।

अत्रि— यह भी मुझपर ही उपकार हुआ।

नारद— किस तरह?

अत्रि— जहां लगी है आग यह वहां बसत भरतार,
उसकी रक्षा के लिये सीचत असुअन धार।

अन०— जी यह बात नही है।

नारद— तो क्या बात है?

अन०— आग लगी चित के भवन जरो जात हिय देस,
सरन लेत चित चरन की धर असुवन को भेस।

अत्रि— यहां इसकी रक्षा वही करेगा जो वद्रिकाश्रम मे हमारी करेगा और कुछ कहना है?

अनु०— पिया के पयान वेल तिया जिया है झमेल,
होत है अमंगल जो तुम्हे रोकना चहूं।
"जाओ" जो कहूं तो यामें प्रेम का प्रकाश नहीं,
"नही जाओ" हुकम है कैसे पद यहगहूं।
"निज मन मानी करो" यह है महा रूखी बात,
मानिनी कहै न कौन मौन ठान जो रहूं।
कहे भी बने ना चुप रहे भी बने ना अब,
तुम ही बताओ नाथ! कहूं तो कहा कहूं?

अत्रि— "अत्रि आश्रम" "अत्रि आश्रम" पूछते हुए जो साधु महात्मा आते रहते हैं, इनके यहाँ रहने से उनका सत्कार होता रहेगा।

अन०— यह नही मै देखती, है क्या वचन कैसा वचन,
देखती हूं मैं तो इतना ही, है किस मुं का वचन।

नारद— धन्य हो धन्य हो—
यह है इक कर्तव्य साधारण सुशीला नार का,
सर चढ़ाले मान आदर से वचन भरतार का।
जो पती की आज्ञा, इसमे नहीं खण्डन का काम,
घर घर ऐसी हो तो बस उद्धार हो संसार का।

गाना ०नं ७

सन्मुख साजन के एक बोल नहिं बोले
पूजनीय है नारि जगत वह जो सत से नहि डोले रे एक बोल०
अन्त जायगी सती नारि बे रोक टोक सुरलोक
वा का वास नरक मे जानो जो पर-पुरुष टटोले रे,
मनका भेद नहि खोले। सन्मुख०

(शख घड़ियाल बजाते चलदेते है)

अंक १ प्रवेश ३

विद्याधर वैद्य का मकान

(विद्याधर वैद्य के कमरे में चौकियों पर फर्श, सफेद गद्दी, तकिया, कालीन, कड़वे तेल का फतील सूज जो जलता न हो, छोटी सी अलमारी कुछ दवाओं की शीशियाँ, सिल बाट, खरल, हावनदस्ता, एक बेच मरीजों के लिये)

(मृदगनाथ तीन तोड़ों पर बाहर निकलता है)

मृदंग०— क़सम है मेनका की आन बान की, सौगंद है चित्रसेन के गले और सुरीली तान की, जो आनन्द यहां वैद्यजी की नौकरी में प्राप्त है वो न भैरवी के अलाप में था न तबले की थाप मे, बरसो तांत पर बाल घिसा किये* परन्तु बाई जी के नज़दीक गुनो मृदंगनाथ निखट्टू ही रहे, मुद्दतो भूके को आटा खिलाया। फिर भी धिक्‌तान धिक्‌तान का ही आशीर्वाद पाया, हां यह कसर है कि नौकरी की जड़ जमीन से सवा हाथ ऊंची है, मालूम नही किस थाप पर पखावज की पुड़ी फट जाय और परन अधूरी ही कट जाय, इसलिये अपने खानदानी कामको, बाप दादा के नाम को डुबाना नही चाहिये आख़िर हम कत्थक की औलाद है हजारो में कह सकते

---

* सारगी बजाने का ऐक्ट। † तबले का सकेत।

है कि वे बकते क्या हो अब भी कुछ नहीं तो साढ़े तीन हज़ार तोड़े याद हैं (ताल में)—

लेकिन यह काम अभ्यास का है अभ्यास के अन्दर बस्ता है, और यहां वैद्यजी के घर में बस खरल है हावन दस्ता है। पीसो सिल बट्टा, लगालो गुन को बट्टा,

छूट जाय अभ्यास तो हो मीठा भी खट्टा।

मुशकिल तो यह है कि पुश्तैनी पेशा भी प्यारा है और नौकरी भी प्यारा है अब लय ताल में निबाह हूं यही हमारी होशयारी है।

(कस्तूरी आई चमचा हाथ में है)

कस्तूरी— अरे मृदंगनाथ! हल्दी मंगाई ?

मृदङ्ग— ऊं हु बेताली आई। फिर से आओ और हल्दी की याद दिलाओ।

क०— अरे निगोड़े, पैको के घोड़े! जब देखो बस ताल और तोड़े चौधरी साहब कहां गये है? (वैद्यजीका उपनाम चौ० है)

मृदंग— वो बूढ़े से जवान बन रहे हैं।

क०— क्या कोई पौष्टिक पाक खा रहे है ?

मृ०— नही दाढ़ी पर सियाही चढ़ा रहे हैं।

क०— यानी ?

मृ०— ख़िज़ाब लगा रहे है।

क०— हाँ, आज नई दुलहन जो आयगी, उसे रिझाने को, बुढ़ापे में जवानीका रौब जमाने को, अरे मृदंगी!

मू०— बोलो जी टूटी हुई सारंगी।

क०— "मैंन का" यह वैद्यजी को विधवा से विवाह करने की क्या सूझी? खाना आबादी भी की तो ऐसी बे तोल की।

मू०— नयी खजरी तो बच्चे बजाते हैं इसके नसीब मे तो यही हो सकती थी पुरानी ढोलकी।

क०— विधवा विवाह में तो बिरादरी से खारिज किये जाने का भय भारी है।

मू०— बनिये ब्राह्मणों में विधवा विवाह का रिवाज नही हैं परन्तु जाटो मे कराव की रस्म जारी है।

क०— फूट गये वैद्यजी के भाग, चूल्हे मे जाय ऐसा सुहाग— मैं भी तो देखती हूं कि मेरे सिवा किस नसीबो जली से इसका घर आबाद होता है, कौन इसकी अर्थी पर रोता है। (गई)

मू०— ऊं हु बेताली गई यूं जाना चाहिये और जाते समय यूं गाना चाहिये —

गाना नं० ८

जाओ जाओ जी हलदीके बजार दाल मेरी चूल्हे चढ़ी,
जीरा भी डाल चुकी धनिया भी डाल चुकी,
हरदी का है इन्तजार जरदी फीकी पड़ी। जाओ०

[मू० गाता गाता गद्दी की झाड़ झूड़ करता है]

थुंत थुंत धा किड़ान, धान तान धा किड़ धा,

थुंत थुंत धा किड़ान, धा किड़ान तिक धा १
धा किड़ान तिक धा २, धा किड़ान तिक धा ३ जाओ०
हाथ सफ़ाई पर जब आया गद्दी पर रहने नहीं पाया,
पत्ता और तिनका, पत्ता और तिनका पत्ता और तिन ।

[जुगल ज्योतिषी का आना]

मू०— प्रणाम महाशय चूहे राम ।

जुगल— क्यों बे बिल्ली के बच्चे क्या लिया मेरा नाम ?

मू०— चूहे राम ।

जुगल— चूहे राम (लकड़ी मारी, एक कमर पर लगी दूसरी ज़मीन पर) ।

मू०— बिलकुल ग़लत, दूसरी पर ही ख़ाली आ गई । महाराज तीन भरी और चौथी ख़ाली चाहिये ।

जुगल— देख आयन्दा अदब से बोला कर, यह चूहेराम तो बचपन के लाड प्यार का नाम था ।

मू०— शायद आप विद्या बिल्ली से डरकर बिल मे दबके रहते होगे ।

जुगल— नहीं बे ज़रा दांतों से कुरता काट डालने का रब्त हो गया था इसी से यह नाम पड़ गया परन्तु वो ज़माना गया अब तो मेरा नाम है पण्डित जुगल किशोर जी ज्योतिष रत्न ।

मू०— बहुत लम्बा नाम है साहब तीन चार आवुरदी का, इसे एक आवुरदी का बनाइये ।

जुगल— तो "ज्योतिषी जी" कह दिया कर, अगर फिर गलती की तो मंगल की दशा हटा कर तुझपर सनीचर की ढ़ैया बिठादूंगा।

मृ०— नहीं महाराज! फिर तो ढाई बरस के लिये मेरा पाऊं अचल हो जायगा और बाप दादा का हुनर (तोड़ा)

धा किडान निक धा, ३ बार

सब ठण्डा हो जायगा।

जु०— चौधरी साहब कहाँ गये है ?

मृ०— गये नहीं जाने को तइयारी कर रहे हैं।

जुगल — कहां जाने को ?

मृ०— नरक मे, आपको मालूम नहीं चौधरी साहब ने पुनर्विवाह किया है।

जुगल— हयँ पुनर्विवाह! यह कब ?

मृ०— चट्ट हुई मगनी और पट्ट हुआ ब्याह,

नट्ट खट्ट देखते है लड़के की राह। आ (नाल)

जुगल— यह मिल कहां से गई ?

मृ०— कोट कांगड़े से।

जुगल — किसकी लड़की है ?

मृ०— अजी लड़की कभी उसके बाप के भी हुई है, यह पूछिये कि किसकी विधवा है।

जुगल— तो वह घर मे आ गयी ?

मृ०— वह तो नही आयी उसकी ख़बर आ गयी है। अब चौधरी

साहब धर्मशाला तक अगवानी को जा रहे हैं।

विद्या०— (अन्दर से) अबे मृदंगी !

मृ०— आगये दुल्हा नवरंगी।

चि०— (बाहर आकर) थू तेरे जनम मे (लकड़ी मार कर) गधे के बच्चे।

मृ०— ऊं हू बेताली रही, समकी जगह खाली रही।

वि०— हरामखोर काम चोर जरासे काम मे इतनी देर, वहां तमाम झमेला मुझे अपने हाथ से करना पड़ा, न वटन में कुरता लगाया, न मेरे तेलमे रूर, न इमली के चिएं छीले न बादाम, न गोली की खाँसी बनाई न हुलास का जुकाम, थू तेरे जनम मे, थूक घड़ी मे सवा पहर दिन चढ़ गया मै जाता हू तू औषधालय मे जा

मृ०— बहुत अच्छा जो आज्ञा

वि०— कोई बीमार आये तो "अभी आते है" कह कर बिठाना।

[विद्याधर चलते हैं जुगल पीछे से दामन खींचता है]

गधे ! अंगरखे पर पाऊ आरूखा आप हैं मूपक महाराज ।

जुगल— फिर वही असत्य वार्ता ? कसम है राहु और केतु की अगर और कोई कहता तो मुह पर तमाचा मारता।

चि०— अच्छा भाई जुगल ज्योतिषी सही। अब तो मेरे साथ आओ, बराती बन जाओ। वह आ रही है, धर्मशाला तक अगवानी को चलेंगे।

जुगल—अरे बैठो भी यार चले उस पुराने पंचांग की अगवानी को

विद्या धर—अए हए, यहा तो तुम्हें खबर नही, पुराना पंचांग नही, नयी जंत्री है नयी जन्त्री। भगवान की सौगन्द नारी काहे को अप्सरा है

जु०—अप्सरा है तो भगवान की सौगन्द नही राजा इन्द्र की सौगन्द खाओ। उसके पहले पति का क्या नाम था ?

वि०—केसरी कलाल कोट कागड़े वाला

जु०—तो उस कोट कांगड़े वाली को साथ ही लेकर क्यूं न आये ?

वि०—सुनो—(कानमें) यह साथ लाने की चीज़ नही है

जु०—क्यूं ?

वि०—वो ठैरी नई नवेली नार मैं ठैरा ज़रा कम जवान भरतार साथ साथ कोई देखे तो फ़ौरन कहदे कि—

जु०—थू तेरे जनम मे

वि०—परन्तु यार जान पर खेल कर ही ये सौदा किया है

जु०—ऐसे सौदे पर लानत है जिसमें जान जोखो का काम हो—क्या औरत खूनी है ?

वि०—नही नही, बात यह है जिसवक्त मै विवाह करने जाने लगा तो मुझे यह गुमनाम खत मिला

जु०—देखूं [खत पढ़ना]

आत्म शत्रु चौधरी विद्याधर वैद्य !

शोक है कि तुमने मिसरी से घर बसाने का विचार किया

है यदि दुनिया मे और कुछ रोज़ रहना मंजूर है तो
मिसरी से हरगिज विवाह न करना
न ख़रीदो ये जिन्स टोटे की
यह है गोली जमाल गोटे की

हस्ताक्षर तुम्हारा शुभचिन्तक

वि०—देखो न भइया कैसी मुशकिल में जान है
इक तरफ़ कामिनी महा सुन्दर
इक तरफ़ हो रहा है मौत का डर

जु०—तो भई यह बताओ मैं तुम्हे मुबारक बाद दूं या नहीं

वि०—यार यह तो मुझे भी मालूम नही

जु०—मालूम नहीं तो तुम मुझे मुबारकबाद दो

वि०—किस बात की

जु०—कल एक हज़ार चिन कर दिये, इस बात को
अटकल से शर सधान दिया ऐसे गंभीर निशाने पर
वे खता चुस्त जाकर बैठा अन्धे का तीर निशाने पर

वि०—किस तरह ?

जु०—तुम जानते हो कि मै ज्योतिष वोतिश कुछ नही जानता

वि०—तो थू तेरे जनम मे

जु०—शीघ्रबोध और होडाचक्र भी सरसरी देखा है, दो चार अंडबंड श्लोक कही के याद है। परसों वह सरकारी घोड़ा जो तबेले से खुलकर भाग गया था, मुझसे ज्योतिष द्वारा उसका पता पूछा गया तो मैंने अन्धाधुन्द बता दिया,

पूर्व की तरफ़ पता दिया, इत्तफ़ाक़ की बात वह उधर ही पागया तो एक हज़ार का उपहार यारों के हाथ आगया अब कहो कि मुबारक

वि०—भई मैंने कुछ नहीं सुना कि तुमने क्या कहा पर मुबारक मुबारक मुबारक। लो अब जल्द चलो धर्म शाला से उसे ले आएं

जु०—तुम चलो मैं एक काम करता हुवा इधर से आता हूं

वि०—एलो मैं तो ये चलता हुआ

(एक तरफ से जुगल जाते हैं दूसरी तरफ से वैद्य जी जाना चाहते हैं कस्तूरी आई)

कस०—तू चलता हुआ तो मैं चलती हुई हूं
काम बनता बिगाड़ कर छोडूं
मुई सौतन की चूड़ियां तोडूं तो सही।
जाते कहां हो यह उचापत का पर्चा चुकाते जाओ

वि०—आकर देखा जायगा

क०—क्या नई दुल्हन को लेने जारहे हो ?

वि०—यह तो मेरी पोशाक ही कह रही है सारा हाल, फिर ऐसा बेहूदा सवाल

क०—भला मैं यह पूंछती हूं कि इस कराव के बग़ैर तुम्हारा कौनसा काम अटका पड़ा है

वि०—तो क्या औरत के बग़ैर लाख का घर ख़ाक होने दूं

क०—कौन मुवा कहता है कि लाख का घर ख़ाक हो गया, उस

निपूते की ज़बान निकालूं, कौन मेरे इन्तज़ाम मे बट्टा लगाता है, उस निगोड़े की अरथी पर कफ़न डालूं। इसी भूल में यह कराव किया होगा ?

वि०—तुझे इससे क्या ?

क—मुझे क्यूं नहीं, कई बरस से मै तुम्हारे घरको संभाल रही हूं न्हिलाती हूं धुलाती हूं भोजन बनाती हूं खिलाती हूं मिली जुली हर तरह होशयार, घिसी पिसी तजुर्बेकार, रोटी कपड़े के सिवा तनख़ाह की तलबगार नहीं, आधी रात किसी सेवा से इन्कार नही, फिर वह ऐसी कहां की आयगी जो हम पर हुक्म चलायगी।

विद्या०—बिचारी को हुकूमत से डर लग रहा है, भोली है ना, इसे खुश रखना चाहिये, कस्तूरो ! तू कुछ भय न कर, वह तो ऐसी सीधी सादी उदार अलबेली है कि आते ही ऐसी घुल मिल जायगी तुझे दासी नही किन्तु यही समझेगी कि यह तो मेरी पुरानी सहेली है

क०—(खुद) उसका घुलना मिलना जाय चूल्हे मे, मै तो तेरे साथ घुल मिलकर रहना चाहती हूं

वि०—यूं भी मै क्या दुन्या के सुख भोगने को यह काम कर रहा हूं

क०—तो फिर

वि०—मैं तो अपने मरने के बाद श्राद्ध का इन्तज़ाम कर रहा हूं औलाद न हुई तो कनागतो का महीना खाली जायगा,

3

मेरा जीवात्मा पराई पत्तलों पर राल टपकायगा

क०—(हिसाब का पर्चा दिखाकर) तो इसे भुगताते जाओ

वि०—वापस आकर। हमें इस समय काम है

क०—आग लगे मुए काम को। किसी की इज़्ज़त जाय किसी को काम की पड़ी है इसे चुका दो नहीं तो मोदी नालिश ठोक देगा वह दर्बार की तरफ़ जा रहा था मैंने खुशामद करके रोका है

वि०—ला दिखा क्या है। यह हिसाबका पर्चा है या किसी पापी का जनम पत्र। घी पाँच सेर १०-)। इस क़दर लूट

क०—जी हां मोदी कहता है कि अब घी का भाव चढ़ा हुवा है

वि०—एसा चढ़ा कि चोमंज़िले को छोड़ सौमज़िले पर चढ़ गया पांच सेर के दस रुपये सवा आना, भला सवा आना तो मज़दूरी का होगा, रहे दस रुपये पांच सेर घी के, तो पांच दूनी दस, हंय एक रुपये का केवल दो सेर !

क०—वाहवा। क्या बांके मुनीम हैं। एहाँ एक रुपये का दो सेर हुवा तो क्या बेजा हुआ

वि०—यह तो कुछ बेजा नही है, अच्छा आकर चुकता कर देंगे इस वक्त हमें न रोको अब तो उसे ले आएं (चल दिये)

कस्तूरी—(खुद) ले आओ, आएंगी ना गंधर्व सेन की कन्या, जवान हुई तो क्या है मुई को मिस्सी लगानी भी न आती होगी आंखो में मेरी तरह डोरा भर सकेगी तो जानूंगी, मिसरी मिसरी मक्खियाँ भिनकती हुई मिसरी

लहू बगैर की सफैद हुई तो क्या इस काली कस्तूरी की महक को पहुंच सकेगी। पर अफ़सोस तो यह है कि मेरे सुहाग की चुनरी इस कराव के रेले में बह गई हाय हाय मैं तो वही विधवा की विधवा रह गई

गाना

कहां से कूद पड़ी मिसरी
मैं विधवा की विधवा रह गयी। हय हय कहां से०
पुरानी पीत मेरी बिसरी। मैं विधवा की०
अब पहनूंगी चुड़ियां किस पर
मॅहदी कजरा सब था इस पर
वही चूल्हा वही चिमटा, फिर मुझ से आ चिमटा
चुनती थी एक दीवार नई
चुनते ही चुनते ढै गयी। हय हय कहां से०

अंक १ प्रवेश ५

मकान

(जुगल ज्योतिषी दाखिल होता है)

जुगल—सत में सत्तू तक का सोग, कर प्रपंच चख मोहन भोग जमना की अम्मॉ ! ए जमना की अम्मां ॥

रोहिनी—(अन्दर से) जी

जुगल—आसन यहां ले आओ ज़रा हवा मे बैठेंगे

रोहिनी— लाती हूं

(चौकी पर आसन बिछा हुवा आता है)

दो औरते सास बहु आती हैं, थाली में कुछ भेट है जुगल की पोथी पर दो रुपये चढाती हैं

सास—महाराज इसके ग्रह ता देखो

जुगल—मित्र नही अक्षर, देखूं क्या पत्थर। बाई इसका नाम क्या है ?

सास—लाजवती

जुगल—लाजवती, यह तुम्हारी बहू है ना ?

सास—क्या बहू है विचारी, विपताकी मारी, सवा ग्यारह बरस की होनेको आई अभी तक किसी बच्चेकी मां नही कहलाई

जुगल—(खुद) तो क्या सात बरस की लडकी के औलाद चाहता है। इसके विवाह को कितने दिन हुए ?

सास—मुद्दत गुज़र गई सात बरस की का हुवा था

जुगल—होना हो चाहिये इसी उम्रमे। ताकि कच्ची उम्र मे कच्ची बुद्धि की औलाद निकलती रहे और हम जैसे मूर्खों की भी दाल गलती रहे, शास्त्र मे भी लिखा है:—

अष्ट वर्षा भवेद्गौरी नव वर्षा च रोहिणी
दश वर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला

हां तो इसका नाम लाजवती, चू चे चो ला अश्विनी मेष इसकी राशि मेष है इसे पुरुष सम्बन्धी दुःख... ...

सास—हां हां ठीक है महाराज ठीक है इसका पति ज़रा बाहरा है

जुगल—जोग तो यह पड़ा है कि कोई औरत . ...

सास—बस बस पहुच गये महाराज आप बात को, वह उसके घर से आता है आधी आधी रात को

जुगल—इसकी तरफ़ उसकी प्रीति .. ..

सास—ठीक ठीक ठीक बिलकुल ठीक कहा महाराज वह इसे सूंघता भी नही

जुगल—(खुद) इसके सर में बू आती होगी

सास—रात दिन बेसुवा के घर पड़ा रहता है

जुगल—इसके पति की प्रेम पात्री ऐसी होनी चाहिये जो अनेक पतियो की स्त्री होकर भी किसी की स्त्री न हो

सास—आहा हा सासतर के बलहारी, मैने कहाना महाराज कि बेसुवा के घर पड़ा रहता है

जुगल—यह मै ने नही सुना । सुनता नही तो कहता क्या ख़ाक

सास—आप का ध्यान पोथी मे था

जुगल—हा हमसे तो जो कुछ कहती है यही कहती है । वह कभी कभी इसे मारता भी होगा

सास—धन्य हो धन्य हो महाराज आपके तो चरन पूजने चाहियें (बहूसे) देख तो सही मोहल्ला जान न मकान, तेरा बदन देखा न बदन पर पड़े हुए बैत के निशान, विद्या के ज़ोर से सब बता रहे है

जुगल—माई ! मुझे उसके सब लच्छन नज़र आ रहे हैं

सास—क्यों न ही आप से तो त्रिलोकी का भेद नही छुप सकता,

पण्डतों को तो पोथी में दीख जाते है सब बुरे भले

जुगल—अरी मूर्खाओ तुम हमारी मदद न करो तो हमारा टट्टू एक क़दम न चले

सास—तो कोई उपाय बताइये महाराज कोई वसीकरन का मनतर जनतर ?

जुगल—क्या बताऊं उस वेश्या के ग्रह उसके ग्रहो से ज़ोरदार है

सास—तो महाराज उन्हे कमज़ोर कर दीजिये

जुगल—यह क्या आसान बात है इसमें बड़े धनका काम है उस वेश्या की मूर्ति सोने की बनाई जायगी और वह आग में जलाई जायगी तब इसके पति की प्रीति आग से घबरा कर इधर भाग आयगी

[सास बहू मशवरा करती हैं]

सास—औलादसे क्या धन प्याराहै (बहू कंगन उतारकर देतीहै) यह लीजिये सुनहरी कंगन इससे रांड की पुतली बनवा लीजिये और मेरा उद्धार कीजिये

जुगल—सब कल्याण हो जायगा। अब तुम मंगलवार को यहाँ आना (जाती हैं)

जुगल थाली में आया हुवा माल सभालता है

खुश होता है दो औरते और आती हैं)

औरत—लीजिये महाराज ये लड़का और जन्मपत्र दोनों मौजूद है

जुगल—(बच्चे को पुचकार कर अपनी गोद में बिठाता है) आ बेटा बैठ जा। यह है तिल के पास आग से जलने का

निशान

ओझिन—बहू जी उस दिन से आज आई हो

औरत—क्या करूं पण्डितानी जी दु:खों के मारे स्वभाव में भूल हो गई है कि चीज़ रखकर याद नहीं रहती यह जन्म पत्र ही सन्दुक में रखकर भूल गई थी

ओझिन—हां रानी जब ग्रह आवें हैं तो सब तरह सतावें हैं। मेरा भी यही हाल होता चला था पर मैं ने तो जमना के चाचा से शान्ति पाठ करा दिया अब कुछ नहीं भूलती हूं

औरत—मैं भी पाठ कराऊंगी बहन

जुगल—इसकी छाती पर कोई तिल है?

औरत—(देख कर) है महाराज यह रहा

जुगल—(पत्र में देख कर) तो इस को बचपन में आग से भय होना चाहिये

औरत—हां यह एक दफ़े चूल्हे के पास बैठा हुवा जल गया था

जुगल—वहां मैं तो मौजूद नहीं था? ये तो जो कुछ इस में (पत्री की तरफ) नज़र आरहा है वह कहता हूं। इसके नसीबमें तीन भाइयों का जोग पड़ा है।

१ औरत—नहीं महाराज यह तो अकेला है

जुगल—निशाना चूका

२ औरत—अरी हां ठीक तो है एक गर्भ पात होगया था ना तेरा

जुगल—एक लड़का और हो आयगा। हो गये ना तीन

२ औरत—हो कहां से जायगा यह तो विधवा है

जुगल—अररर अन्धा घोड़ा फिसल गया चूडियां देखे वगैर मेरे मुंह से क्या निकल गया

२ औरत — हां एक इस की बहिन का लड़का है वह इसे अम्मां अम्मां कहा करता है

जुगल—यही तो है सारा भेद और विद्या का मूल, मैं भी तो कहूं कि ऐसो क्या भूल, ऊल जलूल हो गई माकूल देखो ना कैसी बिध मिली है कहो शास्त्र झूंठे हो सक्ते हैं। अच्छा इस का वर्ष फल हम बना रक्खेंगे

१ औरत—तो यह दच्छना

जुगल—इस की क्या जल्दी है तुम बडी लच्छमी हो। यह साड़ी तुमने कहां से मंगाई है

पंडितानी—मैं ऐसी को ही कहती थी इसका रंग बड़ा अच्छा है

जुगल—अब इस रंग की बाज़ार में न मिले तो कहां से लाऊं

१ औरत—मैंने यह एक जोड़ा मंगाया था एक पहन लो दूसरी रक्खी है वह अब के लेती आऊंगी

जुगल—नहीं नहीं तुम तकलीफ़ न करना हम मंगालेंगे-मंगा तो रहे ही हैं

१ औरत— नहीं मैं ज़रूर लाऊंगी

(दोनों का जाना राजवैद्य का आना)

राजवैद्य—लीजिये यह देखिये दोनों शीशियां। यह मेरा व्यापार

चिह्न नागमार्का और यह तुम्हारे मित्र विद्याधर वैद्य की बद्‌मआशी वही नाग मार्का

जुगल—चौधरी विद्याधर वैद्य ऐसे तो है नही भूल मे कुछ ·····

मेरी भो बात मानले ये आप

भूल मे होगया है उन से पाप

राजवैद्य—सारी हिकमत खाक मे मिला दूंगा किसी के व्यापार चिह्न को अपना बनाना बड़ा भयंकर है किसी के निशान हिरफ़ा की तलबीस करना क्या ख़ाला का घर है छटी तक का खाया पिया निकाल दूंगा कल ही राज दर्बार में दावा करके मुसीबत मे डाल दूंगा

जुगल—देखिये ना भिषगाचार्य जी महाराज ! इस मे उनकी···

राज्य०—मै कुछ नही जानता तुम उन के मित्र हो इस लिये तुम्हारे कान खोल चला हूं

(जाना)

जुगल न्याय अब चौधरी की ओर नही

चोर हैं अब तो ख्वाह चोर नही

ऐब करने को है हुनर दरकार

हर कोई तो जुगल किशोर नही

(दो सिपाही आकर प्रणाम करते हैं)

१ सिपाही—पण्डित जी महाराज

जुगल – सुखी रहो

२ सिपाही – महाराज वह सर्कारी घोड़ा जो गुम होगया था,

आपने उसका पता बता दियाथा उस वक्तसे महारानीजी के दिल पर आपकी ज्योतिष का नक्श बैठ गया है

जुगल—सब ईश्वर की कृपा है

१ सिपाही—आज रात के वक्त राज महल में चोरी होगई है रानी जी की आज्ञा से हम आप के पास आये हैं आप कुण्डली बना कर चोर का पता बताइये

जुगल—अच्छा हम पूजा करने के बाद कुण्डली बनाएंगे जो कुछ मालूम होगा वह महल में कह आएंगे

(सिपाही का जाना)

(खुद) अब मरे बच्चा चूहेराम

रोज़ चलता है कहीं झूंठों का दाव
चल चुकी बस दो क़दम काग़ज़ की नाव
पोथियां देंगी न धोके का सबूत
आगये लेने मुझे यह जम के दूत

इस ज्योतिषी बनने से तो जुलाहा बनना अच्छा था कि ताने बाने से गुज़र कर लेता अरे इस से तो चेता चमार बनना भी अच्छा था के फटी टूटी गांठ कर पेट भर लेतो

ज्योतिषी ने उड़ा के बेपर की
खुद बुलाली दशा सनीचर की
यह मुसीबत मेरे बयान की है
सारी तक़सीर इस ज़बानकी है

जिह्वा—(आकर छुपी हुई) मैने अपने भाई से मिल कर चोरी तो
करादी मगर ये पण्डित जी तो कर देंगे मेरी बरबादी
कुछ भेट चढ़ा कर इन्हे मिलालूं सर पर आई दशा
दान दच्छना से टालूं

जुगल—(अपनी ज़बान को सम्बोधन करके) जिह्वा ! ओ
लालची जिह्वा !

जिह्वा—हाय हाय मेरा नाम तो इन्हो ने जान लिया

जुगल—ओ दुराचारे जिह्वा !

जि०—हाय हाय यह मेरा नाम लेते है तो कलेजा धक धक
करता है

जुगल—जिह्वा ! यह सब तेरा ही कुसूर है तेरा ही फुतूर है

जि०—जान लिया, बस मुझे पहचान लिया

जुगल—ओ मुफ्त के माल पर राल टपकाने वाली जिह्वा ! छुरी
से तेरे टुकड़े टुकड़े कर दिये जाएं तो उचित है

[जिह्वा पाउओं मे आपड़ती है]

जि०—नहीं महाराज ! मुझ पर दया करो जिसको आपने ज्योतिष
से जान लिया हे वो जिह्वा इसी दासी का नाम है, मैं
आप के आगे झूठ नहीं बोल सक्ती । राज महलों में चोरी
कराना मेरा ही काम है

जुगल— हयॅ ग़ैब के पोथे से मतलब की ख़बर आने लगी
यह सनीचर की दशा मंगल नज़र आने लगी

जि०—महाराज इस किंकरी पर दया करो

जुगल—नहीं हमारी विद्या जो कुछ हम से बखान करेगी वही हमारो ज़बान राजा से बयान करेगी

जि०—नहीं दयासिंधु मैं आशा करती हूं कि एक सरन आई हुई अबला के प्राण बचाने में आप की ज़बान चुप रहने का थोड़ा कष्ट सह सकी है और इन अशरफ़ियों को गिनने में मशगूल रह सक्ती है

जुगल—क्या करूं लक्ष्मी तुझ पर दया करता हूं अब जो कुछ अपराध किया है वह साफ़ साफ़ कहदे तू छुपायगी तो हम खुद देख भाल लेंगे, तेरी ज़बान से नही निकलेगा तो पत्रे से निकाल लेंगे।

जि०—नहीं देवता मैं साफ़ कहती हूं कि महलों में चोरी मैं ने कराई है चोरों का अगवा मेरा भाई है

जुगल—वह माल कहां है ?

जि०—कोई सुनता तो नहीं है

दबी जबान में कहना जुगल का जोर से चिल्लाना दासी का उसका मुः बन्द करके आहिस्ता आहिस्ता आवाज़ दबा कर बाते करना

अंक १ प्रवेश ६

स्वर्ग

स्वर्ग में सब देवता मौजूद हैं बीच मे इन्द्र एक तरफ ब्रह्मा, विष्णु, महेश दूसरी तरफ यमराज अग्नि आदि दूसरी वीग मे एक तरफ मुक्ति का आसन दूसरी तरफ बन्ध का, कर्म का पेट आधा सफेद आधा काला, मुक्ति की तरफ सफेद, बन्ध की तरफ काला।

यम—यदि आज भी मेरा न्याय न हुआ तो मैं इस सेवासे त्याग पत्र देने को तैयार हूं

शिव—अरे भाई तुम ऐसी बातोका क्या बुरा मानते हो आखिर तुम यमराज हो शरीरियो के शरीर से जीव को अलग करते हो तो सम्बधियो का अनिष्ट होता है इससे लोग कुछ बुरा भला कह देते होगे

यम—तो इसमे मेरा क्या अपराध है? मै अपनी इच्छा से तो किसी को नही सहारता, वक्त से पहले तो किसी प्राणी को नही मारता, फिर मेरे सर मुफ्त का इलज़ाम है यह नहीं सोचते कि मौत का वक्त मुक़र्रर करना तो खुद प्राणियो का काम है

करते है यमराज को वदनाम जो मतहीन है
ज़िन्दगी और मौत ये दोनों ही कर्माधीन है

ब्रह्मा—सत्य है लोग केवल आनन्द ही आनन्द देने वाली मुक्ति-

की तरफ क्यों नहीं चलते हैं जान बूझकर बन्ध की ओर मचलते हैं

—भला इसमें मेरा क्या कुसूर है कुकर्म करने वालोंको बांध लेना तो मेरा दस्तूर है

-धन्य हो बन्ध देवता धन्य हो कुछ न बन आया तो कर्म का दोष ठेराया, जीव का नाम न लिया मुझ पर बोह-तान लगाया चक्राधिपति ! मुझ में तो कुकर्म और सुकर्म दोनों तरह का व्यवहार है आगे कर्म करने वाले को अखतियार है

वेदों की आज्ञा पे हमेशा अमल करे
या आज्ञा में व्यर्थ ही रद्दो बदल करे
दिन रात पाप कर्म कपट और छल करे
जीवन को मलसे पूर्ण करे या विमल करे
मुक्तीका है यह मार्ग यह रस्ता है क़ैदका
मुख्तार खुद है जीव सियाहो सफैद का

—बन्धो बन्ध ! तुम बुरा न मानना जीव के लिये दो ही ठिकाने हैं तुम्हारे पास रहेगा या मेरे पास, परन्तु क्षमा करना तुम्हारे पास वास्तविक सुख का कोई सामान नहीं है

-और तुम्हारे पास

-आनन्द ही आनन्द है दुःख का निशान नहीं है

देवी ! क्षमा करना

तुम्हें पाकर भी कोई क्या निरन्तर तुम को पाता है ?
तुम्हारे पास रह कर भी तो मेरे पास आता है

मुक्ति—आना ही चाहिये क्योंकि ईश्वर न्यायकारी है
जिसका मुक्ती नाम है उजरत है वह आमाल की
माल की मिक़दार पर क़ीमत मिलेगी माल की
कर्म की सीमा है तो मुक्ती की सीमा क्यों न हो
काम करके एक दिन तन्ख़ाह ले लो साल की

कर्म— यह है अपने गर्वमें और है इसे अपना गुरूर
आ गया है आज क्या दोनों की बुद्धी में फ़ुतूर
दम क़दम से मेरे दोनो मे है सब रंजो सुरूर
मैं जो हद वाला हूं तुम दोनों हो हद वाले ज़ुरूर
मैं न हू तो इस तरफ़ ग़म, इस तरफ़ शादी न हो
मैं न हूं तो एक के घर में भी आबादी न हो

मुक्ति—आबादी आप के दम से सही परन्तु भ्राता बन्ध जो इस बात का ताना देते हैं कि मुक्ति अनित्य है नित्य नहीं, मैं भी कहती हूं कि मैं अनित्य हूं जो वस्तु किसी निमित्त से प्राप्त होती है वह आरम्भ होती है इसलिये समाप्त होती है इसमे दोष क्या है ?

विष्णु—ठीक है "ते ब्रह्म लोकेषु परान्तकाले०" इत्यादि बचन इस में प्रमाण है

इन्द्र यदि परान्त काल तक भी मुक्ति का आनंद भोग कर जीव फिर कर्म क्षेत्र में आता है तो यह मुद्दत क्या कम है

इस पर भी तो बन्ध के राज्य मे बसने वाले हज़ार है तो
इस तुच्छ राज्य पर हंसने वाले दो ही चार हैं
इस का कारण यह है कि ये बड़े बड़े पांच पराक्रमी.—
यह काम देव, यह क्रोध कराल, ये मद महोदय, यह लोभ लाल यह मोह महाशय इन के अधीन है और मुक्ति के गण कौन है ये दोनो ज्ञान और वैराग जो महा दुर्बल और दीन है इन का दम दिलासा फंसाने में चतुर और नतीजे मे जाल जंजाल है और इनका सादा स्वरूप आकर्षण से खाली परन्तु सुख मे माला माल हैं

सचहै:—टपक पड़तीहै सब की राल बाहर की सफाई पर
वरक़ चिपकाये है चाँदी के गोबर की मिठाई पर
इधर काग़ज़की इक रही है मक्खन और मलाई पर
नज़र क्या जाय इसकी खुश ग़िजाई पर बड़ाई पर
यही खाता रहा चक्कर फसा जो इनकी युक्ती मे
जहां तक ईश्वर है, हे वहां तक राज मुक्ती मे
जो है अन्धा जाय वह कगाल मुफ़लिस राज मे
आयगा जो इस तरफ़ घूमेगा वह इस राज मे

रेवा का विमान में आना

-देव मण्डल को प्रणाम

-हंय !

-रेवा ! तू यहाँ कहाँ ?

यम—तेरे प्राण निकलने की ख़बर मुझ को क्यो न हुई ?

रेवा—आप को कहा से ख़बर होती, यम राजका शस्त्र तो उसी समय चलता है जब कोई प्राणी चोला बदलता है और मै अभी तक उसी शरीर मे हूं

शिव—हे वैश्य कन्या । स्वर्ग की सीमा मे कन्याओ को आने की आज्ञा नही है फिर तू यहां कैसे चली आई ?

रेवा—सती अनसूया के आशीर्वाद से

विष्णु—किस देवता के विमान मे यहा तक पहुची ?

रेवा—विमान आकाश मे चलता है और शब्द भी आकाश में, सती अनसूया का आशीर्वाद भी शब्द ही था इसलिये—

शब्द ही बन गया विमान मेरा
स्वर्ग को कर दिया मकान मेरा

शिव—तू कन्या है इसलिये स्वर्ग से निकल जा

रेवा—क्या कन्या अपवित्र होती है जिसके दर्शन से देवताओं के गिर जाने का भय है ?

विष्णु—नहीं, देवताओ के गिर जाने का भय नही किन्तु यहाँ के नियम पर हड़ताल फिर जाने का भय है

रेवा—तो यह नियम मे दोष है या कन्याओं का कुसूर है ?

शिव—क्वांरी लडकी यहां क़दम नही रख सकती क्योकि वह अभी तक पति-सेवा से दूर है

रेवा—दूर है परन्तु कन्या तो मजबूर है जब कि पति प्राप्त ही नही हुआ तो पति-सेवा का व्यवहार नहीं हो सकता

ब्रह्मा—कुछ हो यहां तेरा सत्कार नहीं हो सकता

शिव—पति सेवा के बगैर किसी स्त्री का उद्धार नहीं हो सकता

इन्द्र—स्त्रियों के लिये केवल पति सेवा ही स्वर्ग प्राप्तिका उपाय है

यम—जाओ चली जाओ, अविवाहिता स्त्री के लिये यहां यही न्याय है

रेवा—इसका नाम न्याय नहीं महा अन्याय है

इसे तुम न्याय किस मुंह से कहोगे
किसी का दोष हो और कोई भोगे

क्या मैं अपनी इच्छा से अविवाहिता रही हूं? छः बार मेरे माता पिता ने वाग्दान किया और तुमने छओं लड़कों को विवाह से पहले ही मार दिया अब इसका न्याय किससे पाऊं? अपराध तुम्हारा और स्वर्ग से निकाली मैं जाऊं?

यम—भोली बाला! हमने किसी लड़के को नहीं मारा और न हम किसी को मारते हैं

स्वर्ग मे जो काम है वह न्याय से और धर्म से
आप ही मरता है जो मरता है अपने कर्म से

कर्म— फिर वही इलज़ाम थोपा कर्म के सर आपने
जीव को छोड़ा उठाया हाथ मुझ पर आपने
नाम लो जीवात्मा का कर्म का कर्ता है जो
यह कहो मरता है अपने आप ही मरता है जो

रेवा—अन्धेर की बात है कि मरने वाले मरगये और मेरे लिये स्वर्ग

का दरवाज़ा बन्द कर गये—कोई नही बोलता ? वृद्ध ब्रह्मा जो बैठे है, श्री विष्णु भगवान मौजूद है, शंकर महाराज विराजमान है मगर सब बे ज़बान है

हर एक को ख़ियाल है क्या पक्षपात का
मिलता नही जवाब जो बे लाग बात का

यम—देवराज ! आज्ञा हो तो इस को ज़बान बन्द करदा जाय ?

इन्द्र—नही, इस से तो हमारी कमजोरी सिद्ध होगी अगर यह अपना हक़ माँगती है तो क्या बुरा करती है

रेवा—क्या स्त्री स्वर्ग मे नही आसक्ती, पति-सेवा के बग़ैर स्त्री स्वर्ग नही पासक्ती ? मुझे बताया जाय कि यह नियम कौन से शास्त्र से टटोला गया है ? कौन सी धर्म तुला मे तोला गया है ?

शिव—श्रुति और स्मृति पुकार पुकार कर कह रही है कि स्त्रियो का मुख्य धर्म पति-सेवा है

रेवा—तो मै कब कहती हू कि स्त्रियो का धर्म पति-सेवा नही है बल्कि यह पूछती हूं कि दैव योग से पति-सेवा का मौक़ा ही न मिले तो उसके लिये क्या कानून है ? निरुत्तर हो गये तो कह दीजिये कि न्याय का ख़ून है

ब्रह्मा—हताश बाला ! मनुष्य-योनि और देव-योनि समान नही है, कर्म और भोग की व्याख्या समझने योग्य तेरा ज्ञान नही है

रेवा—तो इतना ही बता दो कि अगर कोई पाँच वर्ष की कन्या

मर जाय और अपने पूर्व जन्म के पाप कर्मो का भोग भी समाप्त कर जाय तो उसे कहां रक्खोगे? अगर कोई मन वचन कर्म से पुण्य-कर्म करने वाली बाल-विधवा मर जाय और पति-सेवा का अवसर उस के हाथ न आय तो क्या उस के लिये भी यही न्याय पसन्द होगा उस के लिये भी स्वर्ग का दरवाज़ा बन्द होगा?

विष्णु—सती अनसूया के वरदान से तुझे स्वर्ग का दर्शन हो गया अब यहां के नियम से फिर वहीं लौट जा

रेवा—कन्याओंकी मौत रोक दी जाय यह इन्तज़ाम नहीं। द्विजोंमे विधवा-विवाह का काम नहीं। ऐसे जीवों के लिये स्वर्ग का धाम नहीं। यह तुम्हारी ज़बरदस्ती नहीं तो क्या है

यम—रेवा इस वाक्‌पटुता को रहने दे तुझे मृत्यु लोक में वापस जाना ही पड़ेगा

इन्द्र—जा, मै तेरा अपूर्व साहस और बुद्धिमानी देख कर तुझ पर ज़ाहिर कर देता हूं कि तू अब जिस वर के साथ विवाह की इच्छा करेगी वो वाग्दान होते ही नहीं मरेगा क्यो कि वह भोग समाप्त हो चुका, पति-विहीना रहने का जितना दु:ख होना था वह तुझे प्राप्त होचुका, जा और किसीकी धर्म पत्नी बन कर स्वर्ग मे रहने का अधिकार पा

कर्म—इस तरह जब तू पति-सेवा करके यहां आयेगी तो स्वग से भी उत्तम अपवर्ग को पायेगी

रेवा—हे त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु महेश! तुम्ही सब देवो मे बड़े हो

और तुम्ही मुझे हत मनोरथ करने पर अडे हो एक स्त्री को लाचार करके मृत्यु लोक भेजते हो तो मैं भी तुम्हे शाप देती हूं कि किसी रोज़ तुम्हे भी मृत्यु लोक मे एक स्त्री के सामने लाचार होकर पड़ा रहना पड़ेगा, तुम्हारा इस वक्त का मौन उस वक्त भी तुम्हारे मुखों मे ताले जड़ेगा।

[चली जाती है]

ब्रह्मा—ये शाप क्या टलने वाला है, क्यो कि यह भी एक पुण्यात्मा बाला है

शिव—परवा नहीः—

दे गई जो शाप कर देंगे वही सामान हम
देंगे और देते भी है ऐसे वचन को मान हम

विष्णु— यह बिगडना भी मेरे भक्तो का इक अन्दाज़ है
हम उठाएंगे इसे यह योगिनी का नाज़ है

[परदा कवर होता है]

मकान
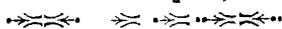
मिसरी दाखिल होती है भोला भूत के सर पर
बिस्तरा और काँधे पर खुरजी पड़ी है

मिसरी—भोला ! देख चौधरी साहब घर मे तो होंगे

भोला—ओगी, परन तुमारी पती धर्मशाला में नई आई ये लम्बा

शाक का बात है अम उसके साथ लड़ाई करना का होगा

मिसरी—ईश्वर जाने धर्मशाला तक लेने क्यो नही आये, कहीं काम मे रुक गये होंगे वर्ना:......

भोला—ये अम नहीं जानती तुप ने अपनी पति को खबर करना सका वो खबर का क्या लाभ ? अम को इसका घर मे पूछना पड़ा, उसका घर मे पूछना पड़ा चौदहघड़ी का घर कौनसी है। भेड़जी का घर कौनसा है, विधवाघर की घर कौनसी है, कितना मुशकल का बात, अम ज़ुरूर उसके साथ लड़ाई करने का होगा

मिसरी—ख़बरदार, उनके सामने एक शब्द भी न बोलना

भोला—बोलना होगा, मान लो कि तुम अमारा औरत होता और अम तुमारा मर्द होती और धर्मशाला में लेने न आती तो तुम को अमारे सर पर कितना गुस्सा आना मांगती ?

मिसरी—चुप मुए "नैपाली भैंसे" भोलपन में कहनी अनकहनी सब कह डालता है। भोला ! तू कब तक इतना भोला रहेगा ? नैपाल से आये भी तुझे कई बरस गुज़र गये और भाषा न आई, खैर, देख तो भोला ! धर्मशाला से वह संदूक भी लेते आते तो कैसा अच्छा होता

भोला—कैसा अच्छा होता ?

मिसरी—वह दुशाला जो चौधरी साहब की भेट करने को लाई हूं वो उसी में है अगर मिलते ही भेंट किया जाता तो

भेट का आनन्द आता

भोला — वो अम अभी लाऊंगा

मिसरी—शाबाश मेरे भोला भूत ! ज़रा भाषा की कचाई है नहीं तो दिल का साफ़ है और मज़बूत

विद्याधर अन्दर से चिल्लाते आते है

विद्या०—ओ मेरी कमल की कली ! ओ मेरी मिसरी की डली !

बतादो मुझे जो किसी को ख़बर है

कहा है कहाँ है किधर है किधर है

मिसरी—आप की दासी आप के चरनो मे ···

विद्या०—ओ मेरे मिसरी के कूज़े

खायेंगे खूब गोद में रखकर

मुंह तो मीठा करे ज़रा चख कर

विद्याधर लिपटते हैं बीच मे भोला आ जाता है
मिसरी के बदले भोला का मुख-चुम्बन हो जाता है

विद्या—हाख़ थू

भोला—अरे ओ अन्धा हाथी ! हम चरकटा है या हतनी ? अम तुमारा पत्नी का सेवक है या तुमारा पत्नी ?

[चौधरी के दामन से अपना गाल पूछता है]

वि०—अबे ओ ऊन

भो०—ऊन नही मेरा नाम है भोला भूत

वि०—अंगरखे पर धब्बा डाल दिया

भो०—ये धब्बा हमने नहीं डाली है तुमारा थूक काली है

वि०—क्या कहूं आर्ये! प्रेम ने आंखो पे पट्टी बाँध दी

मिसरी— वीच मे भोलाने टट्टी बाँध दी

भोला—चौदहधड़ी नो ऐसी पिल पड़ी कि तेल बनाने वाले की बैल बन गई

मि०—इस की तरफ़ ध्यान न दो यह तो तुमपर ज़रा बिगड़ रहा है। जारे भोला बिस्तर खोल

[जाना]

वि०—मुझ पर क्यो बिगड़ रहा है? भूल में जरा इसके गाल का मैल धुल गया तो इस की गाँठ का क्या खुल गया?

मि०—नही, यह तो तुम धर्मशाला तक मुझे लेने नहीं आये इस वास्ते बिगड़ रहा है, उसी वक्तसे अकड़ रहा है

वि०—हंय तो क्या कमबख्त कुछ झगड़ा करेगा?

मि०—नही तुम बे फ़िक्र रहो

वि०—कुछ हाथापाई की नौबत तो नही आयगी?

मि०—मुए के हाथ तोड़ दूं जो यह हिम्मत करे

वि०—तो प्यारी मैं अपने नौकरों पर तुम्हारी सत्ता ज़ाहिर करदूं यह उचित होगा। कस्तूरी! ओ कस्तूरी!!

(कस्तूरी का आना) मुह फेर कर खड़े होना।

कस्तूरी—मेरी पैजार देखे इस चुडेल सौकन की तरफ़

वि०—यह हमारी रसोई बनाने वाली कस्तूरी, बड़ी हुशयार, बड़ी महनती, कस्तूरी। कस्तूरी!!

क०—(तेज़ी से) कह क्यो नहीं चुकते जो कुछ कहना है

वि०—कहूं क्या ख़ाक पीठ से बात करती है थू तेरे जनम में इधर नही देखती

क०—क्या देखूं इधर ? इधर है क्या ? (देखा)

वि०—(स्वयं) इसे ज़ियादा छेड़ना अच्छा नही वर्नः मिसरी के सामने ही कड़वी कड़वी सुनायगी

क०—(फिर मुंः फिराकर मनमे) अरे यह मिसरी कैसी ? मैं तो समझी थी कि कोई नया कूज़ा होगा यह तो वही पुराने गुड़की मेली निकली भैरो घाट वाली देखी भाली

मि०—मै समझती हूं कि घरकी मालिका के बग़ैर आपके घर का इन्तजाम बहुत ख़राब हो रहा है, नौकरो का दिमाग़ भी नहीं मिलता है ख़ैर आहिस्ता आहिस्ता सबका रस्ता किये देती हूं

वि०—यह काम तो सबसे पहले करना होगा

मि०—मै भोला को जरा कपडे खोलने के लिये कहदूं (गई)

वि०—देख कस्तूरी ! इस वक्त तो मै दर गुजर कर गया अगर तू फिर भी इसी तरह मुं· फुलायगी तो याद रखना सज़ा पायगी

क०—सज़ा पाऊंगी ? क्यो ? ख़ता ? तक़सीर ? अपराध ?

वि०—क्या यह थोड़ा अपराध है कि तूने मिसरी की तरफ़ मुंः भी नही किया भला बुढ़ापे मे शर्म काहेकी

क०—बूढ़ा वह जो हमको बूढ़ा कहे और शर्म उन निगोडियोको आयगी जो कई कई ख़सम करती फिरती है। रही इधर

देखने की बात सो इधर क्या देखनो एक तु थे बरसों के देखे भाले एक मिसरी थो बरसों की देखी भाली

वि०—हयँ ! देखी भाली ! क्या तू इसे जानती है

क०—इसको जानती हूं इसकी जड बुन्याद को जानती हू कल की बात है कि इसका घरवाला चीता चौहान चने सलौने चटपटे की फेरी फिरता था

वि०—थू तेरे जनम मे। चीता चौहान चने सलौने चटपटे की फेरी फिरता था। आज कही अफ़यून तो ज़ियादा नहीं खा गई इसका घरवाला केसरी कलाल था या चीता चौहान?

क०—चीता चौहान २ भगवान जाने बिचारे की क्या गति हुई होगी

वि०—गति क्या होती स्वर्ग या नरक

क०—क्या मरा हुआ समझ कर ही उसकी घरवाली को उड़ा लाये हो?

वि०—वह मरा नहीं तो क्या हुआ?

क०—गुम हो गया

वि०—तुझे क्या ख़बर?

क०—भैरो घाट पर यह महीनो मेरी पड़ोसन रह चुकी है

वि०—मिसरी तो सोगन्द खाकर कहती है कि पहला पति केसरी कलाल था

क०—ऐसी संगदिल औरतो की सौगन्द का क्या ऐतबार

वि०—संगदिल?

क०— हा जिस दिन इसका घर वाला ग़ाइब हो गया सब मोहल्ले वालो ने अफ़सोस किया पर यह ऐसी धोया दीदा निकली कि आंख तक न पसीजी

वि०— थू तेरे जनम मे जिसका पति गुम हो जाय उस की आंखो मे आंसू न आय यह बात सुन कर तो मेरा जी घबरा गया

क०— अभी तो घबरायगा, मुझे सताना आगे आयगा

वि०— जा ज़रा मृदंगनाथ के हाथ कोरे घडे का जल भेज दे (कस्तूरी गई) ऐसी कठोर भगवान बचाय यह तो इस खत की बात सही मालूम होती है —

न ख़रीदो यह जिन्स टोटे की
यह है गोली जमाल गोटे की

केसरी कलाल, या चीता चौहान, कही दोनो को तो ठिकाने नही लगा चुकी—

जो पतीमार ही यह नारी है
तो ज़रूर अबके मेरी वारी है
अब पड़ी मार जम के सोटे की
यह है गोली जमाल गोटे की

[मृदंगनाथ सर पर लोटा रक्खे दाखिल होता है]

मृ०— (गाता हुआ) पनियां भरन कैसे जाऊं मोरी आलीरी। ठाड़े गैल बिच छैल सुंदरवा

वि०— देखो भई मृदंगनाथ अब घर की मालिकनी आ गई है

इनका मिज़ाज......

मृ०— सरकार आप पहचान कराने की तकलीफ न करें इन्हें तो मैं खूब जानता हूं बड़ी अच्छी तबीअत पाई है मैं एक एक ठुमरी सुना कर खड़ियों भुट्टे इनसे ले जाया करता था

वि०—खड़ियों भुट्टे ?

मृ०— जीहां इनका घर वाला भुट्टे बेचा करता था ना

वि०— भुट्टे बेचा करता था ? थू तेरे जनम मे । उसका नाम क्या था ?

मृ०— भल्लूक भुट्टे वाला· ·

वि०— मार डाला, अब ज़रा हिम्मत का काम है। इधर आ मृदंग इधर आ मुझे जांचने दे कि तू होश मे है या बेहोश

मृ०— लीजिये जॉच लीजिये यू नही हाथ से ताल दीजिये

(परन पड़ता है, समपर आ कहकर)

देखा बेहोश होता तो सम पर आता ?

वि०— अरे यह उल्लूक भुट्टे वाला

मृ०— उल्लूक नही भल्लूक भुट्टे वाला

वि०— जो हो भला यह मरा कब ?

मृ०— मरा नही विचारा गुम हो गया

वि०— यह भी गुम हो गया ? हाय हाय !!!

गुम ही होना जो शर्ते यारी है
तो ज़ुरूर अबके मेरी बारी है

केसरी कलाल संख्या एक, चीता चौहान संख्या दो, भल्लूक भुट्टे वाला संख्या तीन, और विद्याधर संख्या चार, ये तीसरे से हो गया चौथे मे शुमार

मृ०— यह जल का लोटा लीजिये

वि०— सुध रहे खाक जल के लोटे की
यह है गोली जमाल गोटे की

ले जा भई ले जा मुझे नही चाहिये अब तो मैं आंसुवो ही से मुंह धोउंगा, अपनी अर्थी पर आप ही रोऊंगा

[जुगल आता है, मृदग जाता है]

जु०— रोने की जुरूरत नहीं है मै ने समझा लिया है

वि०— किसे समझा लिया है

जु०— बस चुप हो जाओ नही तो जेलखाने चले जाओगे

वि०— जेलखाने चले जाओगे ? क्यो चला जाऊंगा जेलखाने क्या दूसरी औरत करना गुनाह है

जु०— औरत की बात नही यह तो सरकारी जुर्म है मैं ने दोनो शीशियां देखी है तुमने जो अपनी खांसी की दवा पर काले नाग का मार्का लगाया है राजवैद्य कहता है कि मेरा व्यापार चिह्न चुराया है

वि०— चुराया है, थू तेरे जनम मे अब वह क्या करना चाहता है

जु०— वह कहता है कि नियम चारसौ बयासी (४८२) के अनुसार निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे का दावा करूंगा

वि०— निन्यानवे हज़ार नौ सौ निन्यानवे ! ओ तेरा सत्यानास जाय एक क्यों कम रक्खा

जु०— पूरे लाख का दावा तो बड़े सम्राट के दरबार में जाता और यह यहीं मण्डल न्यायालय में दायर हो सकेगा

वि० – तो ९९९९९ रुपये तो मेरी तमाम मिलकियत बिकने पर भी वसूल न होंगे। मिलकियत तो क्या मैं भी बिक जाऊं, मिसरी भी बिक जाय, कस्तूरी भी बिक जाय, मृदंगनाथ भी और तू भी बिक जाय

जुगल - भोला भूल रह गया

वि०— उसका नाम न ले नहीं तो सबका सौदा बिगड़ जायगा

जु० घबराओ नहीं मैंने राजवैद्य को समझा लिया है अब तो केवल

वि० चुप होजा चुप होजा यार चुप होजा

जु०— जी अबतो केवल पांच

वि० -(मुंह बन्द करके) कुण्डा लगाजा इस ज़िक्र को खाजा वह आ रही है। बस भाई साहब इतने ही में शान्त होगई हम भी घरको चले आये।

(मिसरी आती है)

मि०—हमने आपका औषधालय देखा ओफ़्फ़ो कितनी ही तरह का तो ज़हर रक्खा है .

वि०—बचा मेरे भगवान् आते ही ज़हर की शीशी तलाश की

मि०—ओ हो पण्डित जी महाराज आप यहां कहां ?

जु०—आच्छा बाईजी है, लो भई यह तो बड़ी खुशी की बात है इनसे तो मेरी पुरानी मुलाकात है

वि०—पुरानी मुलाक़ात है थू तेरे जनम में

मि०—पण्डितजी बहुत दिनों में दर्शन हुए मैं आपके वास्ते पान बनाकर लाती हूं

(मिसरी गई)

वि०—विपन्ना रे त्रिपता, औरत है या काम देव की जान, जिसको देखो उसीसे पहचान। भइया जुगल! तू भी कुछ इसकी तारीफ़ उगल, जिन दिनों तू इससे मिलता था उन दिनों इसका पति केसरी कलाल था या चोता चौहान या भल्लूक भुट्टे वाला?

जु०—क्यों किसो सुशीला औरत को कलंक लगाते हो, क्यों बिचारी गरीब बाई को ग़ैरों की औरत बनाते हो

वि०—तो क्या मैं ने अपनी तरफ़ से यह पतियों की पिटारी खोली है?

जु०—बेशक, इसका पति तो गेंडा तंबोली है

वि०—गेंडा तंबोली? थू तेरे जनममें।

अब नहीं खैर दिलको पोटे की
यह है गोली जमाल गोटे की

वि०—यार जुगले। ये तो क़िस्मत ने खून पति पर पति उगले, भला तेरे पति का अंजाम क्या हुवा?

जु—मेरे पति का?

वि०—नही यार तेरे बताए हुए पति का।

जु०—चौधरी साहब ऐसा भला आदमी था परन्तु बेचारा यकायक गुम हो गया ?

वि०—गुम होगया ? यह भी गुम हो गया।

गुम ही होने की रस्म जारी है
तो ज़रूर अब के मेरी बारी है

जु०—पड़ोसी शुब्हा करते थे कि मिसरी ने उसे ज़हर दिया है। मगर इस औरत की नेक दिली देख कर मै इस बात पर विश्वास नही करता।

वि०—मगर मै तो विश्वास करता हूं। क्यो कि औषधालय में इस की नज़र पड़ी भी तो ज़हर की शीशियो पर पड़ी, यह दाव खा न होता तो हरगिज़ न लगती पतियो की झड़ी।

(मिसरी और भोला आते है)

मि०—(भोलासे) तू मेरे साथ चलना धर्मशाला से वह सन्दूक ले आएंगे।

भो०—अम तो चलेगा पर यह धर्मशाला मे क्यो नही आई

मि०—चुप रह

वि०—हॉ चुप रह

कुछ टपकती है घात आंखो से
मै ने सुनली है बात आंखो से

मि०—यह तांबूल··· · ·

[जुगल पान लेकर खाता है]

-इस में ज़हर न डाल लाई हो, (छुपा कर फेंक देता है)
-वहाँ मृदङ्गनाथ है?
-मौजूद है।
-ज़रा मैं मृदंगनाथ को अपने घर भेजता हूं।

[जुगल गया]

-ए मैंनका मैं दो घड़ीके लिये बाहर जानेकी आज्ञा चाहतीहूं
-क्यो?
-(खुद) बता दूंगी तो दुशालेकी भेट का मज़ा जाता रहेगा, एक ज़रूरी काम हैं
-ऐसा भी क्या ज़रूरी जिस के कहने मे संकोच है।
-वह काम ऐसा ही है कि गुप चुप होनेहीमे उसका मज़ा है
-गुप चुप होने ही मे मजा है थू तेरे जनम मे। तो प्यारी! पति से क्या परदा?
-मै अच्छी तरह जानती हू कि पत्नी को पति से कोई बात छुपानी नहीं चाहिये मगर मै क्या करूं वह बात ही ऐसी है कि आप से नहीं कह सकती।
-तो थू तेरे जनम मे। अकेली जाती हो या किसीके साथ?
-भोला साथ जारहा है। आ भोले आ

[दोनों गये]

-बस जांच होली खरे की खोटे को
यह है गोली जमालगोटे की
भागवान के भरतार भी तो सब भयंकर दरिन्दे ही हैं कि

नाम सुन कर आदमी का कलेजा निकल पड़े। चौहान चीता। भुट्टेवाला भल्लूक। तंबोली गेंडा। और भी होगा तो कोई ऐसा ही एँडा बेंडा चीर फाड़ का केंडा।

(गोपाल गुप्त आया)

गो०—वैद्य जी मर गये—हमतो

वि०—सच मुच वैद्य जी तो जीते ही जी मर चुके। भाई गोपाल! गुप्त तुम्हारा क्या हाल है?

गो०—हाल क्या है खेती बाड़ी सब छूट गई अब तो भोजनों का भी काल है।

वि०—क्या तुमने भी पुनर्विवाह किया है?

गो०—आज कल विवाह तो पैसों के साथ होते हैं और हम ठैरे ख़ाली हाथ, फिर विवाह होता किस के साथ, बूढ़े हो गये और पहला विवाह भी नही हुआ तो फिर पुनर्विवाह किसका।

वि०—तो न करना भैया भूल कर भी न करना, अब तुम बड़े अच्छे हो बड़े मज़े में हो।

गो०—मज़े में क्या ख़ाक हैं घुटनों से चला नहीं जाता, मज़दूरी बसकी नहीं, न किसीके बाप, न किसीके भरतार, घर बार सब मिसमार।

(दोहा स्वरों में)—

वृद्ध भये गोपाल जी उजड गयो सब खेत
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देत

इस पर आंखें दुखती हैं इनकी पीड़ामें कुछ नहीं सूझता

वि०—कुछ नही सूझता यही अच्छो बात है न किसी शक्कर की डली को देखोगे न ज़बान लपलपायगी।

गो०—कुछ दवा दीजिये कि चैन पड़े।

वि०—चैन क्या ख़ाक पड़े वह तो भोला भूत के साथ चलदी।

गो०—वह कौन?

वि०—नई चौधराइन।

गो०—कौन मिसरी बाई?

वि०—तुमने नाम कैसे जान लिया?

गो०—वह मुझे एक पहलवान के साथ यहीं दर्वाज़े पर मिली थी

वि०— क्या तुम भी उसे पहचानते हो?

गो०— खूब अच्छी तरह, जब यह अपने घरवाले के लिये रोटियां लेकर

वि०— ठैरो ठैरो ज़रा ठैरो भला इसका घरवाला कौन था?

गो०— शेरसिंह घसियारा

वि०— शेरसिंह घसियारा। हिरन और गीदड़ हैं जिसका चारा बस अब नहीं रहा जीने का सहारा और जो बे हयाई से जीते भी रहे तो कर्मों को रोते रहेंगे रो रो कर आंख खोते रहेंगे

खाल गल जायगी पपोटे की
यह है गोली जमालगोटे की

गोपाल गुप्त यार गुस्सा तो ऐसा आता है कि गर्दन ही

मरोड़ दूं कमबख्त की आंखें फोड़ दूं

(गोपाल की गर्दन पकड़ लेता है)

गोपाल— किसकी किसकी ?

वि०— उसी मिसरी की

गो०— तो ख़तावार चेरी और गर्दन तोड़ डाली मेरी

वि०— हाँ यार बात तो ठीक है। तो जब तक वह आये मैं अपना गुस्सा अमानत रखता हूं

गो०— आज क्या बावले कुत्ते ने काटा है। यह ऐसी उठी हुई हड़क में दवा डालेंगे तो आंखें ही फोड़ डालेंगे

न सूझेंगी इन्हें अमृत की बूंदें, ज़हर की किरचें
कहां ये भर न दें आँखोंमें अंजनकी जगह मिरचें

वि०— तो भइया गोपाल गुप्त तुम इसे क्योंकर जानते हो ?

गो०— मैं ने कहा ना जब मैं रामनगर मे खेती करता था तो इसका घर वाला शेरसिंह घसियारा हमारे खेत के मेंड़ों पर घास खोदा करता था

वि०— थू तेरे जनम मे

गो०—तो यह रोज़मर्रा उसको रोटियां लेकर आया करती थी कंगाली मे भी ऐसी उदार थी कि बचे खुचे टुकड़े हमारे बैलों को दे जाया करती थी

वि०— तो इसका पति किस तरह मर गया ?

गो०— मर कहां गया

०— तो ! ! !

गो०— हमें तो बड़ा रंज हुआ विचारा यकायक गुम हो गया

वि०— गुम हो गया, ओ यह भी गुम हो गया अरे तुम्हारा सत्यानास जाय

मेरे होश उल्लू की दुम हो गये
कि सब एक मत होके गुम हो गये

गो०— वैद्यजी ! और कौन गुम हो गया

वि०— भइया क्या बताऊं केसरी कलाल संख्या १ । चीता चौहान संख्या २ । भल्लूक भट्ट वाला संख्या ३ । गैंडा तम्बोली संख्या ४ । और तेरे पति का क्या नाम ? हां वाघसिंह नहीं नहीं शार्दूलसिंह अरे नहीं नहीं हां शेरसिंह घसियारा संख्या ५ । और विद्याधर वैद्य संख्या ६ ।

गो०— यह काहेकी गिनती गिन रहे हो

वि०— इस खत की (खत दिखाना)

नहीं गिलसी बड़े की छोटे की
यह है गोली जमालगोटे की

गो०— यह तो कोई गूढ़ पहेली है

वि०— अच्छी छत पर चढ़े यह तो छ सीढ़ी नीचे आ पड़े और वहीं पड़े रहे यह भी तो उम्मीद नहीं; पति हुए हैं तो गुम होना भी कुछ बईद नहीं

गुम ही करने की यह पिटारी है
तो ज़रूर अबके मेरी बारी है

वि०— आओ तुम्हारी आंखों में दवा डाल कर जोग

कोई पति न होगा उस जंगल में चला जाऊंगा और इस मिसरी पर मक्खियां भिनकाऊंगा

गो०— क्या मिसरी बाई से नाराज़ हुए हो

[विद्याधर गुस्से होते चल देते हैं]

अंक १ प्रवेश ८

अत्र्याश्रम

[आश्रम में काम देव, ऋषि अत्रि के रूप में और लक्ष्मी, सावित्री पार्वती आते हैं]

लक्ष्मी— पार्वती जी ! काम देव अभी नही पधारे

पार्वती— अपने वचनानुसार आते ही होंगे

सावित्री— वो आ गये (काम देव का आना)

ल०— आओ मनोरथ मूर्ति ! आओ

सा०— आशा के चित्र ! आओ

पा०— अभिलाषा की प्रतिमा ! आओ

ल०— मदन महोदय ! आज तुम्हारा बल देखना है

काम०— पंच बाण के ये पांच बाण ऐसे चुस्त हैं कि ज़माना जानता है हर जानदार इनका लोहा मानता है।

ये किसी दिन ख़ता नहीं करते
इनके मारे बचा नहीं करते

गाना

कहीं भी कोई ऐसा बलवान नही
मदन जिसके मारे बान फिरे न मारा मारा- कोई०
ठीक सही सब नोंक झोंक,
पत्थर में नही लगती है जोंक
बिलके जगत चाहे बिलके,
पड़ा बिलके जगत चाहे बिलके
मज़ा पाओगे सती से ज़रा मिलके
फतह जलचर पर पाई है, फतह थलचर पर पाई है
हमें डर है लेकिन हारोगे यहीं- कहीं भी कोई०

सा०— तो आज देखी जायगी इनकी शक्ति

का०— यह पहला सम्मोहन १

ल०— ओ हो मोह लेना इसका काम है

का०— यह दूसरा उन्मादन २

पा०— प्रेमियो को दीवान बनाने वाला

का०— यह तीसरा शोषण ३

सा०— रक्त मास को सुखा कर पिञ्जर कर देने वाला

का०— यह चौथा तापन ४

ल०— विरह की अग्नि से जलाने वाला

का०— यह पांचवां स्तम्भन ५

पा०— ओहो इसीसे प्रेमियो को चुप लग जाती है आना जाना इत्यादि गति नही भाती है

ल०— यह सब ठीक है परन्तु आज सती अनसूया का सामना है इसका सतीत्व हरना मानो बांझके पुत्र का विवाह करना है।

का०— आप देखती रहे

आँख मिलने दो कि होगी उसकी बरबादी अभी
बांझ के औलाद और ओलाद की शादी अभी

पा०— चढ़ जाय मंढे यूंहि यह वो बेल नही है
यह खेल भी वो खेल है जो खेल नही है

का०— आप चिन्ता न करें

कमाको यह काम कुछ मुशकिल नहीं, आसान है
नारियों का अंग तो मेरा निवास स्थान है
कामिनी के अङ्ग मे देखी जहां मेरी फबन
हाथ बाँधे यूं चला आता है बस पुरुषों का मन

पा०— बड़े आश्चर्य की बात है

व्याकरण की मानिये तो है नपुंसक लिङ्ग मन
फिर भी यह करता है सुन्दर अंगनाओ में रमन

का०— हो पुरुष या कामिनी हो, जाय जी चाहे कही
मन नपुंसक है इसी से रोक टोक इसको नही

ल०— उसको जाने दो तुम यहां सँभालना ज़रा सोच समझकर हाथ डालना।

हमने माना एक जादू है रती के वर की आँख
आंख इसकी भी न हो जाये कही शंकर की आँख

काम०— क्या मजाल है

योगिनी भी हो कोई जो कर चुकी हो सर्व त्याग
या कोई बुढ़िया हो जिस मे बुझ गई हो मेरी आग
अपनी शक्ति से जहां मैने कहा उठ जाग जाग
सरसराने लगता है फ़ौरन कुचो का अग्र भाग
अङ्ग के हिस्से फड़कते है मेरे संकेत पर
ऐसे कामातुर तड़पते है कि मछली रेत पर

सा०— तो आरम्भ रहे।

(कामदेव बाण मार मार कर वींग बदलता है और पुष्पवाटिका बना देता है अप्सरा आके खड़ी हो जाती हैं)

पा०— जाल तो बिछ गया अब उस चंचल चिड़िया को फसाने के लिये आप अत्रि ऋषि का रूप बनजाइये

का०— यह लीलिये (स्टेज पर खड़े खडे बदल जाता है)

तीनों— आ हा हा हा

ल०— है वही डील डौल शान वही
वही आंखे है नाक कान वही

पा०— रूप मे रंग मे नहीं कुछ फ़र्क़
आगये जैसे के गुमान वही

का०— (अप्सराओं से) तुम अपना काम करो मैं समय का इन्तज़ार करता हूं (जाना)

[अप्सराओं का नाच]

गाना

आयो बसन्त मिलके मंगल गाएं
फूलों की माला बनाएं। आयो०
फूल रहे तरु डाल डाल, फुलवारी
सुखकारी, दुखहारी
मुकुल मनोहर सुमन लाल छव न्यारी
बलिहारी, बलिहारी
क्या सुरङ्ग हैं कुरङ्ग फिरत विपन बनचारी
बोले इत कोयल कारी, सुनलो सुन्दर ध्वनि प्यारी
आओ मिल के सब नारी। हां मंगल गाएं। आयो०

(अनसूया का आना)

अन०— हंय यह आज है क्या !

अंगनाओ के लगे हैं ठट के ठट
झोपड़ी की हो गई काया पलट

ल०— देवी क्षमा करना हम तुम्हारी आज्ञा के बगैर ही तुम्हारे आश्रम में रम रही हैं

अन०— इस समय मेरा आश्रम मेरा नहीं तुम्हारा है क्योंकि तुमने इसे पुष्प और लताओं से श्रृङ्गारा है

थे यहां घास फूस के तिनके
रूप ही कुछ बदल गये इनके
पुष्प ऐसे सजा दिये दम में
मानो ये वृक्ष हैं बहुत दिनके

बालाओ ! देवाङ्गनाओं के समान तेजवाली तुम किस नगर की नागरी हो ?

सा०— हम इसी शहर में रहती हैं, यहाँ वसन्तोत्सव मनाने आई हैं

पा०— तुम ऋषि पत्नी गृहस्थियों के लिये पूजा का स्थान हो इसलिये आपकी सेवा में ये भेट लाई हैं इसे स्वीकार कीजिये

अन०— बहनो तुम्हारी श्रद्धा तुम्हारा कल्याण करे बस इसे उठालो

सा०— क्यों

अनु०— बस तुमने दिया और हमने लिया

पा०— तो इसमे से कुछ फलाहार पाइये और अपने पवित्र अंग पर धारण कर के इन वस्त्रों की प्रतिष्ठा बढ़ाइये

अनु०— कुलाङ्गनाओ मेरे पति देव बद्रिकाश्रम गये हुए हैं उनकी आज्ञा के बग़ैर मैं कोई वस्तु अङ्गीकार नहीं कर सकती

ल०—तो यह कोई ऐसी बड़ी वस्तु भी तो नही है

अनु०—कुछ क्यो न हो पति की अनुपस्थितिमें तो गृहस्थस्त्रियोंके लिये भी हर तरहका शृङ्गार हर तरहका अलङ्कार वर्जित है फिर विरक्ताओ के लिये तो इन पदार्थों का ग्रहण करना अत्यन्त अनुचित है

किसी काम से गये हों दूर देश भर्तार

ऐसे में श्रृङ्गार है मुर्दे का श्रृङ्गार

पा०— वाह वाह यह अच्छी पतिभक्ति है। चलो तो पति से पूछ कर, बैठो तो पति से पूछ कर, सोओ तो पति से पूछ कर, जागो तो पति से पूछ कर, आना, जाना, नहाना, खाना, जो कुछ करो पति से पूछ कर

यह तो बन्धन रहा ही ठैरा पति हर बात मे
हे सखी अच्छी नहीं होती अति हर बात में

अन०— नहीं बालाओ शास्त्रकार कहते हैं

सर्व तीर्थ मयो भर्ता सर्व पुण्य मयः पतिः

ल०— तो ऐसा भी क्या, यह तो शास्त्रकारों का पक्षपात है सब उनकी मन मानी बात है

पा०— यूं भी स्मृतिकार सब पुरुष थे जो कुछ बनाया पुरुषों के लाभ मे बनाया यदि कोई स्त्री स्मृति बनाती तो पुरुषों की तरह स्त्रियों की बन आती

गाना

मर्दों के हाथ बिक गई नौजवानी में
बह गई ज़िन्दगानी उसकी पानी में

रहना सहना चलना फिरना सब बालम का मन माना
धिक् जीवन नार सुहागन का घर है या बन्दी खाना

जो रही रात दिन इस खैंचातानी में
बह गई ज़िन्दगानी उसकी पानी में

क्या खूब न्याय मर्दों का है अपनी करली आज़ादी
हमरे नैनो पर सैनो पर बैनों पर मुहर लगादी
जो लाभ समझती रही ऐसी हानी मे
बह गई ज़िन्दगानी उसकी पानी मे
उनको बाहर तुम को अन्दर सप है अधिकार उपाधी
समपत्ति हो या आपत्ति दोनो पर आधी आधी
विश्वास किया जिसने न बेइबानी मे
बह गई ज़िन्दगानी उसकी पानी मे
ब्याहे तो दोनो गये भार सेवा का हम पर डाला
इन महास्वार्थी मर्दो से भगवान न डाले पाला
घुलती है पड़ी जो इनकी निगरानी मे
बह गई ज़िन्दगानी उसकी पानी मे
धन कमा कमा कर मर्द थके आभूषण पहने बाला
तुम जिसे स्वार्थी कहती हो है रक्षा करने वाला
जो स्वतंत्र हो बैठी असावधानी मे
बह गई ज़िन्दगानी उसकी पानी मे

सा०—कुछ नही तो इतना ही सही

[कहकर मोतियों का हार गले में डालती है]

अन०—(हार निकाल कर) इस समय तो यह भी मेरे कामका नहीं

तुम को शोभा देत है रंग किलोल बिहार
मुझे हार मे हार है तुम को हार बहार

पा०— गले पड़ा यह आपके हुआ उचित व्यवहार
आप विमुक्ताहार हैं यह है मुक्ता हार

अन०— न मैं इन्कार करती जो यहां मेरे पती होते
इसे स्वीकार करती जो यहां मेरे पती होते

[काम का अत्रि रूप में प्रकट होना]

काम— याद जिसकी है तुम्हे, वो हे सती मौजूद है
तुम पतीव्रता हो तो प्यारा पती मौजूद है

अन०— ओ हो स्वामी त्रिकाल दर्शी मेरे अन्तर्भाव को जानकर खूब दर्शन दिये

काम— मेरा ध्यान समक्ष और परोक्ष में तुझे समान रहता है यह देख कर मैं तुझ पर बहुत प्रसन्न हूं और यह मेरे लिये बड़े गौरव की बात है कि तुझे पतिव्रत धर्म का व्यवहार आता है। तेरी पवित्र चेष्टाओं पर मुझे प्यार आता है

(लिपटना चाहता है)

अन०— मैं मंगलाचार की सामग्री लाती हूं

काम—ठैरो उसकी क्या ज़रूरत है तुम तो सर्वाङ्ग मंगल रूप हो-
कमल के दल हैं गालों की सफ़ेदी और लालों में
मनोहर नासिका दीपक है कर पल्लव हैं डाली में
कुचा है जल का लोटा, नारियल, सोने की थाली में
अधर रोली, दशन चावल, चिबुक चन्दन है प्याली में
जहां तुम हो वहाँ बे फ़ायदा है ध्यान मगल का
तुम्हारे अग मे है सरबसर सामान मंगल का

[लिपटना चाहता है]

अन०—(स्वयं) इस मंगल मे तो अमंगल दिखाई देता है (वचकर) स्वामी ! आपके चरण धोने केलिये जल ले आऊं ?

काम— ठैरो

अन—(आश्चर्य पूर्वक) ठैरो । यह ठैरो तोआज नई मालूम होती है

काम— मुद्दत के बाद मिली हो तुम पहले आलिंगन करने दो
जिस जिह्वाने टेरा मुझको अब उसका चुम्बन करनेदो

[अलग गई]

अन०—(खुद) आज तो स्वामी का वर्ताव विचित्र है भगवान जाने यह चेष्टा पवित्र है या अपवित्र है

काम—(खुद) यह तो कुछ राह पर नहीं आती
दाल गलती नजर नहीं आती

अन०— महाराज मैं अपना पहला कर्तव्य पालन करने के लिये जल लाती हूं

काम— क्या शाप देगी। ठैरो

अन०—(खुद) ठैरो ठैरो में इनकी जान नहीं
मेरे स्वामी की यह ज़बान नहीं

[कमडल लेने जाती है]

बात का तौर ही निराला है
कुछ न कुछ दाल में यह काला है

काम—(खुद) आ गई क्या उमंग में सुस्ती
इसमें मेरी कला नहीं घुसती

पड़ी गुरु-नार पर जब चन्द्रमा की एक बार आंखें
मेरे ही मंत्र से अन्धी हुई वो होशयार आंखें
बनाई हैं बदन पर इन्द्र के मैं ने हज़ार आँखें
अहिल्या से सिवा मेरे कराई किसने चार आंखें
न काम आये यहा कुछ कामके लेकिन वो हथखंडे
सती ने कर दिये मेरी कलाओ के दिये ठंडे

[अनसूया कमंडल लेकर आती है]

अन०—लाइये पाउं धोने दीजिये (काम टहलता हुआ चलदेता है)

काम—(खुद) ख़ाक हो जायेगो कोशिश ख़ाक जो धुल जायगी
एक चुल्लू जल मे बस कलई मेरी खुल जायगी
जल न जाऊं जल से यह संदेह यह संताप है
उस तरफ़ तो पुण्य है और इस तरफ़ यह पाप है

प्रिये मुझे मालूम है कि जिस समय पति बाहर से आये तो स्त्री का धर्म है कि उसके चरण धोकर आसन आदिक से सम्मान करे परन्तु यह क्रिया पति को प्रसन्न करने के लिये है। इस समय मेरी प्रसन्नता इसी में है

जो कहूं मै उसे न टाले तू
मेरी इच्छा के हो हवाले तू

अन०—स्वामिन् ! मैं तो विवाहके दिनसे आपके हवाले हो चुकी हूं। परन्तु

काम—परन्तु ?

अन०— नीकी भी फीकी लगे बिन अवसर की बात
पति पूजन के समय पर नहिं श्रृङ्गार सुहात

काम— नहीं प्रिये !
फीकी भी नीकी लगे जो हो जी की बात
पीकी चाही स्वर्ग है काम-केलि दिन रात

अन०— स्वामी ! आप मनोविकार का दबाने वाले, इन्द्रियो पर विजय पाने वाले योगिराज होकर यह कैसी ...

काम— योग भी करलेंगे, आयेगी घड़ी जब योग की
आ गले लग जा कि इच्छा है प्रबल संभोग की

अन०—ठैरो (खुद) मैं अपना सन्देह मिटालूं (ध्यान में देखती है)

काम—(खुद) हिम्मत नही पडती किस तरह हाथ डालूं
चल गया सिक्का मेरा अब तक तो झूटी लाग पर
उड़ न जाये अब मुलम्मा इसके तप की आग पर
शक्तियां हो गई मेरी बेकार
आज चलता नही कोई हथियार

अन०— कोयल जैसा शाम है शाम काक चालाक
बन बसन्त ऋतु देखलूं कोयल है या काक
[ध्यान में काम देव को देखती है]

हां यह बात है। पति देव नही यह काम देव की बात है। ओ पापी काम देव ! तू किस गर्व मे गर्वाया है। क्या समझ कर मेरे आश्रम को अपवित्र करने आया है। क्या पतिव्रता स्त्रियों के अमोघ प्रभाव से तु बेख़बर है ? क्या सतियों के

स्वभाव से तू बेख़बर है ?

अरे नापाक क़िस्सा दम मे तेरा पाक कर देती
जो तेरा अङ्ग कुछ होता जला कर ख़ाक कर देती

काम—हैं ! है !! आर्ये परम पूज्य पतिके आगे ऐसी

(तीनो देवियां छुप छुप कर देखती हैं)

अन०—चुप पापी इस वक्त मै तुझे अच्छी तरह पहचानती हूं और जिनके सिखाने पढ़ाने से तू यहां आया है उनको भी जानती हूं

गाना

जा चल निकल जा चिंडाल रे बेनाल परम कराल । जा०
शिर त्रिशूल से निर्मूल बिलकुल धूल होगा हाल । जा०
आकुल अधम अङ्ग अनङ्ग
हमसे यह रंगभवन भुजंग
पापी पाप पालक धर्म घालक अब तू खुद को सँभाल । जा०

काम—माता क्षमा करो क्षमा करो मुझसे बड़ा अपराध हुआ

अन०— पतिव्रता की आखों मे है तीजा नेत्र शंकर का
किया किस बल पे तूने सामना ऐसे भयंकर का

काम०—क्षमा माता क्षमा, मैं ने आपकी महिमा को नहीं जाना था, एक साधारण अबला माना था

मैं समझता था कि तनहाई है अबला नार है
फ़तह पाना इस पे तनहाई मे क्या दुश्वार है

अन०—तू मुझे अकेली जानकर इन दुर्वासनाओं को साथ लेकर यहाँ आया था मुझे निस्सहाय पाकर मेरे रूप पर ललचाया था ? अरे मूढ़ ! मैं तेरी रक्षा के भरोसे पर इस निर्जन बन में नहीं रहती हूं स्वामी ने तेरे भरोसे पर मुझे यहां तनहा नहीं छोड़ा है

काम— माता मैं ने ऐसा ही अपराध किया है अब जो कुछ कहो वह थोड़ा है

अन०—क्या मेरे स्वामी को मुझसे दूर जानता है अरे पापात्मन् !

खुल रहा है उनपे पाजी तेरा पाजी पन तमाम
देखते हैं योग दृष्टि से तेरे लच्छन तमाम
उनकी गागर में है, सागर वस्त्र में हैं धन तमाम
उनको है हस्तामलक पर्वत तमाम और बन तमाम
तेरी क्या हस्ती है कोई चीज़ सृष्टी में नहीं
जो मेरे स्वामी गहन गामी की दृष्टी में नहीं

तेरी आखें तो अन्धी हैं जो बुरा भला नहीं देख सकतीं ले मेरी आँखों की ज्योति से देख कि बद्रीनाथ में स्वामी की कुटी पर क्या हो रहा है

(वहाँ का दिखाव यहाँ नजर आना)
काम देव देख कर डरता और भागता है जिस तरफ जाता है उसी तरफ शंकर की मूर्ति त्रिशूल लिये सामने आजाती है)

अन०—जायगा कहां पिशाच

कोट यह त्रिशूल का है भागना दुशवार है
तुमने ऋषियो का गुस्सा रुद्र का अवतार है

काम—ओ ब्रह्मांड का नाश करने वाले प्रचण्ड मूर्ति कैलास पति ! ओ कैसा भयानक दिखाव, बचाओ माता मुझे बचाओ

[चरणों में गिरता है]

अन०— दूर हो दुष्ट दुरात्मन् ! मुझे कमण्डल संभालने दे

[तीनों देवियाँ निकल आती हैं]

तीनो—देवी हमे शाप न देना

अन०—तुम देवांगना हो तुम्हारे प्रति हमारा भक्ति भाव है तुम्हे शाप देकर मेरे हाथ क्या आयगा। तुम्हारे मन का मैल तुम्हे नीचा दिखा रहा हे और रहेगा तो दिखायगा

ल०—तो कमंडल हाथ से रख दीजिये

अन०—कमंडल से न डरो। कदर्प दर्प दलन करने के लिये स्वामी के शरीर से ज्वाला इस ज़ोर से निकली है कि उनकी कुटी को जला रही है। उधर देखो वह झोपडी जलती नज़र आ रही है स्वामी का मन यहा है इसलिये उधर शौले बढ़ रहे हे मै इन्हे बुझाती हू पानी वहां पहुचाती हूं.—

कमडल से जल छोड़ती है वहां जलती झोंपड़ी पर मूसलाधार पानी पड़ता है एक झालर उतरती है जिसमे लिखा है "धर्मो जयति नाधर्म." ल० सा० पा० आश्चर्य से देख रही हैं कामदेव अनसूया के कदमों में पड़ा है

टेबला

अंक २ दृश्य १

जंगल

गत पर ड्राप उठता है। चन्द चोर जिह्वा और कोतवाल दबे पाउओं आते हैं।

कोतवाल—चलो इस आती हुई मुसीबत को टाल दें। तवेले की बला बन्दर के सर डाल द।

१ चोर—क्यो डाल दे हम तो अपनी महनत बरबाद नही करते

२ ” —तो सूली पर लटकाए जाओगे

३ ” —वो तो इस से भी कडी झेलनी पडेगी

कोत०—इस खेप पर तो ख़ाक डालो वर्न. तुम भी मारे जाओगे और मेरी कोतवाली भी छिन जायगी। जाओ उस झोपड़ी के पास डाल आओ

४ चोर—कोतवाल साहब! इस जुगल ज्योतिषी का कांटा निकालना चाहिये नही तो यह हमेशा खटकता रहेगा

कोत०—ज़रूर अपनी चलती हुई गाड़ीका पहिया इस रोड़े से अटकता रहेगा

४ ” —तो कल इसी को साफ़ करदो

जिह्वा—नही इस की युक्ति मै करूंगी

मुंह भी काला करदूं इसका, और कालक लगे न हाथो में।
इस तरह जुगल का खून करूं, धब्बातक लगे न हाथों में।।

कोत०—वो किस तरह ?

जिह्वा—रानी के कान भरूंगो कि जुगल ज्योतिषो जुरूर चारोंमे शरीक है

सब—ठीक है ठीक है

जिह्वा—नही तो वो ऐसा कहाँ का भगवान् का भइया है जो चोरी गया हुवा माल वता देता है, वस चोर है तो चोरी का पता देता है

१ चोर—बस मज़ा रहेगा

२ ”— वो मारा जायगा टोली हमारी भय से छूटेगी

३ ”— मरेगा चोट खाकर सांप लाठी भी न टूटेगी

४ ”—चलो इस विधवा व्यभिचारिणी के गर्भ को (चोरीके मालको) इस कुटीके आस पास डाल दें

१ ”— क्या सुगन बिगड़ा कि जय होकर पराजय होगई
खा गये मक्खी कि खा पीकर हमे कय होगई

(सब का जाना)

अंक २ दृश्य २

जंगल

(माँडव्य ऋषि के दो चेले
भजन गा रहे हैं)

गाना

हाँ, तू हरि को भज मन मे
रह घर में या बन मे । तू हरि०
श्वास श्वास दाना सुमिरन का है
क्या लेगा सुमिरन में । तू हरि को०
मन में हरि का नाम सुमिर ले
गोकुल मगन तनमें । हाँ तू हरि को भज मन में

(मांडव्य का आना)

मांडव्य—बालको ! कल का पाठ याद हो गया ?

१ चेला—गुरु जी वह तो कल ही याद हो गया था

मां०—अच्छा उसमे से प्रश्न करें बताओगे ?

२ चेला गुरु जी की कृपा से

मां०—अच्छा तीन प्रश्नोका एक उत्तर दो

गाना

मां०—स्वर में { विद्या, घोडे, पान, मे क्योंकर होय न हान
चेले दोनो { नित फेरे से रहत हैं विद्या घोड़ा पान

मां०— जीते रहो बढ़े नित ज्ञान
आयुष्मान हो आयुष्मान

मां०—जागत रूप कौन जग सोया ?

चेले—बिन हरि भजन जन्म जिन खोया

मां०—बिन धन कौन धन पती कोषी ?

चेले—आशा रहित महा सन्तोषी

मां०—को धन पाय दरिद्र भिकारी ?

चेले—जाके मन तृष्णा भई भारी

मां०—मुक्त कौन ?

चेले— विषयन को त्यागी

मां०—को है बद्ध ?

चेले— विषय अनुरागी

मां—सद्गुरु कौन ?

चेले— विमल सद्बुद्धी

मां०—तीरथ कौन

चेले— हृदय की शुद्धी। जीते रहो०

---

१ चेला—गुरु जी! हमने उत्तर तो दिया परन्तु ये समझ में नहीं आया कि आपने क्या पूछा और हमने क्या बताया

मां०—बेटा! अभी तुम बालक हो अभी तो विद्याको कण्ठ किये जाओ इस कड़वे शर्वतको घुट्टी की तरह आंखें बन्द करके पिये जाओ जब अवस्था में आओगे खुद समझ जाओगे

[गुरुका लेटना चेलों का पाँउ दबाना]

१ चेला— देखिये गुरुजी जिस टाँग को मैं दबाता हूं उसी पर

यह भी हाथ डालता ह

२ चेला – तू हमारा हाथ क्यो रोकता है

१ चेला—तू हमारा हाथ क्यो रोकता है

२ चेला—अच्छे रोकेंगे टॉग तो हमारे गुरुजी की है

१ चेला—हम भी अच्छे रोकेंगे टाँग तो हमारे गुरुजी की है

मां०—अबे लडते क्यो हो

१ चेला—तो यह अपनी तरफ़ क्यो नही रहता।

२ चेला – तो यह अपनी तरफ क्यो नही रहता है

मॉ०—अच्छा लड़ो मत, एक एक टांग बाटलो दाई' तेरी और बाई' तेरी

१ चेला —याद रखना दाई' है मेरी यह लाल टोपे वाली

२ चेला—और बाई' है मेरी यह जोगिया टोपे वाली

[अपने अपने टोपे पाउ को पहना देते है]

मां०—भूदेव ! कमण्डल तो देख जल है या नही

[एक चेला गया, मां० ने टॉग पर टाग चढाली]

१ चेला—भई तेरी टॉग मेरी टाग पर क्यो चढ़ बैठी। उतर यहां से अन्धी कही की (टागको झटक देता है)

२ चेला—अबे मेरी टाग को झटक दिया तो मै तेरी को तोड़ कर छोडूंगा

(सोटा उठा कर दिया धड़ाक से)

मां०—अबे यह क्या करते हो

१ चेला – गुरुजी आप न बोलिये इसमे आपका कुछ काम नहीं। इसने मेरी टांग को कैसे मारा

मां०—अबे तुम्हारा क्या गया टांग तो मेरा टूट गई

२ चेला—तू ने मेरी टांग को कैसे मारा मैं भी तेरी टांग को तोड़ूंगा

मां—अबे सुनो तो सही

१ चेला—आप न बोलिये इसमें आपसे कुछ प्रयोजन नहीं, इसकी टाँग मेरी टांग पर कैसे चढ़ी

मां—तुम दोनो का मुंह काला मूर्खों ने मुझे मुफ्त में मार डाला

[नारद का आना]

नारद—ठैरो ठैरो बालको ठैरो इनको क्यो मार रहे हो गुरुजी पर सोटे फटकार रहे हो

१ चेला—नहीं महाराज गुरुजी के तो हम दास है मै तो इसकी टाँग को मारता हू

२ चेला—और मैं इसकी टांग को मारता हू

नारद—अरे पागलो हैं तो दोनो गुरुकी टाँगे अपनी अपनी मिथ्या कल्पना से उस एक को अनेक मान रहे हो, परस्पर लट्ठ तान रहे हो बड़ी चोट आई महराज

मां—क्या कहूं बच्चे ही तो है

नारद—धन्य हो ऋषिराज इतनी मार पड़ी और क्रोध का नाम नहीं

मां—इन्हें बोध होता तो हमे क्रोध होता मालूम नही हमने बचपन में क्या क्या अपराध किये होंगे

नारद—इस समय है सतोगुण की छाया जो क्रोध नहीं आया

तमोगुण होता तो अभी संभालते सोटा । भोले बच्चो तुम्हारी बड़ी भूल है विवाद निर्मूल है शोक की बात है कि इसी भेद बुद्धि के कारण संसार में मत मतान्तरों के झगड़े दिखाई देते हैं एक मत वाले दूसरे मत वालों के कलेजे में चुटकियां लेते हैं

गाना

गुरु है एक ही सब का सकल जग जिसका चेरा है ।
मगर लड़ते है वो चेले दुई ने जिनको घेरा है ॥
वही मेरा वही तेरा है लेकिन भेद बुद्धि से ।
मैं कहता हू कि मेरा है तू कहता है कि मेरा है ॥
उसी का है वह अलबेला बनाले जो इसे अपना ।
न इस का है न उसका है न मेरा है न तेरा है ॥
इसी मत भेद के कारण पढ़े लिक्खे झगड़ते है ।
तअज्जुब है यह नारायण उजाले मे अंधेरा है ॥
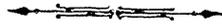
मत वालो का जो झगड़ा है वो सब मैं मैं तू तू का है
प्यारो यह चरन गुरु का है तो यह भी चरन गुरु का है

एक दुश्मन है एक के मत का
कोई ज्ञाता नही यहा सत का
यह हमारा है यह तुम्हारा है
इस दुई ने जगत को मारा है

कोई सेवक इस करवट का है कोई सेवक इस पहलू का है
प्यारो यह चरन गुरु का है तो यह भी चरन गुरु का है

महर्षे आपके चोट लग गई है लेट जाइये मैं शान्ति का उपाय करता हूं आओरे दोष के भागी निर्दोष बालको मेरे साथ आओ मैं एक जड़ी बनाउगा उसे महाराज को टांगों पर लगाना

चेले दोनो—चलिये महाराज (गये) (जिला और चोरो का आना)

जि०—बस यही डाल दो

[चुपके से मांडव्य के सरहाने माल रख कर भाग जाते है, जुगल के साथ कोतवाल और चन्द सिपाहियों का आना]

जु०— बस मेरी ज्योतिष तो यही कहती है कि इतने ही मे पचास कदम के अन्दर अन्दर माल मोजूद है

कोत०— देखो तो इधर उधर

१ सिपाही—यह क्या है

कोत०—आख्खा——

चोर और माल पा गये दोनो
खूब यह हाथ आ गये दोनो

[पकड़ कर उठाना]

मां अरे घायल साधु को कौन सताता है

कोत०— खड़ा हो क्या ढोंग मचाता है

मां—अरे भाई मेरे पाउओ मे चोट आई है

कोत०—ठीक है माल चुरा कर भागते समय घबराहट मे ठोकर खाई है पापियो को शर्म नही आती अन्दर कुछ बाहर कुछ, जैसे कि हम हैं, पकड़ो इस रंगे स्यार को ले चलो दरबार को

मां०— सोटे खिला रहा है डाकू बना रहा है
पिछला किया हुआ है अब आगे आ रहा है

[लेजाना]

[अन्धे गोपालकी लाठी पकड़े रेवा दाखिल होती है]

गाना

धन(धन्य) है तनके सब अङ्ग मगर अनमोल नहीं अखियन समान।
नैना वालों मे नही नैनन का सत्कार
हमने नैना खोय के समझी इनकी सार
जोत लिये दिन रैन फिरत चन्दा सूरज तारा मंडल।
विन नैन सबहि प्रकाश रहित कोई भी नही जग तेजवान। धन है०
वह पैसे के मोल को जानत ठीकम ठीक
जो पहले धनवान हो पीछे मागे भीक
विन इनके अन्धेर नगर है, शून्य सकल जल थल को ज्ञान। धन है०

रेवा—भाग्याधीन जो दशा होनी थी हो गई अब इसकी चिन्तासे लाभ नही है
दो आखे मौजूद है त्यागो सोच विचार
मैं हूं मालिक एक की दूजी के भरतार

गो०—रेवा! तेरे सरल स्वभाव और सद्गुणो को तो मैं उस समय से जानता हू जब तू मेरे खेत के पास झौंपड़ी मे रहा करती थी

रेवा—उसी सहवासने तो आपके शुद्धाचार की याद दिलाई है

उसी परिचय ने तो मुझे आप की दासी बनाई है

गो०—यही तो शोक की बात है

रेवा—यही तो हर्ष की बात है

गो०—मेरी आंखें तो अपनी घबराहट मे विद्याधर वैद्य ने फोड़दीं
परन्तु तेरी आंखें स्वर्ग वासी देवताओं ने फोडदीं

रेवा—नही स्वामी मेरी आँख तो खुली है मैं तो अच्छी खासी
समांखी हूं

गोपाल—यदि तेरी आंखें खुली होती और तू समांखी होती तो
ऐसे दीन दरिद्र अन्धे के साथ विवाह न करती

अगर आंख तेरी होती तो तूं गिरती न फेरे में
चमकता तेरा सिहासन किसी राजा के डरे में

रेवा— तुम्ही हो ताज मेरे राज के सब ठट भी तुम हो
मेरे राजा भी तुम हो और मेरे सम्राट भी तुम हो

गोपाल—अच्छे राजा है

न आंखो मे रही ज्योति: न घटनो मे है बल बाक़ी
जो कुछ बाकी है वो भी है फ़क़त दो चार पल बाक़ी

रेवा—— बड़ा अवसर है सेवा का करूंगी मानसिक सेवा
अधिक मोहताज हो तो हो सकेगी कुछ अधिक सेवा

गोपाल— तेल जला बती जली तेली रहा समीप
अब तो हे गोपाल जी भौर भये के दीप

रेवा— दीन बये के घोसले चमकत है खद्योत
उसको वो खद्योत ही है सूरज का जोत

गोपाल— कहनेको कह लीजिये श्वेत होत नहि शाम
कव्वे को बगला कहा उलटा रक्खा नाम
व[illegible] देवी ! मैं जो कुछ हूं प्रत्यक्ष हूं।
कंगाल हूं मैं नादार हूं मैं मोहताज हूं मैं लाचार हूं मैं
दोनों ये खिड़कियां बन्द हुई चलती फिरती दीवार हूं मैं
रे०-अब तुम मेरे भरतार हुए नाचीज तुम्हारी नार हूं मैं
दीवार नही तुम मेरे लिये यह कहो स्वर्ग का द्वार हूं मैं
गो० क्या सुन्दर स्वर्ग का द्वार है
न कोई तोरण न कोइ झालर न कोई गुम्फा न द्वार-पट है
पड़ी है वो हड्डियोको माला कि टूटना जिसका अब निकट है
रे०-न द्वार पर मोतियो की झालर न झालरोमें ज़री की लट है
कुबेर का कोष है इसी से कि आपका मन तो निष्कपट है
गो० मुझसा भी कोई जमाने में होगा मुफ़लिस कंगाल नहीं
घर ब्याह के लाये दुलहन को और घर मे आटा दाल नहीं
गहने पोशाक नसीब नही हैं शाल नहीं रूमाल नहीं
इन नोनों का तो काल रहे पर अपने पल्ले लाल नहीं
सर पर ये चिथड़ा डाल चलो दुलहन का सारा साज है ये
आंखे हैं जिनला खुली हुई उनको गृहस्थ की लाज है ये
रे०-जो दिया आपने [illegible] ने मुझको जोड़ा आला है
यह भी एक [illegible] है [illegible] को ताना बाना है
आजा मेरे सर आंख पर तू चाहे [illegible] पुराना है
मैं तो नौकर सरकार की हूं [illegible] सरकारी परवाना है

जो रत्न है चौदह सागरके क़ीमत इसके हर तार की है
संसार मे सबसे उत्तम यह सोगात मेरे भरतार की है

गो०—क्या तुमने उस मैले कुचैले अंगोछे को सर पर धर लिया

रेवा—आज्ञा की तरह शिरोधार्य कर लिया और क्यो न करती
इसके छिद्रो मे तो मुझे स्वर्ग द्वार नजर आता है इसका
स्वरूप तो मुझे परमात्मा का रूप दिखाता है

गो० हां हां हाय मेरी आँखें होती तो मुझे भी नज़र आता

रेवा स्वामिन् ऐसे दृश्य देखनेके लिये बाहरी आंखो की ज़रूरत
नही है मै जो कुछ दिखाऊं उसे बुद्धिकी दृष्टिसे देखिये कि
फटे अंगोछे मे परमात्मा का स्वरूप किस तरह दिखाई
देता है

ओर छोर उसका नही इसका ओर न छोर
उसकी भी सीमा नही इसकी भी नहिं कोर
बिन आदि वह बिन आदि यह बिन अन्त वो बिन अन्त यह
निर्गुण वहां निर्गुण यहां अपनी दशा पर्य्यन्त यह

गो० आ हा हा हा

गुण के दोनो अर्थ का खूब किया व्यवहार
सत रज तम गुण उधर नहिं इधर सूतके तार
सर पाउं दोनो के नही मुंह नाक पेशानी नही
उसका कोई सानी नही इसका कोई सानी नहो

[पहले गाने की स्थाई यहाँ मिलती है और गाते गाते चल देते है]

अंक २ प्रवेश ३

सूलीघर

[मांडव्य के दोनों चेले आते हैं, एक जोर जोर से
रोता है दूसरा समझाता है]

१ चेला—(रोना)

२ चेला—अबे उल्लू! रोने से क्या होता है। यदि रोने से राजा गुरुजी को छोड़ दे तो आओ दोनो मिलकर रोले

१ चेला—अरे भइया! गुरुजी बिना अपराध ही सूली चढ़ेंगे तो फिर हम किस से पढ़ेंगे

२ चेला—इतना पढ़कर ही पढ़े हुए से तूने क्या लाभ उठाया है इतने मे ही भूल गया गुरुजी ने तो हमे पढ़ाया है कि:—

भय से डरना चाहिये जब तक भय हो दूर
जब भय सर पर आ पड़े यत्न करो भरपूर

इस लिये इधर आ, मै एक युक्ति बताऊ, लग गया तो तीर वर्ना: तुक्का ही सही

[दोनों का जाना, चार सिपाही और कोतवाल का
मांडव्य को सूली पर लाना]

कोत०—राजाज्ञा का पालन किया जाय और इसकी लाश महारानी के सन्मुख पहुचाई जाय

सिपाही१—ऐसे साधु रह गये है दुनिया मे, चोर कही के

मां०—सज्जन ! अब तेरा कहना भी ठीकहै, जब हम अपने बचाव में कोई साक्षी नही रखते तो सचमुच चोर हैं

सिपाही १—चोर नहीं तो क्या साह हो, भेस घाती ! मरने को चले और मक्कारी नहीं जाती

मां०—राजाने जो मुझे सूली का हुक्म दिया है यह साक्षियों के आधार पर न्याय किया है और वह इतना ही कर भी सकता है क्योंकि जहां चोर चोरी कर रहा था वहाँ राजा मौजूद नहो था परन्तु वह राजाओं का भी राजा वहा भी मौजूद था इस राजाके चर्म चक्षु अपनी गोलकों में बन्द रहने से परोक्ष का हाल नहीं जान सकते परन्तु उस सर्व व्यापी अन्तर्यामी के निराकार नेत्र मुझे चोर नहीं मान सकते

मेरा मन खुशहै मुझको, लांछन यह लग नही सकता
ठगूं दुन्या को, अपने आत्मा को ठग नही सकता

आज्ञा है चढ़ जाऊं सूली पर ?

कोत०—कर्मों के प्रताप से चढ़ना ही पड़ेगा, चढ़िये आगे बढ़िये

(चढ़ गये) (चेले आये)

१ चेला—ठैरो ठैरो ! कोतवाल साहब ठैरो !

कोत०—क्या है रे बालको ?

१ चेला—सूली पर मुझे चढ़ाइये

२ " —नहीं मुझे चढ़ाइये

१ " —नहीं मैं इसे नहीं चढ़ने दूंगा

२ चेला—नही मैं तुझे नहीं चढ़ने दूंगा

१ " —पहले मैं मरूंगा

२ " —नही पहले मैं मरूंगा

कोत०—अरे भई आखिर बात क्या है !

१ चेला—कोतवाल जी आप इन बातों को नही जान सकते

२ " —और उम्र के घमंडमें बालको की बात नहीं मान सकते

१ " —आप मुझे सूली पर चढ़ा दें तो भेद मैं बतादूं

कोत०—यह क्या बड़ी बात है, यहां तो यही काम दिन रात है

१ चेला—तो इधर आओ देखो अपने वचन से न फिर जाना मुझी को सूली पर चढ़ाना

कोत०—ज़ुरूर

२ चेला—हमने शिखण्ड मार्तण्ड प्रचण्डानन्द स्वामी से मालूम कियाहै कि इस समय वह लग्न वेला है कि जो प्राणी इस मुहूर्त्त मे सूली पायगा उसने अनेक पाप किये होंगे तोभी सीधा स्वर्ग को चला जायगा

कोत०—ओहो हो यह बात है, इसी वास्ते यह साधु मगन मगन नज़र आता है और सूलीपर चढ़ने मे बड़ी उमंग दिखाता है, यही कारण है कि मरने के समय न शोक है न खेद है

१ चेला—यही सारा भेद है

२ चेला—देखो ना आप समाधि की सूरत बनाकर उसी आनन्द का इन्तज़ार कर रहे हैं इसी कारन खुशी खुशी मर रहे हैं

कोत०—तो बस हमने उम्र भर पाप किये हैं इस लग्न में हम

खुद ही सूली पाएंगे और छुटे स्वर्ग को चले जाएंगे
उतार दो इस साधु को (सा०का उतरना को०का चढ़ना)

२ चेला—अजी कोतवाल जी ! हमारा हक़ छीनते हो

१ " —अपने वचन को तो ·

कोत०—बस चुप रहो फिरादो हरी (कोतवालको सूली लगगई)

दोनो चेले—(भागते है और बोलते जाते है) बोल हरी २

१ सिपाही—कोतवाल साहब तो स्वर्ग धाम पहुच गये अब
हमारी तुम्हारी बारी है

२ " —क्यो

१ " —महारानी के सामने लाश साधुकी जायगी या
कोतवाल की

२ " —अरे हां यह तो ठीक है पकड़ो पकड़ो साधुको

१ " —तुम इस लाश को उतारो हम साधु को लाते है
(लाश उतारी, मांडव्य को दुबारा पकड़ा

२ " —मजबूर है हम काल तुम्हे घेर रहा है

१ " —फिर फिर के कोई है कि इधर फेर रहा है

मांडव्य—कुछ परवा नही —

कर्म का फल है भोगना हमको
मौत से भय नही ज़रा हमको

(सूली पर चढ़ाना यमराज का प्रकट होना
काले भैंसे की सवारी भैंसे की आँखे लाल चमकती

१ सिपाही—अरे यह क्या बला आई भाग भाग मेरे भाई

यम—ऋषिराज चले जाओ यहां से तुम्हारी मृत्युमे अभी देर है

मांडव्य—देव ! तुम कौन हो ?   (नीचे उतर आना)

यम—यमराज मेरा नाम है, शरीर बदलवाना मेरा काम है

मां०—अहो भाग्य, अहो भाग्य, इस दुःख मे भी सुखकी सामग्री निकल आई और हे जीवनान्तकारी सूली प्यारी ! तू भी धन्य है कि अपनी कृपा से तूने यमराज की झाँकी दिखाई

यम-अबजाओ इस काल भवनसे निकलजाओ जिस दिन तुम्हारे जीवन की अन्तिम तिथि होगी उस दिन फिर भेट होगी

मां०—महाराज यह तो बताते जाओ कि मैंने ऐसा कौनसा पाप कर्म किया था जिसने मुझे सूली पर चढ़ा दिया था

यम—तुमने बचपन मे खेलते हुए शूल की नोक से एक ततैये को बींध लिया था

मां०—नारायण नारायण अज्ञान पन मे किसी प्राणी के सूल चुभाने का फल सूली है तो जो लोग जान बूझ कर प्रमाद से प्राणियो को वध करते है उनका क्या हाल होगा। तो महाराज मैने ततइये को सूल से बींध लिया था तो अब मुझे सूली ने क्यो नहीं बींधा ?

यम—इस लिये कि वह कर्म तुम्हारा जान बूझ कर नही था, परन्तु सूली का भय तुम्हारे सामने आ गया और तुम्हारे मनको दुखा गया

मां—मैं ने तो इसके भय का भी दु.ख नही माना

यम०—यह तुम्हारा वर्तमान कर्म है जो दु खके सामने खम ठोक

कर खड़ा हो गया और दु.ख का अनुभव तुम्हें न होने दिया वर्न: दुःख अपने पूर्ण वेग से सामने आता है उसे मानना न मानना प्राणी का काम है जो लोग दु.ख को मानते रहते हैं वो उसकी वेदना को भी सहते हैं और जो अपने आत्मिक बल से उसे नही मानते वो उस दुःख से होने वाली पीड़ा को भी नहीं गरदानते

मां—भला ये मुझे सूली पर चढ़ाने वाले (सिपाहियो को दिखाकर) तो जान बूझकर कर्म करते हैं इनको इस पाप का फल होगा या नहीं ?

यम०—नहीं, कारण कि ये इस कर्म के कर्त्ता नही हैं स्वतंत्रता पूर्वक कर्म करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और ये लोग राजा के दबाव से ये कर्म करते हैं

मा०—तो राजा पाप का भागी होगा ?

यम—नही, वह भी सज़ा देने में स्वतंत्र नही है न्याय और नियम के अधीन है यदि पक्षपात से दण्ड देगा तो पाप का भागी होगा

मां०—तो सारांश यह हुवा कि

अपनी स्वतंत्रा से प्राणी जब कर्म नेको बद करता है
बस नाम उसी का कर्ता है जो कर्ता है वह भरता है

[परदा कवर होता है]

अंक २ प्रवेश ४

जंगल

१ चेला—युक्ति तो ठीक रही गुरु जी की जान भी बचगई परन्तु
वो रहे कहां

२ " —किसी और तरफ़ चल दिये होंगे आओ सब ढूंढ लेंगे

(दोनों का जाना)

(मांडव्य का दूसरी तरफ से आना)

मा०—चेलों की युक्ति तो ठीक रही परन्तु वो गये कहां—ओह
बनबासी बालक भूलने वाले तो हैं नहीं सब आ रहेंगे।
आज की पकड़ जकड़ में तो शरीर के अवयव दुखने लगे
रात्रि का विश्राम तो यहीं रहेगा प्रातः काल देखा जयगा

(एक तरफ सोगये, दूसरी तरफ
से रेवा और अन्धा आते हैं)

गाना

है धर्म अर्थ और काम, मोक्ष का धाम पति के पग में
जो चाहो अपनी जीत, बलम की पीत भरो रग रग में
यदि इसमें न हो कुछ भूल, सूल भी फूल बने हर मगमें
श्री गङ्गा तटका वास, दान, उपवास पति है जग में

(गोपालगुप्त ठोकर खाकर मांडव्य के ऊपर गिरता है)

गो०—ओ भगवान्

मां—अरे सत्यानासी ! कौन है मेरे ऊपर आ पड़ा ?

गो०—अरे तो भले आदमी तूभी रस्ते में सो रहा है

मां—रस्तेमें सो रहाहै और तू क्या अन्धा होरहा है कि इतना बड़ा मार्ग छोड़ कर ऊपर आ पड़ा मेरे पीड़ित शरीर में और पीड़ा बढ़ा दी। जा चाण्डाल मांडव्य ऋषि के शाप से तू भी सूरज निकलते ही मर जायगा

रेवा—कौन, ऋषिराज, यह आपने क्या किया! किसे शाप दे दिया ?

मां—जिसने मुझे दुखी किया क्या इस की आंखे फूट गई थीं कि मुझे सोते को कुचल दिया

रेवा—हां महाराज! ये तो सच मुच अन्धे हैं

गो०—मेरी आंखे तो विद्याधर वैद्य ने फोड़ डालीं और इस को आंखें क्रोध ने फोड़ दीं

रेवा—क्षमा करो महाराज ये निर्दोष हैं

मां—चले जाओ दुष्टो यहाँ से,निर्दोष है निर्दोष हैं अब भी निर्दोष है तो दोष की कोई और युक्ति निकालो मेरा बिलकुल ही कचूमर कर डालो

रेवा—भगवन् क्षमा धर्म का दूसरा लक्षण है अन्धे आदमी की तरफ़ देखिये और अपने शान्त भेस की तरफ़, इस समय का वृथा क्रोध आप को शोभा नहीं देता क्षमा कर के इन्हें शाप-मुक्त कीजिये

मां—ऋषियों का शाप बच्चों का खेल नहीहै सूरज निकलते ही इसे शरीर छोड़ना पड़ेगा !

रे०—तपाभिमानी ज्ञानी मुनि जी ! इस शाप का कोई प्रतिकार मैं करूं इस से बहतर है कि आप स्वयं ही क्षमा करके अपनी पदवी की रक्षा करैं,

मां— क्या कहा ?

रेवा— वही विनीत भाव से सूचना जिसे आप समझ चुके हैं

मां०—जा जा कलकी छोकरी किसी भिकमंगे रंगे गीदड़ को जाकर डरा

रेवा—तो आप क्षमा नही करेगे ?

मां०—नहीं

रेवा—नही करेंगे ?

मा०—नही

रेवा—नही करेंगे ?

मां०—नही, नही, नही ।

रेवा—आपकी इच्छा (प्रार्थना) हे सहस्र-रश्मि दिवाकर ! हे सूर्य देव प्रभाकर । हे संकट मोचन विरोचन ! यदि मेरी पति-भक्तिमे कोई कमी नही है तो आप मेरी दूसरी प्रार्थना तक इस पृथ्वी पर अपना प्रकाश न डालना, उषा रूपी लाल दुशाले से मुंह बाहर न निकालना

मां—क्या बक रही है, तेरे कहने से क्या सूर्य-सम्प्रदाय नष्ट भ्रष्ट हो सकता है। प्रातः काल देखा जायगा कि यह प्रतिकार कहां तक स्पष्ट हो सकता है

रेवा—प्रातःकाल भी देख लेना और अब भी देख लो

मां०—अब भी देखलो ? हमें दिखायगी ?

ऐसा विचार ध्यान में लाना न भूल से

यह हौसिला शृगाल को तप-शार्दूल से

रेवा—तो हे तप शार्दूल अपने तप को संभालो देखो वो चला।

हे मांडव्य ऋषिके तपोबल ! निकल निकल अब यह स्थान

तेरे रहने योग्य नही रहा इसमें आग लग रही है तू भी

फुरती से न निकल जायगा तो जल जायगा

पड़ गई बिजली ऋषी के ज्ञान और वैराग पर

आग हैं यह क्रोध की काफूर हो तू आग पर

(तेज का निकलना)

मां०—ओ मेरा आत्म प्रकाश कहां गया यकायक अंधेरा कैसे

छा गया हृदय मे अन्धकार कहां से आ गया

(चक्कर खाकर गिरता है)

अंक २ दृश्य ५

मकान

[विद्याधर मशअल लिये आते है]

विद्या०—अन्धेर की बात है सूरज देवता भी मिसरी के पति

निकले कि गुम हो गये

[मिसरी मशअल लिये आती है]

मिस०— सूरज भी सो रहा यह अचम्भे की बात है

अब किस से जाके पूछिये दिन है कि रात है

चौधरी साहब ! इस समय आप क्या खाइयेगा ?

वि०—ज़हर। हम तो आज कुछ नही खाएंगे

मिसरी—वाह आज तो मैं आपके लिये भोजन अपने हाथ से बनाऊंगी और ज़रूर खिलाऊंगी

वि—तइयारी हो चुकी है। प्यारी! मैं तो सूरज को जल दिये बग़ैर कभी भोजन नहीं करता

मि०—सूरज को अस्त हुए तो कई दिन हो गए और तुमने तो कल भोजन किया था

वि०—वह तो भूल में कर लिया था

मि०—तो आज भी भूलना पड़ेगा

वि०—सूर्य की गरमी न लगने से जठराग्नि ज़रा मन्द हो रही है ऐसी अवस्था में खाना ठीक नहीं है। ज़हर से बचने का यही उपाय है

मि०—मेरे हाथ का भोजन आप दो चार ग्रास भी खालेंगे तो मेरा जी भर जायगा

वि०—क्योंकि खाने वाला तो दो ही ग्रास में मर जायगा

मि०—अरे भोला

वि०—फिर आया तोप का गोला

[भोला हाथ में मशअल लिये और एक हाथ में लम्बा छुरा लिये आता है]

मि०—क्या कर रहा है ?

भोला—तुम्हारा चावल कर लिया अब इनका कचूमर करना है

वि०—और तू है ही किस काम के लिये

मिस०—कम्बख्त ज़बान सँभाल कर बोल

वि०— साथ नौकर है इसी वास्ते हट्टा कट्टा
पाँच को पीस के आया है यहाँ सिल बट्टा

मि०—चल मुझे दिखा क्या क्या बन चुका है । आप इसकी ज़बान का बुरा न मानें यह दिलका बड़ा साफ़ है (गई)

वि०—जैसो तू साफ़ है

गाना

मिले शेरे बबर तो न डरना कभी
पर विधवा से शादी न करना कभी
लिये फिरी यही चीता को कूचओ बाज़ार
सदा यह थी कि "चने चटपटे मसालेदार"
किसी ने डाल लिये मुंह में लेके जब दो चार
चना दबा जो तले दाँत के तो की यह पुकार—
डरो न गर्म भाड़ से, डरो न अग्नि-दाह से
डरो डरो डरो डरो डरो पुनर्विवाह से
इसी अज़ाब में भल्लूक दर बदर डोला
कमर पे दूधिया भुट्टों का डालकर झोला
खुला नसीब कि भुट्टे ने भेद यह खोला
गया जो मुंह में तो दाना मकी का यों बोला—

डरो न अस्त्र शस्त्र से न शत्रु की सिपाह से
डरो डरो डरो डरो डरो पुनर्विवाह से

तबोली खोल के बैठा जो पान की दूकान
दुकान खोल के यो गाहकों के खोले कान
यह अर्ज़ है कि न खाना किसी का झूठा पान
तो दूसरा यह निवेदन है आप से श्रीमान्—
डरो कभी न खून से न क़ैद से न शाह से
डरो डरो डरो डरो डरो पुनर्विवाह से

हुआ है घास मे गुम शेरसिंह घसियारा
कि घास खोद के लाने सिवा न था चारा
पुनर्विवाह ने ऐसा उसे थका मारा
कि दिल ही दिल मे दुखी हो के उनसे उच्चारा—
डरो न तेज़ धार से न ख़ार दार राह से
डरो डरो डरो डरो डरो पुनर्विवाह से

इसी बहाव मे लाचार मै भी बहता हूं
अब आ गई मेरी बारी तो दुःख सहता हूं
हवास गुम है कि इस गुमनगर मे रहता हूं
बुरा न मानिये अब साफ़ साफ़ कहता हूं—
डरो न दुष्ट सांप से न मौत की निगाह से
डरो डरो डरो डरो डरो पुनर्विवाह से

चौ तरफ़ इस पंच-भर्ता की दुहाई हो गई
जिस तरफ़ मुंह उठ गया पूरी सफ़ाई होगई

[जुगल का मशअल लिये आना]

जु०—अभी पूरी सफ़ाई नही हुई है (ट्रेडमार्क वाली)

वि०—अब हो जायगी। जुगल अच्छा हुआ कि तेरा नाम जुगल है कहीं तेरा नाम भी मिसरी का भरतार होता तो तू भी गुम हो जाता

जु०—अजी मिसरी का भरतार तो क्या ग्रहो का सरदार सूरजमल भी होता तो भी गुम हो जाता

वि०—मित्र आ गले मिल ले बस आखिरी मरतबे गले मिल ले क्योंकि अब जीने का मौक़ा नही इस गृहस्थाश्रम से भर पाया अब सन्यासी बनता हूं तुम मेरा अन्तिम उपदेश याद रखना जब मैं सन्यासी बनकर मर जाऊं तो मेरी समाध श्वेत शिला की, नहीं नहीं श्वेत शिला तो स्त्रीलिंग है स्त्री से बचना चाहिये हां मेरी समाध संगमरमर की बनवाना और उस पर यह दोहा लिखवाना:—

पहले अपने सामने अरथी रख या खाट
कफ़न बांधले सीसपर फिर मिसरीको चाट

जु०—आज बीमारी बढ़ी हुई है

वि०—खाने में ज़हर तो ज़ुरूर खाना पड़ेगा। इसलिये औषधालय में जाकर कुछ ज़हरका उतार पीलूं मैं अभी आताहूं (गये)

जु०— वैद्य जी को लगा है रोग कोई
आ पड़ा पागलों का जोग कोई

(मिसरी आई)

मि०—चौधरी साहब कहां गये

जु०—आते हैं

मि०—आपने उस राज वैद्य का झगड़ा तय किया या नहीं

जु०—वह पांच हज़ार से कम में नहीं मानता

मि०—ख़ाक पड़ो मुए पांच हज़ार पर, पांच हज़ार क्या आबरूसे भी प्यारे हैं, मै दिलादूंगी

जु०—पांच हज़ार दिलादोगी इनसे ये पाँच कौड़ी भी नहीं देंगे

मि०—इनका पच्चीस हज़ार रुपया नील वालोकी कोठी मे जमाहै

(वैद्य जी का झाँकना)

मैं ऐसी तरकीब करूं कि काम बन जाय और वैद्य जी को ख़बर भी न हो

वि०—काम वन जाय और वैद्य जी को ख़बर भी न हो। थू तेरे जनम मे

मि०—बातों ही बातों मे सादा कागज़ पर चौधरी साहब से दस्तख़त करालूंगी

वि०—शाबाश ये तो कोई पूरा जाल तइयार हो रहा है

जु०—बस बस बहुत ठीक है आयन्दा मैं समझ लूंगा

वि०—क्यो नहीं आयन्दा ये समझ लेंगे मिले हुए हैं दोनों मिले हुये। जल्द ही मेरा फ़ैसला करने वाले हैं

जु०—तो ये काम कब होगा ?

मि०—बस उन्होने खाना खाया कि काम हुआ समझो

वि०—बल्कि काम तमाम हुआ समझो परन्तु तुम्हारा खाना

यहां खाता ही कौन है

जु०—तुम्हारे हाथोंकी सफ़ाईसे यह कांटा निकलजाय तो चैनपड़े

मि०—आप की मदद है तो शांति हो जायगी

वि०—बिलकुल शान्तिहो जायगी, बच्चा जुगले तेरे खोदे हुए कुंए में तुझीको गिराऊंगा ज़हरीला खाना तुझीको खिलाऊंगा ज्योतिषी जी भोजन तइयार है आज यही कृपा कीजिये

जु०—नहीं जी घर जाकर खायेंगे

भूल सुधार

पृ० ९५। १२ वी पंक्ति "कुवेर का कोष० के बाद"

गोपाल— सन्तुष्टो भार्यया भर्ता
भर्त्रा भार्या तथैव च
यस्मिन्नेव कुले नित्यं
कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्

रेवा—दम्पति का व्यवहार ऐसा ही होना चाहिये विशेष कर सुहागन स्त्रियों को तो ये चार बाते याद रखने योग्य है

गोपाल—क्या क्या ?

रेवा— बने गृह-कार्य मे दासी, खिलाते वक्त महतारी
सचिव संकट मे, रति मे वेश्या, वह है सती नारी

गोपाल—मज़ा आ गया। इन उच्च विचारो पर कुछ सुनहरी आभूषण भेट करने की आवश्यकता थी परन्तु क्या करूं

(मुझसा भी० १३ वीं पंक्ति मे छपा है)

वि०—डरा ज़हर से,वाह आज यहीं सहभोज्य का आनन्द रहेगा

जु०—अच्छी बात है

वि०—अच्छी बुरी की ख़बर तो खाकर पड़ेगी

जु०—अब जो कुछ खाना पीना है और दो चार रोज़ खा पी लो

वि०—ऐ लो खुली सूचना, क्यो ?

जु०—सूरज और थोड़े दिन न निकला तो सब आप से आप मर जायेंगे

वि०—फिर तो आज के खाने की भी ज़ुरूरत न होगी

जु०—आज के खाने की ? यह क्या कह गये ?

वि०—जुगल ! इस मशअल से तू अपनी ज्योतिष में तो देख कि सूरज के डूब मरने की जगह कहां है ?

जु०—मैं बताडूंगा तो क्या तुम कोतवाल बनकर उसे ढूंढलाओगे

वि०—कोतवाल की लाश तो मिल गई थी परन्तु मेरी लाश गुम हुये बग़ैर न रहेगी क्योंकि आख़िर मैं पति हूं चीता, भल्लूक, गेंडा, शेर अन्धेर है अन्धेर [नारद का आना]

गाना

जाग जाग मैंना ! मधु--बैना

तज निंदया खोल अपने नैना । जाग०

आवत है इक व्याध सामने तो को सुध है ना

जाल डालकर फांस न ले कहिं विपति बने सुख चैना ।

ले उठ जाग जाग०

उसको आरा सांस का काटत है दिन रैन

वि० जु०—क्यो ?

१ सि०—उन्हें मालूम हो गया है कि तुम चोरोसे मिले हुये हो, यही: कारण है कि चोरी का हाल बता देते हो

२ सि०—माल वालो से इनआम और चोरों से हिस्सा लेते हो

१ सि०—जमीन आसमान के कुलाबे मिलाते हो और दुन्या को ठग ठग कर खाते हो

वि—देखो भाई सिपाहियो ! राज आज्ञा से ज्योतिषीजी को पकडने का तुम्हें अधिकारहै परन्तु इनके प्रति कोई बुरा शब्द कहने का कोई अधिकार नहीं अगर मेरे मकान पर ‥ …

२ सि०—तुम भी न घबराओ तुम्हारे लिये भी यही दिन आ रहा है नाग मार्के का काला नाग तुम्हारी तरफ़ भी फुन्ना रहा है

वि०— फूट गये भाग, घर मे नागन बाहर नाग
जिधर सुनो उधर ज़हरी राग

जु०—इस बोहतान का क्या प्रमाण है ? या बिना हेतु का वाद विवाद और ज़बरदस्ती का वितंडा है ?

१ सि०—इसका प्रमाण यह आबनूसी डंडा है

(धकेलकर ले जाते हैं)

वि०—ओ भइया जमके दूतो … …

[कुछ जेब से निकालते देते २ पीछे २ चले जाते हैं]

अंक २ दृश्य ६

राजमहल

राजा—… …दिया करतेहै। उसीका फल ये दैवी कोप हुआहै

पुरोहित—मेरा भी अनुमान यहीहै कि किसी अनर्थ ही के कारण सूर्य लोप हुआ है

राजा—क्या मेरे राज्यमें किसी कायर पुरुषने अपघात किया है ?

मन्त्री—नही महाराज

राजा—तो क्या किसी विधवा स्त्री ने गर्भ पात किया है ?

मन्त्री—कभी नही

राजा—तो फिर ऐसा कौन सा पाप है जिसके कारण प्रजा को सूर्य ताप के बिना महा सन्ताप है

मंत्री—चार लोगों के समाचार से प्रजा का आचार विचार धर्म प्रचार सब प्रकट होता है। गृहस्थियो के घरो मे सन्ध्या हवन से अनुराग पाया जाता है। श्रेष्ठ पुरुषो मे सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग पाया जाता है।

राजा—तो फिर किस अधर्म ने यह दशा कर दी है

मंत्री—महाराज एक गुप्तचर ने यह ख़बर दी है कि एक वैद्य ने बुढ़ापे मे विवाह किया है

दासी—या यह कारण होगा कि ज्योतिषी जो सूरज चन्द्रमा का नाम ले लेकर लोगों को ठग रहा है इसी लिये सूरज ने मुंह छुपालिया है

रानी—उसको तो आज मैं अवश्य दण्ड दिलवाऊंगी

राजा—परन्तु परीक्षा करके

रानी—परीक्षा की सामग्री भी मै ने तइयार कराली है

राजा—क्या प्रवन्ध किया है ?

रानी—सुनहरी कलशमे एक चूहा बन्द किया है जिस वक्त······
यहां ले आओ (दासी लाई) यह देखिये (मुंह खोलकर दिखाना) (राजा ने देखा)

पुरोहित—(देखकर) वाह वाह गणेश जी के वाहन तो खूब सेन चला रहे हैं

[जुगनू को पकड़ कर लाये]

राजा—छोड दो इन्हें, विराजिये

जु०—महाराज ! मुझे अपराधियोंके रूप में ही खड़ा रहने दीजिये

राजा—नही, हम तुम्हे नहीं तुम्हारी विद्या को आसन देते हैं। राजा की पूजा तो अपने ही राज्य मे होती है और विद्वान सर्वत्र पुजते हैं

जु०—महाराज की कुण्डली में आठवाँ स्थान निर्भय हो (बैठना)

राजा—(रानी से) तुम अपनी इच्छा पूर्ति करो

रानी—ज्योतिषी महाराज ! चोरियोका पता ठीक ठीक बता देने से सन्देह उत्पन्न हुआ है कि आप चोरो से मिले हुए हैं

जु०—अब मरे बे आई

रानी—अपनी विद्या के बल से मेरे प्रश्न का उत्तर दो और इन दो चीज़ों को देखलो उत्तर सही हुआ तो यह उपहार

मौजूद है, उत्तर ग़लत हुआ तो यह तलवार मौजूद है

जु०—आधी तलवार तो मेरे कलेजे मे युंही उतर गई "तल" और "वार" तक अर्थात् चपेट तो लग चुकी अब वार बाक़ी है

रानी—तय्यार हो जाइये

जु०—मरने को

रानी—अच्छा बताओ इस कलश में क्या है ?

जु०—मेरी मौत, ज़रा लिखने का साधन मंगाइये ता कि अपनी विधवा को स्वर्ग पहुचने की पत्री लिख दूं

[तिपाई पर दवात कलम कागज आया जुगलने ढोंगसे नक्शा बनाया ।]

जु०—हाय हाय (श्वास लेकर) यह तो बड़ा भयंकर जोग आ पडा अब तो गणेश जी ही रक्षा करें तो प्राण बचें

पुरो०—गणेश जी के वाहन की बात है ना

जु०—बस लम्बी लम्बी मूछो पर ताव देना आज समाप्त समझो

रानी—चूहे की लम्बी मूछें इन्हें दिखाई दे रही हैं

जु०—इस ज्योतिष ने तेरी दुम में नमदा लगादिया

राजा—ओहो पहचान लिया

जु०—तूने बहुतेरी जेबें कतरी है

मंत्री—बिलकुल पते की बात है

जु०—आज यह कलश तेरी मौत है या कारागार है

रानी—वाहवा विद्या का भी क्या चमत्कार है

जु०—अब कुण्डली वुण्डली फुजूल है सच सच हाल कह देता

है हर वक्त अंधेरा ही अंधेरा है इस अन्धेर से घबराकर नगर निवासियो ने मेरे आश्रम को जा घेरा है तू इसका प्रतिकार कर, प्रजा का उद्धार कर

राजा—माता ! मै स्वय चिन्तातुर हो रहा हूं परन्तु इस कार्य का कारण समझ मे नही आता, आप ही कुछ आज्ञा कीजिये कि क्या करूं ?

अन०—सूर्य के रथ चक्र मे रेवा के शाप ने ज़ंजीरें भर दी है और सहस्रांशु के सातों घोड़ो की बाग रेवा के हाथ मे हैं

राजा—इसका कारण ?

अन०—एक कार्य का एक ही कारण हो यह नियम नही है अनेक कारणों का भी एक कार्य हुआ करता है इस समय वैसा ही रूप है इस आपत्ति का कारण भी कुछ मांडव्य ऋषि का कोप, कुछ प्रजा का दोष, कुछ कोतवाल आदि की अनीति और कुछ तू साक्षात् हमारा भूप है

राजा—माता ! मुझ से क्या अपराध हुआ और यदि भूल मे कोई अपराध हुआ भी है तो मैं उसका प्रायश्चित्त करने को तइयार हूं

अन०—तुझ से जो सूक्ष्म भूल हुई है वोतो फिर बता दी जायगी परन्तु उस भूल का प्रायश्चित्त यही है कि जिस रीति से मैं समझाऊं उसी रीतिसे रेवाको यहाँ लाओ और उससे प्रार्थना करके सूर्य के रथ को मुक्त कराओ

राजा—तो उस समय तक आप ·· ···

अ०न०—मैं इस धर्म कार्य मे तुम्हारी मदद के लिये यहीं मौजूद हूं

गाना

जाके मुकट सर धरत विधाता वा को है यूं ही अजमाता
पुत्र समान भई सब प्रजा भूप भयो पितु माता
यह शुभ नाता।
जो प्रजा की पीर, हरे नहिं वीर, दु ख दाता
धिक् जननी की कोक, शोक। अतिशोक!!
लोक गाथा कानन पर है उड़ाता। जाके०

[राजा रानी नमस्कार करते हुए
झुकते हैं परदा कवर होता है]
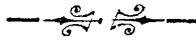
अंक २ दृश्य ७

रस्ता

[बाजा गाजा, पीठ पर नक्कारा झडी वाले, पलटन सब के हाथ में मौम बत्ती, गाड़ी में राजा और रानी घोड़ों की जगह जुटे हुए आगे बढिया फानूस गाड़ी में रेवा और गोपाल गुप्त बैठे हैं फूलों की माला पहने हैं

गाना

जय जय धर्मो धरणी पति की हुआ बालक पालक नाम
अभिराम, अभिराम, अभिराम, पुण्यधाम–

सुख तज कर सारा हम पर वारा सब अपना आराम काम

जनकपुरी मे राजा जनकने हल जोता था निज कर थाम

हो निष्काम ऐसा हो काम, जग मे हो नाम नेकी से

धर्म के पथ में जुड़े हैं रथ में, क्षत्रिय कुल दीपक को है

यह भी इक व्यायाम।

गोपाल— सेवा के परताप से खुले अन्ध के भाग

मोतीके संग मुकुटपर चढे सूतके ताग

सामने से नारद का आना)

नारद—जय हो प्रजा के छत्र भूपाल की जय हो रानी माता की जय हो। राजन् ! तुझे आश्चर्य होगा कि धर्म पूर्वक राज करते हुए भी गाडी मे जुडने का दण्ड क्यो भरना पड़ा

राजा—मुनिराज ! मैं अधिक कुछ नहीं जानता केवल आप्त पुरुषों के वचन पर मेरा विश्वास है, माता अनसूया ने जो कुछ उपदेश किया मैं ने उसके आगे सर झुका दिया

मंत्री—राजा प्रजा रूपी बागीचे में वह माली है जो उखड़े हुवों को जमाता है, खिले हुवों को चुनता है, छोटों को बढ़ाता है, हद से आगे बढ़े हुवो को काटता है, कंटक दल को दूर करता है पौदों के पालन पोषण मे कांटो का चुभ जाना भी मंजूर करता है

बाग़का माली है और राजा प्रजाका छत्र है

बाग़ की रौनक़ ही माली को प्रशंसा पत्र है।

नारद—देख तू ने मांडव्य ऋषि को बिना अपराध फाँसी तक

पहुंचाया और हे महिषो तूने चुगल ख़ोर दासी को मुंह लगाया अपनी पदवी के अनुसार अधिक छान बीन नहीं की इसी का यह फल है। न्यून से न्यून कर्म भी जीव को अपना फल दिये बग़ैर नही छोड़ता, वर्नः किसकी मजाल थी कि तुम दोनों को गाड़ी मे जोडता

राजा—यह भी परमात्मा का धन्यवाद है कि भोग का भार कम हो गया

नारद—इसी कर्म को तुम जान बूझकर प्रमाद से करते तो घोड़ों की योनि पाकर दुःख भरते। क्यो इस अवस्था मे क्या कुछ दुःख अनुभव हो रहा है ?

राजा—भगवन्! यह तो ऐसे पवित्र जोड़े की गाड़ी है, जिस में कोई विकार नहीं है, परन्तु मुझे तो अपनी प्रजा की रक्षा में कठिन से कठिन और नीच से नीच क्रिया करने में भी इन्कार नहीं है।

मं०—इन्कार क्यो कर हो सकता है। ब्रह्मा जी ने जिस समय राजा को बनाया था तो किस तरह बनाया था:—इन्द्र से प्रभुता लेकर, कुवेर से धन लेकर, अग्नि से तेज और प्रताप लेकर, यम से क्रोध लेकर, और विष्णु भगवान से प्रजा पालन धर्म लेकर। फिर कोई राजा हो कर प्रजाके लिये कष्ट न सहे तो उसके राज सिंहासन को धिक्कार है।

राजा—राज सिंहासन सुख भोगने के लिये नहीं, ऐश करने के

लिये नही, प्रजा की आपत्ति टालने के लिये है।

नारद्—निस्सन्देह पिता का सर्वस्व पुत्रों को पालन करने के लिये है।

राजा—आपके प्रताप से मैं भी मन वचन और शरीर से इस रक्षा को तैयार हूं।

छुरा हो सुख रऐयत का पहाडी में कि झाडी में
तो अपनी हड्डियो का डाल दूं दस्ता कुल्हाड़ी में
पड़ें धब्बे मुकुट में

रानी— या बलासे दाग़ साडी में-

रानी-राजा—प्रजा के वास्ते जुड़ जाएं हम मेले की गाड़ी में

नारद्— बोलो मेरे प्रजापाल भूपाल की जय,
बोलो मेरी रानी माता की जय।

(आकाश से पुष्प वृष्टि)
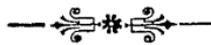
अंक २ प्रवेश ८

बाग़ीचा

[सातवें सीन वाली सवारी यहाँ आती है]

गोपाल—(राजा के सामने) रानी माता! हमें क्षमा करना ऐसे वाहन पर सवार होना सरासर हमारी ढिटाई है परन्तु हम ने केवल आप की आज्ञा सीस चढ़ाई है

राजा—इस संकोच को जाने दो और सृष्टि से अन्धकार दूर होने की चेष्टा करो

रेवा—पिता तुल्य राजन्! ऐसा कौनसा निर्दय बाप है जो अपनी पुत्री को विधवा देखना चाहता है

राजा—पुत्री! जो पिता एक पुत्र को संटक-समर्पण करके लाखों पुत्रोंका कल्याण चाहताहो उसे निर्दय मानना उचितनहीहै

रेवा—क्या संसार में ऐसी धर्म पत्नी हो सकती है जो अपने पति की अरथी उठाने को कमर बाँधती हो?

गोपाल—रेवा गाड़ी मे सवार होने के पहले बहुत कुछ वाद विवाद इस पर हो चुका है। बस भय न कर यदि इस निकम्मे शरीर से दूसरो का कल्याण होता है तो होने दे अपना शाप खीचले इसी मे सब उद्धार है, इस सुगमता से सिद्ध होने वाले यज्ञ को भी मै न कर सकूं तो मुझ पर धिक्कार है

रेवा—तो क्या स्वामी! अपने हाथ से अपनी चूड़ियां तोड़ डालूं?

गो०—बादल, वृक्ष, नदियाँ, गौवे और सज्जन पुरुषो का जीवन परोपकार ही के वास्ते होता है। घास के तिनके को देख कि वह अपना शरीर पशुओ के पालन पोषण मे खोता है क्या मै तिनके से भी गया गुजरा हूं। पशुओं को देख कि वो मर कर भी अपनी हड्डियों से, मांस से, खाल से, बाल से परोपकार करते हैं क्या मै पशुओं से भी गया गुज़रा हूं

डरे वह मौत से जग में जो है मेहमान दो दिनका
पशू पक्षी हैं अच्छे मुझ से अच्छा घास का तिनका

रेवा—इधर महारानी माता, इधर भूपेन्द्र पिता, इधर धर्मोपदेशिका, इधर पूज्य भर्ता, अर्थात् चारों ओर गुरुजन खड़े हैं और एक स्वर होकर एक ही बात पर अड़े हैं तो अब मैं भी गुरुजनों के वाक्य का खण्डन करके धूर्ता नहीं बनती

गो०—शाबाश खुशी से शाबाश

रेवा— हालां कि इनका [illegible] में लपटें हैं आग की
देती हूं इसमें [illegible] अपने सुहाग की

गोपाल— किसी का [illegible] संकट में या आराम में गुज़रे
वही जीवन है [illegible] जो पराये काम में गुज़रे।

गाना

रेवा— नमो नम सहस्रांशोत्यादित्याय नमो नमः।
नमः पद्म-प्रबोधाय नमस्ते द्वादशात्मने॥
हरो दुख दर्शन देकर तात
मिटा कर रात, करो प्रभात, गई वह बात हरो दुख०
अब घोड़ों की बाग न रोको हों ठण्डे उत्पात
हे रवि! हे भानो! हे सविता! चमको अकस्मात
हरो दुख दर्शन देकर तात (सूरज निकला)

गोपाल—ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः (मरगये)

रेवा—ओ प्राणाधार [चकरा कर गिर पड़ती है]

राजा— हा!

पड़े है दो बदन भूमि पे दोनों धर्म ढांचे है
ये दोनो उच्च जीवन ढालने के शुद्ध सांचे हैं।

रानी— विपत संकट ने परकार और गुनिया ले के जांचे है
ये दोनों उच्च जीवन ढालने के शुद्ध सांचे हैं।

अन— खुले है पत्र पुस्तक के खुली आंखो ने बांचे हैं
ये दोनों उच्च जीवन ढालने के शुद्ध साँचे हैं।

हे सर्व शक्तिमान परमात्मन्! यदि मेरा मन पति सेवासे स्वप्न मे भी विमुख न हुआ हो तो मेरे बचनो पर नौछावर होने वाला यह अन्धा अपने नष्ट हुए जीवन और भ्रष्ट हुए नेत्रो को पुनः प्राप्त हो कर खड़ा हो जाय।

गोपाल—(जी उठता है) हरि ओम् तत्सत्। हयँ यह क्या हुवा

जाग उठी किसमत मेरी सोई हुई,
मिल गई फिर लक्ष्मी खोई हुई।

यह स्वप्न तो नहीं है—तुम देवी अनसूया ही हो ना?

अन—हां

गो०—और यह हमारे राजा रानी?

अन— हां

गो०—सच मुचके?

अन—हाँ सच मुच के

गो०—यह वृक्ष, यह पक्षी, यह सूरज?

अन—सब जाग्रत अवस्था मे देख रहे हो।

गो०—यह तो मांडव्य ऋषिका शाप लाभ दायक होगया! सच है

मिल भलो से कि भलो से न बुराई होगी
वह बुराई भी करेगे तो भलाई होगी।

हां यह तो बताइये—

किस चरन की रज मुमेरे की सलाई होगई
रोशनी आँखो की पहले से सवाई होगई।

राजा—इसके निमित्त देवी अनसूया का उपकार मानो

गो०—माता ! मैं आप के पवित्र चरणो मे …… …

अन०—वत्स ! इसकी ज़ुरूरत नही।

यह नही अवसर किसी उपकार या सन्मान का
क्योंकि यह अहसान बदला है तेरे अहसान का

रेवा ! सावधान हो देख तेरे पति की आखें तुझे सावधान देखने के लिये अभिलाषी हैं

रेवा—पति की आखें, ये मै ने क्या सुना (उठी) हर्ष स्वामी ! क्या मांडव्य ऋषि का शाप मिथ्या निकला ?

गो०—धीरज से धीरज से, ऋषियो का शाप मिथ्या नही हुआ करता परन्तु देवी अनसूयाके प्रताप से मैने दुबारा जीवन पायाहै और इन्ही की कृपा-दृष्टि ने मुझे समाखा बनायाहै

रेवा—माता तुम्हारी कृपा न होती तो मैं घुल घुल कर मर जाती

चुपके ही चुपके रोती होता यह हाल मेरा
उपकार का ऋणी है यह बाल बाल मेरा

[झुकना टेबला]

अंक ३ प्रवेश १

कैलास

पार्वती का गाना

किसी ने खूब उड़ाई है यह तो बे परकी
कि हो रही है वह रेवा लगाम दिनकर की
सतो ने कर दिया गोपाल गुप्त को ज़िन्दा
यह मौत क्या हुई इक सेविका हुई घरकी
पङ्खन के बल गगन में पक्षी उड़त असंख्य
मृत्युलोक की कामिनी उड़न लगी बे पंख
ज़बां हिलाई कि अन्धे को मिल गई आंखें
यह नीच नारि भी नानी बनी धनन्तर की

महादेव—तो क्या तुम्हे इस मे सन्देह है ?

पार्वती—सन्देह ? सर्वांश सन्देह

म०—मृत्युलोक में तो धूम मच रही है

पा०—धूम तो झूट की भी मच सक्ती है

म०—तो क्या कहने वाले झूट कहते हैं

पा०—कहने वालों का नील बिगड़ गया है। सूरज न हुवा चीनी कबूतर हुवा कि रेवा ने पकड़ा और दड़वे में बन्द कर

दिया फिर दिलमे आया तो फुर से उड़ा दिया अनसूया ने अन्धे गोपालको समाखा कर दिया, वाहवा यह तो अश्विनी कुमार से भी बढ़ गई। कल मिसरी रङ्ग लायगी तो मुर्दों को जिलायगी, कस्तूरी गरमायगी तो आग और चूल्हे के बगैर भोजन बनायगी। भला कोई बात ठैरी क्या आप की समझ में यह सम्भव है

म०— सिद्ध हो सब विभूतियां जिन को
वो तो सम्भव बनाएंगे इन को

पा०—मैं तो नही मान सक्ती, ब्रह्माजी और लक्ष्मीकांत स्वयं अनसूया की परीक्षा को जा रहे हैं तो आप भी उन के साथ जाइये और मेरा सन्देह मिटाइये

म०—तुमने तो एक बार कामदेव की मारफ़त परीक्षा करली अब हम बाक़ी हैं

[ब्रह्मा और विष्णु का आना]

ब्रह्मा— परवा नही महाराज चलिये, इन की ज़िद रह जायगी और रेवा के शाप की बात, और हमारे बरदान की लाज

विष्णु— इस का नाम होगा एक पन्थ तीन काज आइये महाराज

(सब गये)

अंक ३ प्रवेश २

बाग़

जुगल की तरफ़ वाटिका विनोद (गार्डनपार्टी)

दो तीन कहार बहँगियों में समान लाते हैं टोकरे कलसे थालियाँ ग्लासादि बरतन ६, ७ पटरे और आसन पीछे से कस्तूरी सर पर कलसा रख कर लाती है मृदंग उतरवाता है ।

मृदंग—ठैरो मुझे पेशगी अहसान करनेदो

[उतरवाने में बोसा लेलिया]

क०—यह क्या करता है कमबख्त ।

मृ०—भूक बहुत लग रही है ।

क०—तो भूक का मसाला इन टोकरों में मौजूद है ।

मृ०—नही ऐसा माल खाना चाहिये जो खाने से घटे नहीं ।

क०—वैद्य जी देख लेते तो ।

मृ०—तो क्या होता ।

क०—मैं तो शर्म के मारे मर जाती ।

मृ०—वह तो खुद दिनमे पचास बार मिसरी को चाटते रहते हैं

क०—उनका क्या है वह तो उनकी स्त्री ठहरी मैं क्या तेरी स्त्री हूं

मृ०—अब हो जाना, मैने पेशगी अहसान किया तुमने पेशगी आनन्द दिया यह दोनों तरफ़ से शादीका बयाना सगाई की रस्म अदा होगई।

क०—आज मिसरी के माँ बाप आने वाले हैं। (नीचे की बातें काम करते २ होंगी)

मृ०—इसी लिये तो जुगल ज्योतिषी ने दावत दी है कि वह बेटी के घर का खाना नहीं खाते

क०—मरने गये और रानी से इनाम लेकर आये अब भी दावत न खिलाते।

मृ०—जब तुम मेरी भार्या बन जाओगी तो मैं भी तुम्हारे माता पिता को कत्थक टोले मे दावत दिलाऊंगा।

क०—क्यों ख़याली खीर पका रहा है।

मृ०— नहीं प्यारी तुम आंखे मिला कर देखो वह वक्त करीब आरहा है।

क०—हट परे—

[मृदंग का तोड़ा]

क०—वैद्य जी से तो हरचन्द जोड़ी मिलाई मगर न मिली, अब मृदंग का ठेका ही सही बने; ज़िन्दगी बेताली हो जायगी।

फूटी हुई तक़दीर में लिक्खे नहीं चावल
काफ़ी हैं तसल्ली को फ़कत ज्वार के परमल।

मृ०—कुछ राज़ी तो मालूम होती है।

क०—चलो भोजन के लिये आसन तइयार हो गये।

मृ०—और दुलहा दुलहन के (लिये) भी आसन तइयार हो गये।

क०—जा जा मुं: धो रख।

मृ०—ईश्वर का धन्यवाद है कि आसन तइयार हो गये।

क०—हां

मृ०— हां क्या तुम भी तो कहो।

क०—क्या कहूं ?

मृ०—ईश्वर का धन्यबाद है कि आसन तइयार होगये।

क०—मैं तो नहीं कहती ऐसी बेहूदा बात।

मृ०—तुझे मेरी क़सम।

क०—नहीं।

मृ०—नहीं ?

क०—नहीं

मृ०—तो आयन्दा कैसे निबाह होगा

क०—हो या न हो

मृ०—तो यह ऐसी बात ही क्या है

क०—कुछ क्यों न हो

मृ०—इतनी हट

क०—हां (विद्याधर छुप कर देखते हैं)

मृ०—तुम्हे ज़ेबा नहीं

क०—मैं सब समझती हूं

मृ०—कस्तूरी

क०—मृदंग नाथ

मृ०—बस एकबार (अर्ध स्वर से)

क०—तू हज़ार बार कहे तो भी नहीं

मृ०—मेरी प्रार्थना पर दया करके

क०—यह प्रार्थना ही बौंगी है

मृ०—तब तो मै कहलवा कर छोडूंगा (हाथ पकड़ लेता है)

गाना

जारे ज़िद्दी हटीले गंवार
तेरे नख़रे मे तबला सितार
धागड़ ध्रिन्ना धिन्ना
तेरी दुम मे मिरचो का बघार
मुझे समझो भविष्य भरतार
कहदो कहदो कि आसन तय्यार हो गये
तो मैं भी भवष्य की हूं नार
न कहेगी यह मेरी पैज़ार
आख़िर है तो तू बेताली, मेरी जान ग़ज़बमे डाली
धा धा ताक ताक ता गिद् गिन गिद् गिन धा
धा किड़ान तिक धा

क०—मैं कह भी देती मगर ज़िद पर तो कभी न कहूंगी

मृ०—ज़िद तू करती है या मैं

क०—तू

मृ०—तू तो नही करती

क०—नहीं

मृ०—तो कहदे ईश्वर का धन्यवाद है आसन तइयार होगये

क०—यह तो मै कभी नही कहूंगी और कुछ कहलवाले

मृ०—नही यही

क०—यही नहीं

मृ०—मैं एक भविष्य भर्तार के तौर पर आज्ञा करता हूं कि प्यारी कहदे .....

क०—मैं एक भविष्य भार्या के तौर पर प्रार्थना करती हूं कि स्वामी मैं हरगिज न कहूंगी (चल दी)

मृ०—ओफ्फो इतनी सुलझाई मगर ताल मे न आई बड़ी ज़िद्दन बड़ी हटीली अगर मैं उस से कहता कि कहदे व:र्ने जान से मारदूंगा तो भी ह ...

[विद्याधर जाहिर होता है]

वि०—हरगिज न कहती, वह है ही बड़ी हटीली मुझे भी उचापत का परचा दिखाये वग़ैर जाने नहीं दिया था। भोजन की बहँगियां आगई ?

मृ०—जी हा आगई

वि०—अच्छा थालियां लगाओ

[मृदग का जाना]

ओहो वे कस्तूरी ऐसो ज़िद् की पूरी—थू तेरे जन्म में
ऐसा ही वह है मृदग निरा अड़बंग थू तेरे जन्म में

[थू के सामने मिसरी आजाती है]

मिसरी—किस के जनम में

वि०—तुम को नहीं, मैं तो ज़िद्दी आदमियों को कहता हूं

मि०—कौन है ज़िद्दी ?

वि०—कोई हो

मि०—सचमुच ज़िद् तो बहुत बुरी चीज़ है

वि०—फिर ज़रा ज़रा सी बात पर

मि०—अजी लानत भेजो ज़िद्दियों पर, हमें इन बातों से क्या काम

वि०—अगर ज़िद् मेरे सामने तेरा रूप बदल कर भी आये तो फ़ौरन कहूं कि थू तेरे जनम में

मि०—और दुराग्रह मेरे सामने तुम्हारा रूप बदलकर भी आय तो फौरन कह दूं कि—

वि०—थू तेरे जनम में, वास्तव में यह काम बहुत बुरा है

मि०—इसका परिणाम बहुत बुरा है

वि०—आज कस्तूरी और मृदंग नाथ दोनों इस ज़िद् का शिकार हो गये

मि०—क्या हुआ ?

वि०—मृदंग ने भोजन के लिये आसन तइयार करके कहा "ईश्वर का धन्यवाद है कि आसन तइयार हो गये"

मि०—अच्छा

वि०—फिर मामूली तौरसे मृदंगने चाहा कि कस्तूरीभी योंही कहे

मि०—अजब बात है

वि०—कस्तूरीने इन्कार किया, मृदङ्गनाथने इस पर इसरारकिया

मि०—निहायत बे बकूफ़ी

वि०—परन्तु प्यारी। मेरे नज़दीक यह कस्तूरीकी बेजा ज़िद थी, क्यों चुप क्यों हो गई ?

मि०—कह नही सकती कि दोनो मे किसकी ज़िद का पल्ला भारी था

वि०—मृदङ्गनाथ तो नम्रता से प्रार्थना करता था

मि०—परन्तु प्रार्थना बिलकुल वाहियात थी

वि०—लेकिन इतनी तुच्छ बात थी कि उससे इन्कार भौंडा मालूम होता है

मि०—और ऐसी बेहूदा बात पर इसरार भौंडा मालूम होता है

वि०—हमें इससे क्या, हम इस बात पर झगड़ना नहीं चाहते पराई लाठियोंसे लड़ना नहीं चाहते क्योंकि मुझे विश्वास है कि मैं तुझ से कहलवाऊं तो इस बात के लिये तू कभी इन्कार नहीं कर सकती। ठीक है ना ?

मि—मालूम नहीं

वि०—मुझे तो मालूम है

मि०—इन्कार तो नहीं कर सकती परन्तु बात में कुछ दम भी तो हो

वि०—दम हो या न हो जो कुछ मैं कहलवाऊं तू जरूर कह सकती हो

मि०—फ़र्ज़ करो कि मैं न कहूं?

वि०—यह हो ही नही सकता, मैं इस पर शर्त लगा सकता हूं

मि०—शर्त न लगाइये

वि०—चलो हम अभी इसकी परीक्षा करते हैं

मि०—नही नही जाने दो ऐसी परीक्षा के लिये

वि०—नहीं तुम कहो, ईश्वर का धन्यवाद है कि आसन तइयार हो गये

मि०—चलो रहने दो ऐसे बच्चे न बनो

वि०—नही प्यारी पतिव्रता धर्म को पहचान कर कहो, ईश्वर का धन्यवाद०

मि०—कहां पतिवृता धर्म को अटका रहे हो, धर्म क्या ठहरा एक दिल्लगी ठहरी

वि०—दिल्लगी नहीं मैं गम्भीरता पूर्वक कहता हूं कि तुम कह दो ईश्वर का धन्यवाद०

मि०—मैं तो नही कहती (जलदीसे)

वि०—नही कहती?

मि०—कहने का डर नहीं परन्तु कोई बात भी हो

वि०—तो कह दो ईश्वर का धन्यवाद०

मि०—निरा छिछोरपन

वि०—कुछ हो इसकी तरफ़ न देखो वैद्यजी की प्रार्थनाको देखो

मि०—तुम्हारी प्रार्थना नहीं यह मृदङ्गनाथकी हट है वह भी खेतामू से भरी हुई

तुम्हारा जिक्र क्या इसमें मुझे तो है खबर जड़ की
पडौसनके लगीथी आग इस घर मे भी आ भड़की

वि०—तो इसे दो शब्दो के जल से बुझा दो

मि०—बुझे क्योकर तुम तो इस पर घी डाल रहे हो वही बात फिर मुंह से निकाल रहे हो

वि०—मै आज्ञा तो नहीं करता हूं

मि०—प्रार्थना करते हो

वि०—हां ?

मि०—तो (कह दूं) खेर तुम प्रार्थना करते हो

वि०—तो जुरूर कह दोगी

मि०—नही नही मै नही कहती औरतें मुझे ताना देंगी कि ऐसी तुच्छ बात के लिये प्रार्थना कराई

वि०—मालूम हो गया तू मुझे इतना ही चाहती है जितनी उर्द पर सफ़ेदी

मि०—तुम भी मुझे इतना ही चाहते हो जितनी काली मिर्च पर सफेदी

वि०—मेरी प्रार्थना को मूर्खता से भरी हुई बताकर मुझे मूर्ख बच्चा बनाना चाहती है

मि०—और तुम मुझ से निरर्थक बाते कहलवाकर दूध पीती लड़की बनाना चाहते हो

वि०—तेरे जैसी तो मेरी लड़कियां फिरती है

मि०—तुम्हारे जैसा तो मेरा बाप लेटा रहता है

वि०—ऐसी हट

मि०—ऐसा आग्रह

वि०—सुरसा राक्षसी

मि०—असुरसा पती (या) रावण लंक पती !

वि०—आज पहला दिन है कि तू मेरा अपमान कर रही है

मि०—आज पहला दिन है कि तुम मेरी जान को आ रहे हो

(रोती आवाज शुरू)

वि०—इतनी सी बात पर ऐसे कठोर बचन मुंह पर आने लगे

मि०—(रोकर) इतनी सी बात पर मुझे आंसुओंमें नहलाने लगे

[मृदङ्ग आया]

मृदंग—चौधरी साहब बाई जी के माता पिता आ गये

वि०—आंखे पोंछ लो वो पूछ बैठे तो क्या कहोगी

मि०—नहीं मैं नही पोंछती ताकि वो भी तुम्हारा अत्याचार अपनी आंखों से देख लें

[बूढ़े और बुढिया का आना खामोश नमस्कार]

बूढ़ा—जीते रहो मेरे बच्चो जीते रहो

वि०—विराजिये

बु०—मिसरी तू उदास क्यों है

बू०—तुम क्यों फटे में पांव अड़ाती हो

बु०—वाह क्या अपनी बच्ची की राज़ी खुशी न पूछूं

बू०—वो दोनों खुद समझ लेंगे यहाँ "खाना ठण्डा होता है"

मि०—अम्मां मैं जानती हूं कि इस समय रोना अच्छा नहीं परन्तु मुझे ज़बरदस्ती ही · · · ·

बु०—क्यों लाला यह क्या बात है ?

वि०—तुम्हारी बेटी ने तो ऐसा मु.ह बनाया है मानो मैं ने इन्हें बहुत ही सताया है अब लो तुम्हीं इन्साफ़ करो मैं सारी कथा सुनाता हूं

बू०—कुछ ज़रूरत नही "खाना ठण्डा होता है" स्त्री पुरुष के मुआमिलेमे मु: खोलना बुरा है मु: खोलने के लिए तो ये···

वि०—परन्तु मैं न्याय चाहता हूं

बू०—इस की ज़रूरत नही खाना ठण्डा होता है

वि०—बात तो केवल इतनी थी कि मृदङ्ग

बू०—हम सुनना नहीं चाहते खाना ठण्डा होता है

बु०—ए उन्हें कहने तो दो कि कुछ समाधान हो

बू०—कुछ ज़रूरत नही खाना ठण्डा होता है

बु०— कहो लाला मै सुनती हूं

वि०— मृदङ्ग नाथ ने यह सामान तइयार करके कस्तूरी से कहा ईश्वरका धन्यवाद है कि आसन तइयार हो गये, और यही उससे भी कहलवाना चाहा, उसने इन्कार किया

मि०— अब यही बात ये मुझ से कहलवाते हैं और नाहक़ की ज़िद कर रहे है

बु०— बस यही तकरार है ?

मि०— हॉ आज यही जिद इनके भेजे मे आ घुसा।

वि०— और इनके भेजे मे नही आ घुसी

बू०— वाह वा तकरार की बुनयाद तो देखो बिलकुल फुसफुसी—

बेटी ऐसी बात पर भला कौन बेहूदा रोता है ये भी न समझी कि खाना ठण्डा होता है

बु०— और लाला तुम भी बड़े हट्टी हो एक जलील बातपर इतना अड़ना अच्छा नही है मेरी बच्ची अभी बच्ची है

बू०— रफ़ता २ समझ जायगी जिस तरह ये तुम्हारी अम्मां समझ चुकी है— इन्कार शब्द तो यह जानती ही नहीं "नहीं" इसके कोष मे ही नहीं है, अगर मैं इस से कहलवाऊ तो ये फ़ौरन कह दे ईश्वर का धन्यवाद०

बु० — बे मौक़ा ही

बू०— मौक़ा बे मौक़ा किस का, कह दो

बु०— बेवक़ूफ बनने के लिये

बू०— मैं भी कहता हूं

बु०—नही

बू०— मेरी ख़ातिर से

बु०— कभी नही

वि०— जब मां के ये लच्छन हैं तो बेटी के क्यूं न हो

बु०— जिस का सर न पाऊं उस बात के लिये जबान हिलाऊं

बू०— हयँ मेरे सामने और इन्कार

वि०— अजी ख़ाक डालो इस झगड़े पर मुफ्त की तकरार

बू०— ठैरो बेटा मैं बूढ़ा हूं मगर मेरा रौब बूढ़ा नहीं है

बु०— मैं भी बुढ़िया हूं मगर मेरी बुद्धी बुढ़िया नहीं है

बू०— मैंने अपनी जवानी में जब कभी नहाने का इरादा किया नहा कर छोड़ा, खाने का इरादा किया खा कर छोड़ा

ऐसे २ बड़े कामों के आगे इसकी बिसात ही क्या है एक बुढ़िया से बूढे जैसे चार शब्द कहलवा लेना बात ही क्या है देखो मिसरी की अम्मां, मै निहायत गम्भीरता से कहता हू तुम अपना अञ्जाम सोच कर कह डालो— ईश्वर का०

बु०—अब तुम भी विद्या धर बन गये

बू०—विद्याधर नही चाहे मुझे मृदंगनाथ बनना पडे मगर कहलवा कर छोडूं

बु०—बैठो बैठो बात लाये वहा की, निगोडे मर्दों की खोपड़ी भी औन्धी ही होती है

मि०—देखोना तीनों एक तरफ़ हो गये

बु०—तो हम क्या इनसे कम है तू जरा मेरी हिम्मत बँधाती रह मैं अकेली ही इनका नाक मे दम कर दूंगी

(जुगल जोड़ी आई)

[पहले दोनो जोडे रूठ कर पटड़ों पर उलटे बैठते है]

जु० –यह कौनसी दशा है कि एक साथ चार ग्रह वक्री हो गये

[जुगल वद्य जी का शाना पकड़ कर हिलाता हैं]

वि०—बस चली जा यहां से मक्कार

जु०—वाहवा दावत मे गर्मा गर्म सत्कार

(जुगलकी स्त्री मिसरी का शाना हिलाती है)

मि० –मुझे न छेड़ो मैं तुमसे कुछ नहीं कहती हूं मेरी जगह और कोई होती तो तुम्हारी डाढ़ी नोच लेती

जु० स्त्री—मेरी डाढ़ी– वाह तो कोई मज़ेदार घोटाला है

जु०—इनके सुसर से पूछता हूं कि हय कहाँ का गरम मसाला है

बू०—दूर हो चुड़ैल यहां से

जु० स्त्री०—एलो इधर से फटकार इधर से गाली

जु०—वो थे बूंदी के लड्डू ये हैं नमकीन सुहाली

मि०—कौन ज्योतिषी जी

जु०—आज ये क्या मनसूबे हुए हैं एक तरफ़ से सब एक रंगमें डूबे हुए हैं

मि०—आप ही इन्साफ़ कीजिये

वि०—हा कीजिये आप ही इन्साफ़ कीजिये

बू०—कोई ज़ुरूरत नहीं खाना ठण्डा होता है

वि०—अगर मैं इन से कोई साधारण बात कहलवाना चाहूं तो इन्हें क्या उचित है ?

जु०—यही कि फ़ौरन कहें

मि०—और वह बात बिलकुल बेवक़ूफ़ी से भरी हुई हो तो

जु०—उसका कहना बेवक़ूफ़ी है, परन्तु वह बात क्या है

वि०—मैं केवल अपनी इज़्ज़त के वास्ते, अपनी आबरू के लिये, शहर मे बढ़ी हुई प्रतिष्ठा के कारण, इतना कहलवाता हूं ईश्वर का धन्यवाद०

जु०—तो इसमें क्या बड़ी बात है मैं चाहूं तो जमना की मां से पचास दफ़े कहलवालूं। जमना की अम्मां कहो तो—"ईश्वर का धन्यवाद०"

जु० स्त्री०—मिसरी ने कहा है या नहीं ?

मि०—मिसरी की तो पैज़ार भी न कहे क्या मैं कस्तूरी से भी

गइ हुइ हूं जब उसीने न्हों कहा तो मै क्यूं कहूं

जु०—इन्होंने कहा या न कहा तुम कहदो "ईश्वर का धन्य"

जु० स्त्री—मै तो नही कहती। भगवान जाने इसमें क्या बात है किसीने नहीं कहा तो मैं क्यूं कहूं, इतनियोंमें मैं हो नकटी बनू

जु०—तुम्हें जमना की सौगन्द कहदो

जु० स्त्री मुझसे नही कहा जायगा

जु०- ऐस इसमे बात हो क्या है

जु०स्त्री—चाहे कुछ नहो पर कुछ न कुछ है जुरूर। सब पंचों मिल काजे काज, हारे जीते न आवे लाज

जु०—मैं भी कहता हूं

जु०स्त्री—तुम कहा करो तुम्हारी क्या है तुम दिनरात ऊन पटांग बकोगे तो क्या मै भी बकने लगूं

जु०—इतने आदमियो में मेरी इज्जत जाती रहेगी

जु० स्त्री—और इतनी औरतों में मेरी जो इज्जत जाती रहेगी उसका कुछ नहीं

बू०—बेटा जुगल! तुम्हारे आने से टोपी टोले में एक जवान और भरती होगया

बु०—जमना की अम्माँ तुम्हारे आने से भी घागरा पलटन मे एक सिपाही बढ़ गया अब हम इनसे दबने वाले नहीं हैं ये चार होगए तो हमभी चार होगये—देखें ये कैसे कहलवालें कि आसन

बू०— कि आसन तइयार होगये ।

सब मर्द—कह दिया, कह दिया, कह दिया ।

गाना

मियांमिट्ठू बने हो मगर अपने ही मुं· से
सितमगार दिलाज़ार जालसाज़ चालबाज़
बोल अपने ही मुं: से यह बात, देखी २ तुम्हारी यह घात
जाओ झूठो । तुम से जगमें है फ़साद
सब प्रमाद और विवाद, नरक है तुम्हारा ही प्रसाद
क्या खूब । तुम नरों मे हो निषाद, जैसे जल में कीच गाद
कर्कषा कठोर नाद, नरां नामुराद ।

(नारद का आना)

नारद—ठेरो, ठेरो, हठीलो ठेरो !

नारद है अब मध्यस्थ बातें प्रेम सम्बन्धी करो
संग्राम पूरा हो चुका विग्रह तजो सन्धी करो
देखा वह रेवा ने भी अपनी हट छोड़ दी सूरज निकल
आया तुम भी हट छोड दो

औरतें—मन तो हमारा भी यही चाहता है ... ... पर

नारद—हट करना मनुष्य का प्रतिष्ठा खोता है

बू०—यों समझाइये कि खाना ठंडा होता है

नारद—देखो संग्राम का आदि कारण ये आसन हैं इनको दंड
दो कि झटक पटक कर बिछा दो और अपने शरीर के

भार से दबादो
"ईश्वर का धन्यवाद है कि आसन तइयार हो गये"
जिसने सब से पहले यह महा वाक्य उच्चारा बस समझ
लो कि उसी ने मैदान मारा

चारों औ०—ये बात है तो—ईश्वर का धन्यवाद है कि आसन
तइयार होगये

नारद—ईश्वर का धन्यवाद है कि आठ के चार होगये (चले गये)

जु०—नारद मुनि कहां गये

बु०— भेद उनका किसी ने जाना है।
मौजे दर्या है क्या ठिकाना है॥

(भोला भूल जरासा लोटा सर पर रखकर खाता है)

भोला—देखती क्या है उतरवाओ (जुगल से)

(मिसरी का इशारों में गुप चुप
कुछ बातें भोला से फिर जुगलसे)

मि०—हां तुम उस वक्त क्या कहते थे? वह राज वैद्यका फैसला
हो गया?

जु०—(विद्याधर सुनते है) वैद्य जी खाना खालें बस फ़ैसिला
हुआ समझो

वि०—फैसिले के बच्चे यहां खाता ही कौन है तेरा खाना

बु०—इनको ज़बान ठण्डी नहीं होती और खाना ठण्डा होता है

जु०—विराजिये विराजिये (सब बैठे)

मि०—आप के लिये मैंने फीका दूध पाक ख़ास तौर पर अपने

हाथ से किया है तइयार

वि०—उपकार देवी उपकार, खाओ तो बेड़ा पार, भोला इधर आ, मेरी बगल मे आ

भो०—हिश्त। पहला दिन चुम्बन कर लिया अम नहीं बोली, अब बगल में आ ऐसा शर्म उतर गई, हमे बगलमे बुलाती है मिसरी क्या मर गई

वि०—भोला ले पंखा लेकर यहां बैठजा, मैं जो कुछ माल तुझे दूं निगलता रह, झलता रह

भो०—अच्छा

मि०—भोला वह छुरी साफ कर ली ?

भो०—तइयार है

वि०—छुरी की क्या जुरूरत है ?

मि०—यही फन्दों में कोइ गला चला हो तो काटने के लिये

वि०—गला चला काटने के लिये, ठीक है जब जहर काम न देगा तो छुरी काम देगी

जु०—यह पत्र बेली तो देखिये

वि०—देखली निहायत साफ़ है

जु०—खाकर देखिये

(पत्रबेली भोला को देकर

वि०—बड़ी स्वादिष्ट बड़ी स्वादिष्ट

खाली मुह चलाकर)

जू०—क्या बाज़ार बन्द हो चुका

वि०—हां सब खा चुके

बू०—तो बोलो शान्ति शान्ति शान्ति

(सब गये वि० भो० रहे)

वि०—मृदंगनाथ ! हाथ धुलवाओ सब के

भोला०—[पेट पर हाथ फेर कर] आज बड़ा हवन हुआ है

वि०—भोला ! आज तूने बड़ा अच्छा काम किया कि जो कुछ मैंने दिया वह खालिया

भो०—ऐसा काम तो अम रोज़ करने को तइयार हूं

वि०—ले उसके इनाम में ये दो रुपये

भो०—अमने ऐसा क्या काम किया कि तुमने इनाम दिया

वि०—अरे भई मेरे बदले जहर मिला हुआ खाना तूने खालिया यह क्या कुछ कम काम है

भो०—ज़हर मिला हुआ ? हैं ! जहर मिला हुआ अरे तेरा सास मर जाय तेरा सुसरा भी मरघट को जाय हाय हाय अब मेरा बाल बच्चा किसको आन को रोयगा

वि०—उनकी कुछ चिन्ता न कर भइया ईश्वर साक्षी है कि तेरे बच्चे सो मेरे बच्चे, तेरे स्त्री सो मेरी स्त्री उनका पोषण मैं करूंगा

भो०—अरे तेरी चिता जले मै तो मुफ्त मे हो मरूंगा मैं अभी दर्बार में जाऊंगी और तुझे सात बरसकी फासी कराऊंगी

वि०—अरे चुप २

भो०—चुप २ रे महामारो के रोग चौदह घड़ी, ये कैसा मुसीबत

आ पड़ी

वि०—अरे ,शोर न मचा एक काम कर औषधालय में लपका हुआ चला जा छोटी शीशी में जो बडी अलमारी है उसमें ज़हर उतार ने की दवा है उसे जाकर पीजा (भोला गया) मार डाला यूं नहीं तो यूं मार डाला जहर से बचे तो ज़हर खुरानी के जुम में फांसी पर लटकना पडेगा अरे इस दुर्गति से तो ज़हर खाकर ही मरना अच्छा था और रंडवा रहना उससे भी अच्छा

(मिसरी आई)

—चौधरी साहब सब काम ठीक हो चुका है, बस अब इस कागज पर कारण पूछे बग़ैर दस्तखत कर दो

—ताकि इधर राम राम सत्त हो, उधर जायदाद ज़ब्त हो, हँ हँ प्यारी दस्तख़त तो मैं करदूंगा परन्तु इस समय मेरा जी घबरा रहा है, दिल के साथ हाथ भी कांप रहे है अब तो मै लेटता हू

—अच्छा सुबह देखा जायगा आराम कीजिये (लिटाना सहारा देकर) सो जाइये नींद आजायगी तो सब शान्ति हो जायगी

—शान्ति हो जायगी, यह डाकन समझती है कि जहर चढ़ रहा है

—(छुरी उठाकर) कमबख्त भोला चीज को यूं फेंकता फिरता है जैसे अब इसका कुछ काम ही नही है

वि०—ज़हर का वार गया खाली, तो छुरी संभाली

मि०—हंय यह क्या बात है यह उछलते क्यों हैं शायद सन्निपात है। (अँगूठों के बल धीरे २ पास जाना)

वि०—हां दबे पाऊं आ रही है, दस्तखत करदो नहीं जान चली

मि०—हंय हय खैर तो है वैद्य जी क्या हाल है

वि०—बस हाल चाल हो चुका मैं क्षमा मांगता हूं देवी मुझसे भूल हुई लाओ वह कागज लाओ मैं अभी दस्तखत कर देता हूं

मि०—धीरज धरो, धीरज धरो

वि०—धीरज धरेंगे तो बे मौत मरंगे देर लगाएंगे तो मरघट जाएंगे लाओ अभी लाओ मैं अभी दस्तखत करता हूं

मि०—कोई भयानक स्वप्न तो नहीं देखा ?

वि०—स्वप्न नहीं जीते जागते मौत। मैं तो सुना करता था कि जम के कारखाने में दूत ही दूत हैं, परन्तु आज देख लिया कि दूतों की बहन दूतनी भी मौजूद है भूतों की बहन भूतनी भी मौजूद है बस लाओ कागज़ मैं अभी दस्तखत करके छोडूंगा

मि०—ये तो बोहरान शुरू होगया किसी दूसरे वैद्य को बुलाती हूं

वि०—लाओ कागज़

मि०—लाती हूं

वि०—अभी लाओ

मि०—कल देखा जायगा अबतो सो रहो

वि० नहीं अभी लाओ कि जम दूतों को रिश्वत दे डलूं वर्ना कल तक काम तमाम हो जायगा

मि०—बोहरान में कागज़ की धुन लग गई अब दस्तख़त किये बगैर चैन थोड़ा हो आयगा ये लीजिये (दस्तख़त किये)

वि०—लो अब तो संतोष है (सोगये)

मि०- इस से रुपया वुसूल करके राज्य वैद्य को भिजवाऊं

कि जी को शांती हो कुछ उधर से।

बुझाऊं आग उसकी आवे जर से॥

(गई और भाला आया)

भो०—ओ सत्य नासी सेठजी ओ नौकरों का फासी सेठजी इस दवा से तो मेरी छाती मे और भी आग भड़कने लगा

वि०—देखूं देखूं कौन सी शशी है? (देख कर) अरे गज़ब हो गया पागल तू क्या पी गया यह तो कुचले का अर्क़ है

भो०—कुचले का अर्क़ क्या होती है?

वि०—अरे यह भी एक जहर है

भो०—आ तेरा बेडा डूबे रे चौदह धड़ी मुझे क्या खबर कि तेरे घरमे सब जहर ही जहर भरी है अब मेरे बाल बच्चे तेरी जान को कैसे रोएंगे

वि०—उनकी चिन्ता न कर उन्हें मैं संभाल लूंगा तू आराम से मर जा

भो०—नहीं तूने मेरा नाश किया है मैं तेरा नाश करूंगी, तुझे साथ लेकर मरूंगी (दुपट्टा गलेमे डालना)

मि०—(अन्दर से) क्या शोर मचा रक्खा है रे भोला (आई)
हॅय यह क्या अरे यह क्या बेहूदा ऊधम मचा रहा है
बीमार आदमी को तुक्कल बनाकर उड़ा रहा है छोड़ इन्हें

वि०—जा जा चली जा यहां से दुष्टा डाकिनी, पातकी, घातकी,
खूनी

मि०—हाय हाय यह तो रोग बढ़गया, मुझे भी नहीं पहचाना
ज़बान पर भी बकवास का भूत चढ़गया

वि०—हत्यारी औरत, अपने दिल मे ज्यादा न इतराना, मैंने
चक्खा तक नही है तेरा ज़हरी खाना

भो०—अरे पर मैंने तो खूब पेट भर कर खाया है

मि०—तू क्यों बीच मे चिल्ला रहा है

भो०—परदेस मे लाकर अकेले को मार डाला, अब मैं न रोऊं
तो "हाय मेरे राजा" कहकर मेरी लाश पर कौन है रोने
वाला

मि०—क्या तुझे भी बौहरान आया है, तूने भी इन्हीं का झूटा
खाया है

भो०—झूटा नही सारा मैंने ही दबाया है

वि०—वो और ही थे जिनपर तेरा वार चलगया' खूनी औरत
विद्याधर तो तेरे पंजे से साफ निकल गया

मि०—खूनी खूनी कर रहे हो कोई सुनेगा तो सच समझेगा
ऐसी बहकी बातें न करो भला मैने किसका खून
किया है ?

वि०—किसका खून किया है ? ले गिनती जा, केसरी कलाल १ चीता चौहान २ मलूक मुट्टेवाला ३ रंडा तंबोली ४ शेरा घसियारा ५ और आधा विद्याधर साढ़ेपांच

मिसरी जोरसे हँस देती है

मि०—यह बात है ओहो अबमैं समझी प्यारे स्वामी तुम जो मुझे खूनी हत्यारी समझते हो यह एक घोटाला है बात यह है कि चीता मलूक रंडा—

वि०—ये सब तेरे पति थे या नहीं ?

मि०—थे, परन्तु ··

वि०—बस चुप रहो परन्तु वरन्तु के दाव में मैं नहीं आऊंगा तू तो मुझे मरघट पहुंचा चुकी अब ज़रा दमले मैं तुझे सूली पर लटकवा ऊंगा

नारद का आना

नारद—सावधान, सावधान, वैद्यजी सावधान

फंसो न वहम से फन्दे में इन ख़ियालों के
शिकार होते हैं लाखों इन्ही ख़ुयालो के

मिसरी की तरफ से बद गुमान न हो केवल एक गुप्त भ्रान्तिके कारण तुम समझ रहे हो कि यह खूनी है हत्यारी है वरन: यह तो बड़ी सच्चरित्रा सुशीला नारी है

वि०—मुनि राज ! शायद आपने भी इसके हाथ का खाना खाया है उसी चक्कर से चकराकर जहर को अमृत बताया है

ना०—नहीं इस चक्कर में न चकराओ

वि०—तो महाराज मेरा भ्रम मिटाओ

ना०—देखो बात यह है कि इसका पति केसरी कलाल बड़ा भला और सज्जन पुरुष था परन्तु गृहस्थ के बखेड़ों में कर्ज़दार हो गया, लोगों के तक़ाज़ों से घबराकर शहर ब शहर भागता फिरता था

वि०—थू तेरे जनम में, और वो था एक ही

नार०—हाँ एक ही, वह हरजगह अपना नाम और पेशा बदल बदल कर अपनी आबरू बचाता था

कस्तुरी, मृग का आना

वि०—तो वो चने सलौने चटाटे और दूधिया भुट्टे—

ना०—सब उसी का काम है

गाना—भजगोविदम् राह

वही केसरी करम का हारा फिरा दर बदर मारा मारा
वही चनों में वही भुट्टों में वोही तंबोली वही घसियारा

वि०—ओ हो यह बात है

ना०—हां तुम्हे मिसरी पर कोई शक न करना चाहिये

वि०—मैं तो शक न करता परन्तु इस गुमनाम खत ने मुझे भड़का दिया

कस्तूरी—(पाऊं में गिर कर) इस के लिये मैं आपसे मुआफ़ी चाहती हूं मुनिराज क्षमा करा दीजिये मेरा अपराध

वि०—तेरा अपराध ?

कस्तूरी—हां स्वार्थ ने मेरी बुद्धी पर ख़ाक डाला तो मैंने यह जमाल गोटे की गोली बनाली

ना०—डर नहीं तू वैद्यजी के साथ पुनर्लग्न करना चाहती थी यह कोई पाप बुद्धी नहीं थी अपने कल्याण का यत्न तो देवता भी किया करते हैं फिर मनुष्य का क्या गिला है

चि०—बलातो आई थी मगर खैर से गुज़र गई

भो०—अरे पर भोला भूत तो मुफ्त में मर गई यह शीशी की बला तो मेरे पेट मे उतर गई

वि०—दिखाना दिखाना- अरे भोला ! ले तू तो मरते मरते जीगया, कुचले का अर्क़ नहीं हाज़िमे का अर्क़ पी गया

भो०—हैं ! तो क्या अब मरने की ज़रूरत नही है ?

वि०—नहीं अभी न मरना क्योंकि कफ़न बहुत मेहगां हो रहा है

जुगल का आना

जु०—लो भई ये राज वैद्य से मुआमिला तय पा लिया (प्रणाम महाराज) पांच हज़ार देकर उस से ला-दावा लिखा लिया

मि०—मैने इसी फैसिले के लिये दस्तखत कराये थे

वि०—क्या कहना है बड़ी होशयार मानो प्रबन्ध कारिणी सभा की मंत्री है

जु०—बल्कि भविष्य जीवन की जंत्री है

मि०—मुनिराज ये आप ही का दया हुई कि मेरा मिथ्या कलंक धुल गया

वि०—जो भेद मुझे सता रहा था वह खुल गया इस हर तरफ़ की खुशी में नारद जी के चरनों को सीस पर चढ़ाना चाहिये

भोला— आप का जैसा खुशी सेवा को हाज़िर दास है
पास हैं इनके चरन भी सीस भी यह पास है

[टाँगों में सर देकर नारद को गर्दन पर चढ़ा लेता है]

वि०—बोलो चटपटे मसाले की जय, बोलो भुट्टे वाले की जय

जु०—बोलो गड़बड़ घोटाले की जय,

(कांधे पर चढाए हुए लेजाते हैं)

कस्तूरी—हां स्वार्थ ने मेरी बुद्धी पर ख़ाक डाला तो मैंने यह जमाल गोटे की गोली बनाली

ना०—डर नहीं तू वैद्यजी के साथ पुनर्लग्न करना चाहती थी यह कोई पाप बुद्धी नही थी अपने कल्याण का यत्न तो देवता भी किया करते हैं फिर मनुष्य का क्या गिला है

वि०—बलातो आई थी मगर खैर से गुज़र गई

भो०—अरे पर भोला भूत तो मुफ्त में मर गई यह शीशी की बला तो मेरे पेट मे उतर गई

वि०—दिखाना दिखाना- अरे भोला! ले तू तो मरते मरते जीगया, कुचले का अर्क़ नही हाज़िमे का अर्क़ पी गया

भो०—हैं! तो क्या अब मरने की ज़ुरूरत नही है?

वि०—नहीं अभी न मरना क्योंकि कफ़न बहुत मेंहगा हो रहा है

जुगल का आना

जु०—लो भई ये राज वैद्य से मुआमिला तय पा लिया (प्रणाम महाराज) पाच हज़ार देकर उस से ला-दावा लिखा लिया

मि०—मैने इसी फैसिले के लिये दस्तखत कराये थे

वि०—क्या कहना है बड़ी होशयार मानो प्रबन्ध कारिणी सभा की मंत्री है

जु०—बल्कि भविष्य जीवन की जंत्री है

मि०—मुनिराज ये आपही की दया हुई कि मेरा मिथ्या कलंक धुल गया

वि०—जो भेद मुझे सता रहा था वह खुल गया इस हर तरफ़ की खुशी में नारद जी के चरनों को सीस पर चढ़ाना चाहिये

भोला— आप का जैसा खुशी सेवा को हाज़िर दास है
पास हैं इनके चरन भी सीस भी यह पास है

[टाँगों में सर देकर नारद को गर्दन पर चढ़ा लेता है]

वि०—बोलो चटपटे मसाले की जय, बोलो भुट्टे वाले की जय

जु०—बोलो गड़बड़ घोटाले की जय,

(कांधे पर चढ़ाए हुए लेजाते हैं)

अंक ३ प्रवेश ३

अत्रि आश्रम

अनसूया के साथ तीन फकीर आते हैं

विष्णु— यह श्रद्धा देखी नहीं देखा सब संसार
तुमसे कोई सीख ले अतिथी का सत्कार

ब्रह्मा—हम कभी बरसों में एक बार भिक्षा को निकलते हैं परन्तु गृहस्थियों में हमें भोजन कराने वाला नहीं मिलता

महादेव—देवी! तुम भी खूब सोचलो यदि तुम अपने आत्मा में पूरा पूरा साहस पाओ तो हमें जिमाओ

अन०—महाराज! मैं कोई कारण नहीं देखती कि आप यहाँ से निराश जाएं भोजन की सब सामग्री मौजूद है आप अपनी रुचि के अनुसार भोजन पाएं। आइये कुटीपर आइये

अ०—पदार्थों की तो परवा नहीं सब से काम चल सक्ता है

विष्णु— शाक हो पान फूल हो कुछ हो
कन्द हो फल हो मूल हो कुछ हो

परन्तु भोजन कराने की क्रिया ज़रा कठिन है

अन०—महात्माओं का प्रताप कठिनताओं को खो सक्ता है आप आज्ञा करें सब कुछ प्रबन्ध हो सकता है

विष्णु—हमें सन्देह है कि हमारी शैली के अनुसार तुम हमें

शांत न कर सकोगी

अ०—इस से बहतर है कि हमें जाने दो इस में दोनो पक्ष का मान रह जायगा

अन०—आप कहे बग़ैर ही चलदेंगे तो मेरे दिल में भी अरमान रह जायगा, कृपा करके कहिये तो सही

महा०—देखो हमसे कहलवाती हो तो सावधान होकर कहलवाओ वर्नः साफ़ कहदो कि महाराज मेरे बस का नहीं है यहाँ से जाओ

अन०—साधुओं की दया से यहाँ पदार्थों की कमी है न अभाव, फिर किस तरह कहदूं कि यहाँ से जाओ। आज्ञा कीजिये फिर देखें उसका पालन होना है या नहीं

विष्णु०—तुम्हारी ऐसी ही श्रद्धा भक्ति है तो खाने का पदार्थ जो मौजूद हो लेआओ परन्तु सरसे पाउं तक वस्त्र विहीना दिगम्बरा होकर भोजन कराओ

अनु०-हैं हैं ये क्या कह गये! महात्मन्! आप क्या कह गये! केवल एक ज़बान आपके बस में नहीं है तो दस इन्द्रियां, किस तरह बसमें आयें गी?

अ०—हम पहले ही कहते थे कि यह काम तुम्हारे बसका नहीं है

अन०—कैसी लज्जा की बात है

महा बीभत्स और नंगे वचन ऋषियों के तुंडों से
गरल की धार बह निकली यहां अमृत के कुंडों से

महा०— कार्य कठिन है तो इंकार करदो हम चले जाएंगे

अन०—कुलांगना तो क्या ऐसी भिक्षा वेश्या भी स्वीकार नहीं कर सकती, यदि मुझे नंगी देखना चाहते हो तो अपनी दूध-पीती लड़की बनालो वर्न ऐसे शब्द मुंः से निकालो तो शर्म का मुक़ाम है

ब्र०—देवी इसमें क्रोध का क्या काम है

अन०—साधु हो या बम मगीं

वि०— दान देना न देना यजमान की श्रद्धा पर निर्भर है। यहां से चलदो

महा०— हमारे हट योग के अनुसार हमें तृप्त करना तेरी शक्ति से बाहर है तो यह लो हम जाते हैं

अन०—ठैरिये विराजिये मैं नग्न होने के लिये ज़रा विचार करलूं

(बैठ गये)

एक समय मेरे पति का रूप धारण करके एक आया था आज तीन हैं ज़रा जांचना चाहिये कि ये कौन कला प्रवीन हैं

[ध्यान धरती है]

हे घट घट वासी प्रभो! अन्तर्यामि अनूप!
कृपया मुझे दिखाइये इनका खरा स्वरूप

ब्रह्मा, विष्णु, महेश का नजर आना]

आहा! ब्रह्मा, विष्णु, महेश मेरी परीक्षा का आये हैं, अहो भाग्य! अहा भाग्य!

विधि भवन, कैलास और वैकुंठ यह बन होगया
तीन देवो का जो घर बैठे ही दर्शन होगया
ब्रह्माजीने हमे वर दिया है कि एक दिन त्रिदेव तुम्हारे
पुत्र भाव को प्राप्त होगे क्या वही समय आगया

ब्र०—माता हम कब तक प्रतीक्षा करते रहें ?

अन०—माता, माता, क्या तुम सचमुच माता कहते हो कहो
कहो समय आगया है तो कहो परन्तु तोतली ज़बान से
कहो मै भी तुम्हे भगवन् भगवन् नहीं कहती

वि०—माता हमारी भिक्षा का क्या उत्तर है

अन०—आहा माता:—

बड़े ही प्रेम से तुमने यह माता शब्द उच्चारा
बडा सुन्दर बड़ा मनहर बड़ा मीठा बडा प्यारा
मेरे बच्चो बहुत मुशकिल है अब माता से छुटकारा
मेरी छाती मे लहराने लगी है दूध की धारा
बनो बालक मेरे माता हि माता रात दिन बोलो
पिलाती हू मै तुमको दूध तुम नन्हा सा मुं खोलो

[अनसूया के स्तनों से दूध का फव्वारा उड़ता है और ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों बालक बन जाते है उनके मुः पर दूध की धार गिरती है 'लाइट' लक्ष्मी सावित्री पारवती तीनों आकाशमें अगुप्त बदरों दिखाई देती हैं]

पटाक्षेप

अंक ३ प्रवेश ४

जंगल

[गोपाल और रेवा दाखिल होते हैं]

गो०—यह भी न सही, उस समय पर विचार करो जब प्रलय काल मे प्रकृति के परमाणु अलग अलग पड़े हुए थे
न भौतिक पिंड था कोई न पृथ्वी थी न यह जल था
न अग्नि और वायू थे न यह आकाश मंडल था

रे०—सत्य है केवल सत, रज, तम, की साम्यावस्था थी

गो०—तो वहां परमाणुओ को पकड २ कर किसने मिलाया था
कौन उस सूक्ष्म पदार्थ को स्थूल रूप में लाया था

रे०—वही जगन्नियंता जगदाधार

गो०—तो वह काम दुशवार है या एक मुर्दे को जीवित कर देना, जब कि शरीर के तमाम अवयव बने बनाए मौजूद थे

रे०—प्राणेश ! यह तो आपने ठीक समाधान किया

गो०—नक्षत्र, चन्द्र, और सूर्य जैसे अद्भुत पिंड बनाने वाले ने अनसूया की आड़ से मुझे जिला दिया, अन्धे को समाखा बना दिया तो क्या बड़ी बात है

रे०—कोई बड़ी बात नही, आपके कथनानुसार यह तो बना बनाया शरीर मौजूद था जहॉ कुछ भी बना हुआ नहीं होता वहां भी तो वही बनाता है, माता के गर्भ मे अनेक

रंग रूप की मूर्तियां बना बना कर अपनी कारीगरी दिखाता है

गो०—यही सोचलो

गाना

अंग अंग में रंग है न्यारा, पुतला क्या ही प्यारा प्यारा।
नज़र न आयो, कौन बनायो किन ख़ैराद उतारा। पुतला०
कारीगर जहां घड़ने बैठा वहां घोर अँधियारा।
दीप-हीन है अन्ध कुठरिया सूरज चन्द्र न तारा। पुतला०
विषय ज्ञान पायो नारायण मन इन्द्रिन के द्वारा।
रंग भूमि पर लगा थिरकने होते ही गुप्त इशारा। पुतला०

[गाने के मध्य में अनसूया का आना]

अन०—यह एक पुतला ही नहीं ईश्वर का रचा हुआ पत्ता २ विचार कोटि में रखने योग्य है क्या कोई कह सकता है कि घोड़े के सुम बन्द और बैल के खुर चिरे हुए क्यों हैं, कोई बता सकता है कि भैंस की नाक में बाल क्यों नहीं पैदा किये गये

गो०—ये सब बात विचार शील पुरुषों के लिये हैं

सोच कर ज्ञानी पुकारा मैं विचारा कुछ नहीं
मूर्ख बोल उठा कि यह ब्रह्मांड सारा कुछ नहीं

[मांडव्य ऋषि का विक्षिप्तावस्था में आना]

मां०—तुम कहते हो कि दस, हम कहते हैं कि एक, बाक़ी शून्य

रे०—यह कौन है

गो०—कोई दीवाना है

मां०—ईश, केन, कठ, प्रश्न भी एक, बाक़ी शून्य

गो०—उपनिषदों को कह रहा है

मां०—दशा एक, बाक़ी शून्य, इन्द्रियां एक बाक़ी शून्य, धर्म के लक्षण एक, बाक़ी शून्य, तू भी एक, मैं भी एक, यह भी एक बाक़ी सब शून्य

गो०—दीवाना है परन्तु दस दस को एक ही बाट से तोल रहा है

अन०—तोलता बोलता कुछ नहीं यह अभ्यासी का अभ्यास बोल रहा है

आनन्द रूपो निज बोध रूपो दिव्य स्वरूपो बहुनाम रूपः
तपः समाधौ कलितो न येन वृथागत तस्य नरस्य जीवितं

गो०—है कोई विद्वान जो विक्षिप्त हो गया है

रे०—आवाज़ तो माडव्य ऋषि की सी है

मां०—जल पर काई कहाँ से आई, अन्धे की लाठी से

[अनसूया नजदीक आकर देखती है]

अन०—वही हैं

मां०—पाऊं भी नंगे सर भी नंगा, निकल पड़ी लोटे से गंगा

अन०— समझ लेना नहीं आसान दीवानो की बानी का
झलकता हैं मगर कुछ रंग अपबीती कहानी का

मां०— लाठी भी तेरी निराली हैं लोटे भी तेरे निराले है
आखो वाले तो अन्धे है और अन्धे आंखों वाले है

मां०—तुम कौन हो ? तुम्हारे साथ कोई अंधा तो नहीं है तुम्हारे हाथ में किसी की लाठी तो नहीं है

अन०—महाराज कुछ भय न करो

[मांडव्य अपना एक जूता हाथ मे लेता है]

मां०—हे मेरे पवित्र कमण्डल तू सूखा पड़ा है
सूराख़ तुझ में हो गये पानी निकल गया

गो०—मुनिराज ! आप को क्या दुःख है?

मां०—तप शार्दूल की तरफ देखो वह जलती होली बुझ रही है अपने हाथ सेक लो

अन०—महाराज यूं हाथ जोड़कर उस ज्योति स्वरूप का ध्यान करो वही इस अन्धकार को दूर करेगा

मां०—तुम कहाँ बोल रहे हो कितनी दूर हो समीप आजाओ क्या तुम्हारे हाथ मे कोई दीपक जल रहा है

अन०—रेवा ! तेरे शाप से इनका ज्ञान भ्रष्ट हुआ है

रे०—माता मुझे स्वयं इनकी दशा देख कर दुःख हो रहा है

अन०—तो अब तेरा कर्तव्य क्या है

रे०—मैं उसी का पालन करती हूं

[खामोश प्राथना, बाजे पर धीमी गत बार होकर, मांडव्य के सरमें चमक]

मां०——हॅं, जाता रहा अंधेरा अब हो गया उजाला
डूबा था मै भॅवर में आकर मुझे निकाला
कौन देवी अनसूया और यह कौन सती रेवा, अनसूया

रेवाम्बा नमः

रे०—ऋषिराज मैं अपने अपराध के लिये क्षमा चाहती हुई प्रणाम करती हूं

मां०—देवी! हम तो ऋषिराज बने अपना जीवन वृथा खो रहे थे, अभिमान में अंधे हो रहे थे तुमने हमारी आँखें खोल दीं

जिन की हम को पहचान न थी उनको अब तो पहचान गये
अबलों नहिं काहु को मान सके अभिमान गया तब मान गये

रे०—कुछ खोकर ही बुध पावत हैं अब धन्य हुए यदि मान गये
तुम वो नहिं हो दिल मान गया फिर भी अपनी हट ठान गये

मां०—सती स्त्रियां किस श्रेणी में विराजमान हैं मैं अब देख सकता हूं

विमला कमला अनुरूप सती सुखदा गिरजा अवतार सती
रहजाय सदाशिव का शव ही शिव में न रहे जु इकार सती
जिस के सर पे कर यूं धरदे करदे भवसागर पार सती
ऋषि की मुनि की कवि कोविद की सब की गुरु है जग नार सती

अन०—आइये आप को विचित्र बालकों के दर्शन कराऊं

गो०—और बालक भी ऐसे बालक कि आपने कभी न देखे हों

मां०—वो कैसे ?

गाना

जग पालक बालक आन बने शिशु रूप दया कर धार लियो
पलमें पलने बिच आन पड़े जब मात सप्रेम पुकार लियो
मन जाँच लियो छल नेक नहीं जब निर्मल नेह निहार लियो

तब तो सतने रजने तमने गुण तीनहुने अवतार लियो
भक्त जनकी टेर सुन कर आये है, जैसी इच्छा वैसे दर्शन पाये हैं
कच्छ हो या मच्छ या नरसिंह हो, वो किसी आकारसे शरमाये हैं
जगपालक०

[जाना सबका]

अंक ३ प्रवेश ५

इन्द्रासन

(इन्द्रका दर्बार, अप्सराओं का नाच गाना)

कैसे कैसे सखी ! रसिया हैं झोके पवन के
धीरे धीरे खोल दई छाती मेरी, खिसकाय दई चुनरी।
कर आलिङ्गन मुख का चुम्बन,
मगमें लई मोरी लाज आज बिनकाज
हटके झटके लटके ये बाल, चट चूम गाल सटके कुचाल
इन से बचके जो भागे तो कहा को कोई भागे
जाओ जिम्न रुख जाएं ये आगे आगे। कैसे०

[गाने की समाप्ति पर इन्द्रासन डोलता है
इन्द्र नीचे उतर पड़ता है

इ०—हैरो २ यह क्या हुआ !
देवता०—क्या है महाराज

इ०—यह किस गुप्त आघातने मेरे तख्त के पायो मे से स्थिरता को अलग निकाल दिया, क्या वायुने पुंजी भूत होकर मेरे सिहासन को उछाल दिया

देव०—बड़े आश्चर्य की बात है

„ —क्या कोई तपस्वी आपके सिहासन को लेने के लिये भाँप रहा है

इ०—देखो देखो अभी तक कांप रहा है

देव०—यह तो किसी विचित्र घटना की सूचना है

(नारद का प्रवेश)

ना०—भज गोविदम् भज गोविदम्०

इ०—नारद जी महाराज आपका आना शुभ हो

ना०— कर रहा है चितवन क्या आज सुरमंडल नया
कुछ नज़र आता है इन्द्रासन में कोलाहल नया

इ०—आप का अनुमान यथार्थ है

यम०— हो गई कोई वारदात नई ।
कुछ न कुछ है ज़ुरूर बात नई ।।

ना०—आखिर क्या हुआ ?

यम—महाराज आज किसी न किसी अद्भुत घटना का शकुन बोल रहा है

इ०—अनायास ही मेरा सिहासन डोल रहा है

(तीनों देवियों का आना)

तीनों स्त्रि—क्या सिहासन डोल रहा है ?

लक्ष्मी—डोलना ही चाहिये

पा०—आखिर यह देवराज की गद्दी है इसे गूढ़ मंत्र का अर्थ खोलना ही चाहिये

इ०—तो देवियो ! यह क्या कहना चाहता है ?

तीनों—जो कुछ हम करना चाहती हैं

पा०—जो कुछ हमारे मन की भावना है यह सिंहासन कम्प उसकी प्रस्तावना है

इ०—मुझे आज्ञा कीजिये मैं सेवा को तइयार हूं

सा०—हम क्या कहे हमें तो कहते भी शर्म मिली हंसी आती है

ल०—नारद जी महाराज से पूछिये

ना०—यूं बात कहते शर्माओगी तो दूध पीते बाल पतियों के सामने कैसे जाओगी

पा०—तुम्हारे उपहास का क्या गिला है। कहलो तुम्हें भी अवसर मिला है

ना०—देवराज ! बात यह है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीनों देव अत्रि ऋषि के आश्रम में दूध पीते बच्चे बन कर गहवारे में झूल रहे हैं

इ०—अच्छा क्या वह वरदान का समय आ गया ?

ना०—याद रक्खो यदि वो पालना और भी लम्बे झोटे खायगा तो तुम्हारे सिंहासन को तो क्या सारे ब्रह्मांड को अपनी गति में बांध कर हिंडोले की तरह हिलायगा

इ०—तो अब क्या उपाय किया जाय

ना०—उपाय तो बहुत सुगम है

इ०—क्या ?

ना०—यदि परीक्षा की कोई श्रेणी बाकी न रही हो तो यह तीनों देवियां अपनी सासू जी के पाऊं पड़ें और अपने अपने पति को प्राप्त करें

ल०—महाराज आपकी ज़बान पर सीधी तरह चलने में क्या शब्दों के तलवे छिलते है

ना०—देवियो ! पतियो के दर्शन तो सास की कृपा-कोक से ही मिलते हैं

इ०—इनकी सास कौन है ?

ना०—सास ? वही अनसूया इन बहुओं की परीक्षा का भाजन जिसके तीनों बालक हैं तीनों देवियों के साजन

पा०—नारद जी महाराज आप हमे स्वामियो के मिलाप का उपाय बताते है तो उपकार मानकर हम इस चुभती हुई पवित्र छेड़ के आगे सर झुकाते हैं

लाभदायक है तो हम सहती हैं टेढ़ी बात भी
दूध वाली गाय है खाएंगे इसकी लात भी

ना०— सास ही के पास बन जायेगी बिगड़ी बात भी
दूध भी मिल जायगा जब खा चुकी हो लात भी

अंक ३ प्रवेश ६

अत्रि आश्रम

[अनसूया तीन बालकों को पालने में लोरी गाकर सुला रही है]

गाना

आजा निंदिया अलबेली, तू चुपके चुपके झूमके।
पुतली हैं तोर सहेली कोमल केलि,
इनसे कर अठखेली ओ नींद नबेली।
इनके नैनों बिच तू घुलजा, छुपती क्यों है खुलजा खुलजा।
इत उत फिर न अकेली। आजा०

(तीन देवियों का फ़कीरी रूप में आना)

अन०—योगिनियो! प्रणाम

तीनों—कल्याणमस्तु

अन०—तीनों तापों को शमन करने वाली तीनों मूर्तियां कहां से पधारी है

ल०—हम तुम्हारे ही पास एक विशेष भिक्षा मांगने आई हैं

अन०—देवों की भिक्षा तो देखली अब देखिये देवियां क्या मांगती हैं। ईश्वर करे कि मैं वह विशेष भिक्षा देकर भाग्य शालिनी बन सकूं

सा०—माता हमारी बड़ी विचित्र आशा है

अन०—क्या बाले बलम के दर्शनों की अभिलाषा है। आज्ञा
कीजिये क्या इच्छा है

पा०—जैसा तुम्हारा अतिथि सत्कार ला जवाब और उदारता
बे मिसाल है ऐसा ही अनोखा हमारा सवाल है

अन०— हम भी हैं कुछ अनोखे और भाग भी अनोखे
आते हैं इस कुटि पर भिक्षार्थी अनोखे

पा०— उधर तो दिल है दाता का इधर भिक्षा हमारी है
बड़े दानों हैं लेकिन इनमें देखे कौन भारी है

अन०—अवश्य वही हैं। मेरा भारी पन तो इसी मे हो गया कि
जो शक्तियां तीनों लोक के वास्ते अन्नपूर्णा का अवतार हैं
वो अपने तुच्छ भिकारी के सामने भिक्षा को तैयार हैं

ऐसे महा दानी है जो अपने भिकारियों की
झोलियाँ भरें हैं नित झोली छीन छीन के
पील का भी पेट भरे पालत पिपीलिका भी
सिन्धु मे भी पोषक है नक्र मच्छ मीन के
जैसे भाग जागे राजा बलि के पताल बीच
ऐसे भाग जागे आज अनसूया दीन के
कैसा बलिके समान वा से तिगुना है मान
वहाँ पग एक के थे यहां तीन तीन के

सा०—देवी हमे पहचानने मे शायद तुम्हारा लक्ष्य भूल रहा है

अन०—हां दो में से एक पक्ष भूल रहा है

ल०—नहीं तुम्हें हमारे भिक्षुक होने में अवश्य सन्देह है

अन०—जिन्हे सन्देह होता है वह परीक्षा किया करते हैं मुझे
सन्देह होता तो मै भी परीक्षा करती

पा०—तो क्या तुम्हारी दृष्टि मे हम भिक्षा मांगने वाली नही हैं

अन०—मेरी दृष्टि मे तो तुम जो कुछ हो वही हो यद्यपि तुम्हारे
अंग पर पड़ा हुआ कपड़ा तुमको छुपा रहा है परन्तु
यह इतना बारीक है कि मुझे इसके अन्दर का रूप नज़र
आ रहा है

पा०—कपड़े के अन्दर छुपा हुआ शरीर नज़र आ रहा है, तो
शरीर के अन्दर छुपा हुआ मन और मन के अन्दर छुपी
हुई इच्छा भी ज़ुरूर नज़र आ रही होगी

अन०—तुम्हारी इच्छा ऐसी नहीं है कि छुपी रहे अन्दर तो कोई
शङ्का होगी जो निकलने का रास्ता भूल रही है वर्नः
तुम्हारी इच्छा तो यह देख लो पालने मे झूल रही है।
देखो देखो नज़दीक न आना मेरे नन्हो को नज़र न लगाना

सा०—त्रिलोकी जिनकी नज़र में है उनको नज़र लगेगी

अन०—बहनो बुरा न मानना अजनबी आदमी से बच्चे डरा
करते हैं

ल०— नही है अजनबी इनसे कोई जन्तु जमाने का

पा०— सदा की हम तो परिचित हैं तो भय कैसा डराने का

अन०—क्यो यही है ना तुम्हारी इच्छा

सा०—माता पतिव्रता स्त्रियो के सामने किसकी चल सकती है
इनकी दिव्य दृष्टि तो पत्थर के पार निकल सकती है

ल०—हम दामन फैला फैला कर आपसे यही भिक्षा मांगती हैं कि इन बालकों को हमें दे दीजिये

अ०—वाह अच्छी भिक्षा मांगी कि दाता का दम निकाल दिया पास आते ही कलेजे पर हाथ डाल दिया देवियो और कुछ मांगो यह तो मुझे बहुत प्यारे हैं

पा०—और कुछ हमें नहीं चाहिये

अ०—भला ऐसी भिक्षा कौन मंजूर करेगी अपने छोटे छोटे बालकों को कौन सी माता है जो कलेजे से दूर करेगी

पा०—इन्हें छोटे न समझो ये तो दुन्या में सब से बड़े हैं केवल तुम्हारी ममता का आदर करने के लिये चुपचाप पालने में पड़े हैं

अ०—यह सच है अगर ये छोटे होते

तीनों—तो

अ०— हमारे जैसे छोटों से अकड़ते और तनते ये
बड़े सब से न होते तो कभी छोटे न बनते ये

ल०—छुटपन का ख़याल नहीं है तो दे दीजिये

अ०—वाह मैंने तो तुम्हारी बात बड़ी की है
कि ये छोटे नहीं हैं वास्तव में हां बड़े हैं ये
मगर अबतो हमारे पालने में आ पड़े है ये

सा०—पालने में आ पड़ने पर भी हम को तो ये बालक नहीं दिखाई देते

अन०—तुम्हें बड़े दीखते हैं और मुझे बालक, इसका कारण यह है

रिश्ते हैं और और तो दोनों की चाह और
मेरी नजर है और तुम्हारी निगाह और

पा०—हमारी निगाह पर ही अवस्था का दारमदार है तो देने में क्यो इंकार है

अन०— कहीं आँखें किसी की दूसरों के काम आती हैं
वही देखूंगी मै तो जो मेरी आंखें दिखाती हैं
यह माना हैं बड़े संसार से दुन्या के पालक हैं
मगर मेरी निगाहो में वही बालक के बालक हैं

अभी तुम्हारे काम के नहीं हैं बड़े होने दो जब बड़े हो जाएंगे तो मै खुद तुम्हे ढूंढती फिरूंगी

ल०—अच्छा हम इन्हें बड़ा बनालें तो दे दोगी

अन०—गा बजा कर बधाइयों के साथ। यह लो मैं तुम्हारे प्रयोग को एकाँत का अवसर देती हूं (गई)

ल०—ये तो तीनों एक रूप हो रहे हैं

पा०—इसलिये कि एक के तीन रूप हैं

सा०—अब बग़ैर पहचाने किस को पुकारें

ल०—हम तो नही पहचान सकेंगी परन्तु ये हमारी आवाज़ और हमें पहचान सकेंगे

सा०—प्राण पति ! यह बहरूप छोड़कर स्वरूप धारण कीजिये

(बच्चे का रोना)

ल०—ये तो रोने लगे। हे रमा रमण क्या पालने को शेष शय्या समझकर यहीं रमोगे ? (रोना)

पा०—बाले बलम जी !

धाम कोई भी न था कैलास से प्यारा तुम्हें

भागया आकर यहाँ छोटा सा गहवारा तुम्हें (रोना)

अन० —(आकर) कहिये इन्हे कल्प-वृक्ष और पारिजात के झोंके पसन्द हैं या इन वन वृक्षो के ? मंदाकिनी का जल पसन्द है या मेरे कमण्डल का ?

पा०—

थके हमतो इनको मनाते मनाते ये रूठे हैं ऐसेकि मनते नहीं हैं

बने हैं कुछ ऐसे बनाना है जो कुछ हमारे बनाने से बनते नही हैं

ल०—इसलिये आप हो कृपा कीजिये

सा०—इन्हें बड़ा बनाकर हमे देदीजिये

अन०—हे सतो-गुण, रजो गुण, तमो-गुण को सार्थक करने वाली मूर्तियो ! मै खूब जानती हूं कि बनाना, बनाकर रखना, बिगाड़ना यह तुम्हारा साधारण काम संसार मे मशहूर है परन्तु इस समय इन्हे बडा बनाना मजूर नहीं किन्तु पतिव्रता स्त्रियो की महिमा को बड़ा बनाना मंजूर है तो हे सृष्टि कर्ता भर्ता हर्ता अपने निज स्वरूप मे आ जाइये और अपनी अनुचरी का मान बढ़ाइये

तीनों का असली रूप मे आना ⎫
सब देवताओं का प्रकट होना ⎭ पुष्पवृष्टि

देवता—बोलो सती सामर्थ्यकी जय । बोलो पतिव्रत धर्मकी जय

शिव—अनसूये ! तूने पति भक्ति के प्रताप से महा उत्तम पद प्राप्त

किया है और सुशीला स्त्रियों के लिये अपने सच्चरित्र को एक आदर्श मार्ग बना दिया है

अन०—भगवन् आप तो चले और मुझे पुत्र वियोग का दुःख सता रहा है आपकी माया के प्रवाह में मेरा धैर्य बहा जा रहा है

विष्णु०—चिन्ता न कर

ब्रह्मा—तेरे पहले मनोरथ सिद्ध हो चुके तो यह भी सिद्ध होंगे

शिव—हम तीनो अंशावतार से पुत्र भाव को प्राप्त होकर संसार में दत्तात्रेय नाम से प्रसिद्ध होगे

अन०—कब प्रभु कब ?

शिव— धीर धर मन में कभी होगी न तेरे मोद में
देख वो आया हमारा रूप तेरी गोद में

(दत्तात्रेय का प्रकट होना

देवता—बोलो त्रिगुण निधान की जय ! बोलो दत्तात्रेय भगवान की जय

भूल सुधार

नीचे लिखा हुआ गाना पृष्ठ १५७ पर दृश्य ४ के अन्त में कौमिक पात्रों का जानिये।

आनन्दम् परमानन्दम् मुनि नारद के गुण गाओ,
सुख पाओ सब मगन मगन हो चरनो मे सिर नाओ।
यह घड़बड़ घोटाला है नारद जीने टाला,
मिसरी को खूब सँभाला, ग्हाँ होता था मुं काला
भागे अड बंड भरतार
सब शेर भेड़िये चीते, बाज़ी विद्याधर जीते
भोजन हुए गरल से अमृत फल से सर्वानन्दम्।
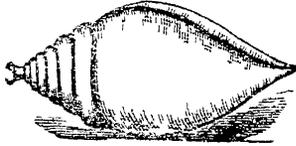
वैदिक धर्म शिक्षावली

लेखक — स्व० प० ब्रह्मदत्त विद्यालङ्कार ।

इस पुस्तक में आर्य युवकों के लिये प्रातः काल उठने के समय से रात्रि के सोने के समय तक दिन-चर्या का वर्णन है। इसके अनुसार अपना प्रोग्राम रखने वाले धार्मिक जीवन गुज़ार कर स्वास्थ्य, बल और धर्मका संचय करके लोक परलोक में सुख प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक पाठ के साथ उत्तम चित्र भी दिये हैं, मूल्य व्यापारियों को उचित कमीशन दी जायगी।

हिन्दी द्वार

इस पुस्तक को बच्चो का खिलौना जानिये, छोटे बालक चित्र देख कर बड़े प्रसन्न होते है। इस मे तमाम स्वरों तथा व्यञ्जनों के साथ एक चित्र दिया है, बालबुद्धि के अनुसार प्रत्येक अक्षर के साथ कविता दी है जो बालकों को हंसते, खेलते ही याद हो जाती है और फिर अक्षर के भूलने का काम नही रहना। नमूने के दो पृष्ठ आगे देखिये, परन्तु यह सूचो का कागज़ चिकना नहीं है हिंदी द्वार बढ़िया सफैद चिकने कागज़ पर छपने से बडा सुन्दर दिखाई देता है।

भाव:—

१ का मूल्य)॥।

१०० के लिये २॥।)

१००० के लिये २५)

मिलने का पता:—

बेताब प्रिंटिंग वर्क्स, देहली।
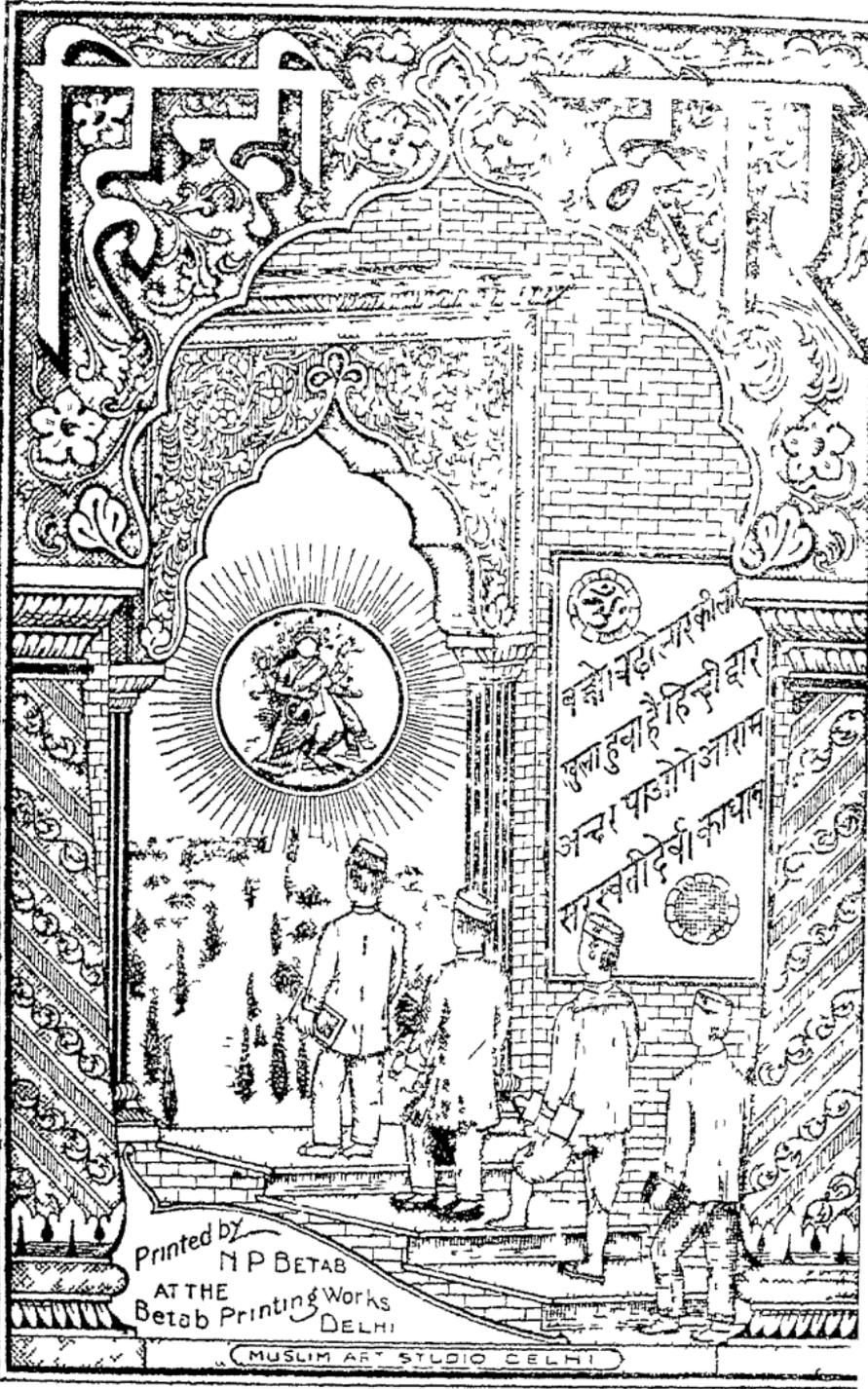
खुला हुवा है हिन्दी द्वार
अन्दर पाओगे आराम
सरस्वती देवी का धाम
Printed by
N P BETAB
AT THE
Betab Printing Works
DELHI
MUSLIM ART STUDIO DELHI

अ
आ
अमरूदों की आई बहार
आरी देखो दाँते दार
इ
ई
इक्के वाले ! इक्का थाम
ईख, ऊख, गन्ने का नाम